

इदं पुस्तकं बडोदा

पत्तनस्थ नूतनबिलासयन्त्रालये मुद्रितम्.

श्री. धातुमञ्जरी.

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अक	१	कुटिलार्या गतौ	अकति	म
अक	१	लक्षणे	अकृतेवृषं	इ ङ
अक	१०	लक्षणे	अकृयति	क इ
अकृ	१०	लक्षणे पदेच	अकृयति	क त
अक्ष	१	संघाते (त) व्याप्तौ	अक्षति धनं वैश्यः	ऊ
अक्ष	९	व्याप्तिसंहत्योः	अक्ष्णोति	न ऊ
अग	१	कुटिलार्या गतौ	अगति सर्पः	म
अग	१	गतौ	अकृति	इ
अगद्	११	नीरोगत्वे	अगद्यति रोगिणां भिषक्	ट
अकृ	१०	लक्षणे	अकृयति	क त
अघ	१०	पापकरणे	अघयति लुब्धः	क त

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अघ	१	गत्याक्षेपे (अथवा) गतिनिन्दारभजवेषु	अंघतेमृगः	इ-इ
अच	१	पूजने	अञ्जति (वा) अचते	अ-इ
अच	१	गतिपूजनयोः	अञ्जतिकृष्णम्	उ इ
अञ्ज	१०	व्यक्तायां वानि	अञ्जयति	क
अञ्ज	१	म्लेष्टोक्तौ	अञ्जति	उ
अञ्ज	१	गतिपूजनयोः	अञ्जति (वा) अञ्जते	अ उ
अञ्ज	१	विशेषणे	अञ्जयति	उ क
अञ्ज	१०	आयामे	अञ्जति	इ
अञ्ज	१	गतौ (त) क्षेपे	अञ्जति	अञ्ज
अञ्ज	१०	भासि	अञ्जयति	क इ
अञ्ज	७	अक्षणाकान्तिगतिषु	व्यनक्तिविद्यांसाधुः-अ- भ्यनक्ति तैलेनागं.	घ उ जि
अट	१	गतौ	अटति	अट्टनं
अट्ट	१	अतिक्रमे	अट्टते विप्रं यवन.	ह
अट्ट	१०	अनादरं	अट्टयति	अट्टः क
अठ	१	गतौ	अठति	इ ह
अठ	१	गतौ	अण्ठते	न र
अड	५	व्यापने	अड्नाति	
अड	१	उद्यमे	अडति धनाय	
अड्	१	अभियोगे	अड्ति ज्ञानं मुनिः	

धातु.	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अण	१	शब्दे	अणति	-
अण	४	प्राणने	अण्यते	य ङ
अत	१	सातत्यगमने	अतति लोकं हरिः आत्मन् आत्मा	
अत	१	बन्धने	अन्तति द्रुष्टं राजा	इ
अद्	२	भक्षणे	अत्ति (वाअदति १) मो- दकं कृष्णः	ल औ इ
अद्	१	बन्धने	अन्दति द्रुष्टं राजा	इ
अन	४	प्राणने	अन्यते क्लेशेन भिक्षुः	य ङ
अन	२	प्राणने	अनिति प्राणः	ल ष
अन्ध	१०	दृक्क्षये	अन्धयति-अन्धः धा-धं.	क त
अव	१	शब्दे	अंवते शिशुः	ङ इ
अम्बर	११	संभरणे	अंवर्यतियोपितं प्रियः	ट
अभ	१	शब्दे	अम्मते अम्भः	ङ इ
अभ्र	१	गतौ	अभ्रति अभ्रं	
अम	१	गतिभजनशब्देषु.	अमति	
अम	१०	रोगे	अमयति	
अम्ब्र	१	गतौ	अम्ब्रति	
अय	१	गतौ	अयते-अयस्	ङ
अरर	११	आराकर्माणि	अरर्यति रथकारो रथाय	ट
अर्क	१०	स्तवने	अर्कयति अर्कः	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.	
अर्घ	१	हिंसायां (अथवा) मूल्ये	अर्घति	अर्घः	
अर्च	१०	पूजायां	अर्चयते (तथा)	अर्चयति	क ड
अर्च	१	पूजायां	अर्चते (तथा)	अर्चति	ड
अर्ज	१०	प्रयत्ने (त) सं- स्कारे	अर्जयति धनं उपार्जनं		क
अर्ज	१	अर्जने	अर्जति धनं उपार्जनं		
अर्थ	१०	याचने	अर्थयते याचकोऽर्थ- ना अर्थः		क त ड
अर्द्	१	हिंसायां	अर्द्ति (वा) अर्दते अ- र्दयति अर्दते		अ
अर्द्	१	पीडागतियाचनेषु	रक्षःसहस्राणिचतुर्दशा- र्दीत् अर्द्ति तीर्थ यतिःश- रद्घनं नार्द्ति चातकोपि		
अर्द्	१०	हिंसायां	अर्द्यति (वा) अर्द्यते		क अ
अर्व	१	हिंसायां गतौ च	अर्वति		
अर्व	१	हिंसायां	अर्वति		
अर्ह	१	योग्यत्वपूजनयोः	अर्हति		
अर्ह	१०	पूजायां	अर्हयति-अर्हणा		क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अल	१	भूषणपर्य्याप्तिवार- णेषु	अलति (वा, अलते) के- शं माल्येन अलति कंसाय कृष्णःअलतिचौरं राजा	व
अव	१	पालने (त) प्री- णने	अवति	
अवधीर	१०	अवज्ञायां	अवधीरयति	क त
अश	९	व्याप्तौ (त) सं- हृतौ	अश्नुते विश्वं हरिः	न ङ ऊ
अश	९	भोजने	अश्नाति	ग
अंशः	१०	समाघाते	अंशयति द्रव्यं भ्रातृवर्गः अंश	क त
अप	१	दीप्तिगतिग्रहेषु	अपाति	
अस	१	दीप्त्यादानयोः	वासुदेवं परित्यज्य यो- ऽन्यदेवमुपासति (वा) उपासते	व
असू	११	उपतापे	असूयति	ट
अस्	११	उपतापे	अस्यति	ट
असू	११	उपतापे	अमूयति (वा) असूयते	व ट
अस	२	भुवि	अस्ति हरिः	ल
अस	४	क्षेपणे	अस्यति शरं शूरः अस्त्रं न्यासः	य ऊ इ र

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अंस	१०	समाघाते	(यथांशः प्रथमागतः)	क त
अह	१०	भासे	अंहयति	क इ
अह	१	गतौ	अंहते	ड इ
आछ	१	आयामे	आछति चरणं वामनः	इ
आंदोल	१०	आंदोलने	आंदोलयति	क त
आप	१	लंभने	आपनि	लृ
आप	१०	लंभने	आपयति धनं जनः	क लृ
आप	९	व्याप्तौ	आप्नोति भुवनं विष्णुः	न लृ
आम	१०	रागे	आमयति	क
आशास	२	इच्छायां	मोक्षमाशास्ते मुनिः	उ
आस	२	उपवेशने	आस्तेगृहे	ल ड नि
इ	२	गतौ	एति पथिकः आय	ल
इ	२	अध्ययने	वेदमर्धाति गिशु.	ल ड
इ	२	अधिउपसर्गे स्मरणे	अध्येति गोकुलं कृष्ण	ल
इ	१०	अधिउपसर्गे स्मृत्यां	अध्यापयति	क
इख	१	गतौ	एखति	
इख	१	गतौ	इंखति	इ
इग	१	गतौ	एगति	
इग	१	गतौ	इगति	इ
इट	१	गतौ	एटति	
इद	१	परमैश्वर्ये	इन्दति इन्दः इन्दुः	इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
इध	७	दीप्तौ	इधे वन्हिरिंधनेन	य ड ई जि
इभ	१	संवाते	इंभयते	क ड इ
इर	११	इर्ष्यायां	इर्ष्यति (वा) इर्ष्यते	अ ढ इ
इरज	११	इर्ष्यायां	इरज्यति	ट
इरस्	११	इर्ष्यायां	इरस्यति	ट
इल	१०	प्रेरणे	प्रेलयति	इला क
इल	६	गतौ (त) क्षये क्षेपे	इलति पांथः एल्प्यति इला एला	श
इला	११	विलासे	इलायति	ट
इव	१	व्याप्तौ	इवति विश्वं विष्णुः	इ
इष	४	गतौ	इष्यति	
इष	६	वांछायां	हरिभक्तिमिच्छतिविप्रः इच्छा	श
इष	९	आभिक्षये	इष्णात्सन्नं शिवाः अन्वे- षणं	ग
इष	४	गतौ	इष्यते	ड
इष	२	कान्ति गतिव्याप्ति स्तेपप्रजननस्राद्धनेपु	इति (इत्यादि)	ल
इक्ष	१	दर्शने	न कामवृत्तिर्वचनीचमीक्ष- ते निरीक्षणं निरीक्षि- ष्यामि	ड

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
ईक्ष्य	१	ईर्ष्यायां	ईक्ष्याते	
ईख	१	गतौ	ईखति	इ
ईज	१	गतौ	ईजते	इ ह
ईज	१	{ गतौ (तथा) कु- त्सायां	ईजति (वा) ईजते	ई व
ईड	१०	स्तवने	ईडयति	क
ईड	२	स्तुतौ	ईष्टेहरिक्लिप्तः	ल
ईत	१	बन्धने	ईन्तति	इ
ईर	२	गतौ कंपनेच	ईर्त्ते	समीर. ल
ईर	१०	प्रेरणे क्षेपेच	ईरयति गजं यन्ता	क
ईर	१	प्रेरणे	ईरति	
ईर्ष्य	१	ईर्ष्यार्थे	ईर्ष्यति साधुं पापी ईर्षा	
ईश	२	ऐश्वर्ये	ईष्टेराजा ईशः ईश्वर. ऐ- श्वर्यं	ल ह
ईष	१	उञ्छे	ईषति	उ
ईष	१	गतिदर्शनहिंसा- दानेषु	ईषते पांथः	
ईह	१	चेष्टायां	समीहते धर्माय साधुः	ह
उ	१	शब्दे	अवते	अविः ह
उक्ष	१	सेचने	उक्षति उक्षा (उक्षन्)	
उत्त	१	शोषणालमर्थयोः	ओत्सति हिमेन वृक्षः	ऋ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	धनुबन्ध.
उख	१	गतौ	ओखति उखा	
उख	१	गतौ	उंखति	इ
उच	४	समवाये	उच्यति बंधुना बंधुः ओक	य
उछ	६	उंछे	उंछति धान्यं	श इ
उछ	६	{ निवासे (अथवा) वर्जने बन्धने-समाप नेअतिक्रमे	उछति	श इ
उज्ज	६	त्यागे	उज्जति त्वचं सर्पः	श
उठ	१	उपघाते	ओठति	
उन्द	७	क्लेदने	उनत्ति गंगाजलेन गात्रं यतिःउदकः	ध ई
उङ्ग	६	उत्सर्गे	उङ्गति त्वचंसर्पः उङ्गांच- कार उङ्गः	
उघ्रस्	१०	उञ्छे	उघ्रासयति कणान्भिक्षुः	क
उञ्ज	६	आर्जवे	उञ्जति कुञ्जां कृष्णः	श
उभ	६	पूरणे	उभति धनेनार्थिनं कर्णः उभयं	श
उंभ	६	पूरणे	उंभति	श प
उरी	६	उद्यमने	उरते	इ ई श
उरस्	११	बलार्थे	उरस्यति	ट

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
उर्णु	२	आछादने	उर्णोति (वा) उर्णुते	छ ड
उर्द	१	माने (तथा) क्री- डायां आस्वादे	उर्दतेस्वर्णं स्वर्णकारः	
उर्व	१	हिंसायां	उर्वति	इ
उप	१	दाहे (तथा) वधे	ओषति	
उपम्	११	प्रभातीभावे	उपस्यति	ट
उह	१	अर्दे	उंहति	इ
ऊठ	१	उपपत्ति	ऊठति	
ऊन	१०	परिहाणे	ऊनयति घृतं भोक्ता	क त
ऊय	१	तंतुसंताने (अथ- वा सेवेने	ऊयते वस्त्रं तंतुवाय. ऊनं	ड ई
ऊर्ज	१०	बलप्राणधारणयोः	ऊर्जयति धार्मिकः	क
ऊर्णु	२	आछादने	ऊर्णोति (तथा) ऊर्णुते गगनं मेघः	अ ल
ऊष	१	रुजायां	ऊषति रोगो देहं ऊषः ऊपरः	
ऊह	१	वितर्के	ऊहते शास्त्रे बुधः समूह अमुक्तमप्युहति पंडितो जनः	ड
ऊ	१	प्रापणे	अरति यतिर्विष्णुं आर-	
ऊ	३	गतौ	इयति	लि र

धातु-	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कृ	१	हिंसायां	कृणोति	न र
कृक्ष	१	जिघांसायां	कृक्ष्णोति	न र
कृच	६	संवरणेनुत्यां	कृचति हरिं बुधःकृक् (वा)कृच्	श
कृच्छ	६	{ गतीन्द्रियप्रलयमू- र्तिभावेषु	कृच्छतिवृद्धःकृच्छतिशी- तेनघृतं	श
कृच्छ	१	गतौ	कृच्छति	
कृज	१	{ गतौ (अथवा) स्थये-उर्जने अर्जने	अर्जते	इ
कृज	१	अर्जे	कृजते	इ इ
कृण	८	गतौ	कृणोति (वा) कृणुते कृतं	इ अ उ
कृन	१	{ म्पद्धैनेश्वर्यवृणाग- तिषु	अर्त्तति	
कृन	२	{ जुगुप्सायांरुपा- यानि	कृतीयते दुर्बले धर्मा- सात्रः	ल
कृष	१	वृद्धौ	कृषोति धर्मेण विप्रः कृ- लः धा धं	न उ
कृष	४	वृद्धौ.	कृष्यति अधिष्यति कृ- लः धा-धं	उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
ऋफ	६	हिंसायां (अथवा) दानिच्छावायांनिदा यां युद्धे	ऋफति	श
ऋंफ	६	हिंसायां	ऋंफति	श
ऋप	१	आदानसंवरणयोः	अर्पति, वा)अर्पते ऋपभ	
ऋप	६	गतौ	ऋपति	श ई
ऋ	९	गतो	ऋणाति	ग गि
एज	१	कम्पे	एजति	ऋ
एज	१	दीप्तौ	एजते	ऋ ह
एठ	१	नाधने	एठते	ह
एध	१	वृद्धौ	एधतेधर्मेणसाधु. एधः ऐ- धस्	ह
एला	११	विलासे	एलायति	ट
एष	१	गतौ	एषते	ऋ ह
ओख	१	शोषणालर्मथयो.	ओखति	ऋ
ओज	१०	बलतेजसोः	ओजयति	क त
ओष	१	अपनयने	ओषति धनं चौरः	
ओलड	१	उत्क्षेपे	ओलण्डति	इ
ओलड	१०	उत्क्षेपे	ओलण्डयति	क इ
कक	१	(लौल्ये(अथवा) इलागर्वापले	करते काकः	ह

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कक	१	गतौ	ककृते	इ इ
कक	१	हसने	ककति	
ककख	१	हसने	ककखति	ए
कक	१	हसने	ककति	
कख	१	हसने	कखति	कखिः
कग	१	संवरणे	कगति	ए
कच	१	बन्धने	कचते केशं नारी कचः विकचः	
कच	१	खे	कचति	
कच	१	दीप्तौ	कच्चते	इ इ
कट	१	गत्यां	कटति	इ
कट	१	गतौ	कटति	
कट	१	कृच्छ्रजीवने	कटति	
कट	१	वर्षावरणे	कटति कटेन गात्रं गो- रक्षकः कटः	ए
कट	१	गतौ	कटति	कण्टकं
कठ	१	तंकने	कण्ठति	
कठ	१	शोके	कण्ठते	ऊ इ
कठ	१	शोके	कण्ठति	इ
कठ	१०	शोके	कण्ठति कण्ठः कण्ठं कण्ठा कण्ठी	क इ

धातु.	गण.	वर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कड	१	मद्दे	कडति धनेन	
कड	१०	भेदे (तथा)रक्षणे	कण्डयति	क इ
कड	६	मद्दे (तथा) अदने	कडति धनेन मूर्खः	श
कड	१	मद्दे	कण्डते धनेन मूर्खः	ड इ
कड	१	तुषापकरणे	कण्डते तंदुलं स्त्रो	ड इ
कडु	१	कार्कश्ये	कडुतिकृपणा	
कण्डू	११	गात्रविषर्षणे	कण्डूयति (वा) कण्डूयते गात्रं	व ट
कण	१	गतौ	कणति काण कण	म
कण	१	शब्दे	कणति	ऋ
कण	१०	निमीलने	कणयति नेत्रं	क
कत्य	१	श्लाघायां	कत्यते हरिकथां कवि	ड
कत्र	१०	शैथिल्ये	कत्रयति	क त
कथ	१	श्लाघाया	कथते हरिकथां कवि	ड
कथ	१०	वाक्यप्रबन्धे	कथयति काव्यं कथकः कथा	क त
कद	१	वैक्लव्ये	कदते	ड
कद	१	वैक्लव्ये	कन्दते	ड इ
कद	१	आह्वानरोदनयोः	कन्दति	इ
कन	१	दीप्तौ (त०) प्री- तिगतयोः	कनति दीपः	इ नि

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबंध.
कप	१	चलने	कंपते	इ उ
कत्र		वर्णे	(इतिक्रव	
कम	१	कान्तौ	कमते	कामः उ ड
कम	१-१०	कान्तौ	कामयते	उ ङ
कम्ब	१	गतौ	कम्बति	
कर्ष	१	गल्यां	कर्षति	
कर्ज	१	इयथने	कर्जति केशिनं कृष्णः	
कर्ण	१०	भेदे	कर्णयति	कर्णः क त
(आउप- सर्गे)		श्रवणे	आकर्णयति	
कर्त्त	१०	शैथिल्ये	कर्त्तयति	क त
कर्त्र	१०	शैथिल्ये	कर्त्रयति	क त
कर्द्		कुत्सिते शब्दे	कर्द्ति काकः	
कर्ष	१	इतिकर्ष	
कर्ष	१	दुर्षे-गतौच	कर्षति मुखः	
कल	१०	संख्याने (त०)रुता	कलते धने धनी	कालः ङ
कल	१०	संख्याने-गतौच	कलयति	क त
कल	१	क्षेपे	कलयति	क
कल्ल	१	अव्यक्ते शब्दे	कल्लनेस्वरः	ल

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कव	१	वर्णे	कवतेकविःकाव्येन हरि कवतेचित्रकारः	ऋ ङ
कश	१	हिंसायां	कशति (वा) कशते काशः कशाः	ञ
कप	१	हिंसायां	कशति समूलकाशं कष्टः टा टं	
कप	१०	हिंसायां	कशयति कष्टः टा टं	क
कस	१	गतौ	कसति विकस्वरः	ज
कस	२	गतिशासनयोः	कंस्ते कंसं हरिः	ल ई ङ
काक्ष	१	कांक्षायां	कांक्षति कांक्षा	इ
काच	१	दोषविधननयोः	काञ्चते विभावसुः	इ ङ
काल	१०	कालोपदेशे	कालयति	क त
काश	१	दीप्तौ	काशते	ऋ ङ
काश	४	दीप्तौ	काश्यते	य उ ऋ ङ
कास	१	दीप्तौ	प्रकासते	ऋ ह
कास	१	शब्दकुत्सायां	कासतेरोगी कासः(वा) काशः	ऋ ङ
कि	३	ज्ञाने	चिकेति	लि र
किट	१	{ गतौ (त०) भय- भीषयोः	केटति किटं	लि र

धातु.	रज.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कित	१	रोगापनयनं	चिकित्मति रोगिणं वै- द्यः चिकित्सा	
कित	३	ज्ञान-निवासेच	चिकेत्ति	लि र
किल्	६	शान्त्यक्रीडनयोः	किलति देहं चन्दनेन- किलन कौलः	श
किल	१०	क्षेप	केलयति	क
कीट	१०	बन्धने (त) वर्णे	कीटयति	क
कौल	१	बन्धे	कौलति कृष्णं माता की- लः—कौला	
कु	१	शब्दे	कवने	क
कु	२	शब्दे	कौति	ल टु
कु	६	आत्तन्वये	कुयते	श ड शि
कु	९	शब्दे	कुनाति	ग
कुक्	१	आदाने	काकते	ए ड
कुच	१	रोषसंपर्ककौटिल्य- विलेखनेषु	काचति	ज
कुच	१	तारशब्दे	काचति कर्षा	
कुच	१	संकोचे	संकाचति चन्द्रासुरसं- संकाच	
कुच	६	संकोचे	संकुचति धनी राजभ- यान्	श शि

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	भनुयन्ध.
कुञ्ज	१	कौटिल्याल्पीभावयोः	कुञ्जति खलः-कुञ्जति मनो योगी	उ
कुज	१	स्तेयकरणे	कोजति नवनीतं वृष्णः-	उ
कुज	१	अव्यक्तेशब्दे	कुञ्जति कुञ्जः (वा) नि कुञ्जः	इ
कुट	१	वैकल्ये	कुण्टति	इ
कुट	६	कौटिल्ये	कुटति खलः कोटः	श शि
कुट	१०	प्रतापने छेदनेच	कोटयते	क ड
कुट्ट	१	प्रतापने	कुट्टति कुट्टयति	
कुट्ट	१०	छेदने (त०) कुत्सायां	कुट्टयति कुट्टनी	क
कुट्टम्ब	१०	धृत्यां पूरणे	कुट्टम्बयते	क ड
कुठ	१	आलस्ये प्रतिवातेच	कुण्ठति कुण्ठः कुण्ठः हा ठं	इ
कुड	६	चाल्ये (त०) अदने	कुडति ज्ञानी	श शि
कुड	१०	रक्षणे अनृतपरिभाषणेवेष्टनेच.	कुण्डयति	क इ
कुड	१	कैवल्ये	कुण्डति कुण्डं कुण्डं कुण्डी	इ
कुड	१	दाहे	कुडते कुंडं कुंमकारः कुण्डं	इ इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कुण	१०	अःमन्त्रणे	कुणयति	क त
कुण	६	शब्दोपकरणयोः	कुणति काकः	श
कुत्स	१०	अवक्षेपणे	कुत्सयते कुत्स्य साधुः	क ङ
कुथ	४	पूतीभावे	कुथ्यति मृतकः	य
कुथ	१	हिंसासंक्षेपयोः	कुन्थति रावणं रामः रावणशरेण रामो न कुन्थति	इ
कुद्र	१०	अनृतभाषणे	कुन्द्रयति	क इ
कुन्थ	९	संक्षेपणे (त.)	कुन्थाति रोगी	ग
कुथ		श्लिषि		
कुप	१-१०	न्तुतौ (अथवा) न्तुते	कुंपति (वा) कुंपयति	कि
कुप	४	रूपे	कुप्यति (अथवा) कु प्यते कोपः	य इ र
कुप	१०	भाषार्थे तुतौ	कोपयति	क
कुव	१	छादने	कुन्वति तृणेन गृहं कुंवा	इ
कुव	१०	छादने	कुंवयति	क इ
कुंभ	१०	छादने	कुंभयति	इ क
कुमार	१०	कीडायां	कुमारयति गोकुले कृष्णः कुमारः	क त

धातु	गण	वर्थ	उदाहरण	अनुग्रन्थ
कुमाल	१०	कलौ	कुमालयति	क त
कुर	६	शब्दे	कुरति चुकोर	श
कुर्द	१	कीडाया	कुर्दते	ड
कुल	१	बन्धुसहतो	कालनि कुल	
कुश	४	श्लिषि	कुशयति	य इ र
कुश	१-१०	द्युतौ	कुशति (वा) कुशयति	क कि इ
कुष	९	निष्कर्षे	कृष्णाति स्वर्णं स्वर्ण- कार कोष	ग
कुपुभ	११	क्षेपे	कुपुभ्यति कन्दुक विलासी	ट
कुस	४	श्लेषणे	कुस्यति कामिनी कान्त	य इ र
कुस	१०	{ भाषार्थे (अथवा) भासने	कुसयति क इ	इ कि
कुह	१०	{ विस्मारणे विस्मा पने	कुहयते कुहको मायया विश्व	क त ड
कू	६	{ शब्दे (तथा) आ र्त्तस्त्रे	कुवते काक	श शि ड
कूज	१	{ अव्यक्ते शब्दे (त०) हिकने	कूजति पक्षी	
कू	१०	अप्रसादे परितोषे च	कूटयते खल	क ड
कू	१०	दाहे	कूटयति	क त
कूट	१०	दाहमात्रे	कूटयति	क त

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कूड	६	वसने	कूडति वासं वृषः कूडः	श शि
कूण	१०	संकोचे	कूणयते नेत्रं रोगी कूणः	क त ड
कून	१०	संकोचे	कूनयते नेत्रं रोगी कूर्नी	क त ड
कूण				
कूप	१०	दौर्वल्ये	कूपयति	क त
कूर्दे	१	क्रीडायां	कूर्देते	ड
कूल	१	आवरणे	कूलति धर्म साधुः कूलं	
कृ	९	हिंसायां	कृणोति (वा) कृणुते	न ञ
			कृतं युगं	
कृ	<	करणे	करोति (वा) कुरुते	द ञं डु
			कटकं कारुकः	
कृञ्	१	भर्जने	कृञ्जयते धान्यं	इ ड
कृड	६	वनत्वे	कृडति	श
कृन	६	छेदने	कृन्तति वृक्षं	श प ई
कृत	७	वेष्टने	कृणत्ति तरुं कंटकेन मा-	ध ई
			लाकारः कृत्तिः	
कृप	१	दयायां	कृपते हरिर्भक्तं	प म ड
कृप	१०	दौर्वल्ये	कृपयति	क त
कृप. कृ प	१	अवकलकने	कल्पति	

धातु	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कृप-कृ प लृट्	१	सामर्थ्ये	कल्पते मोक्षाय	इ ऊ व लृ
कृप-कृ प लृट्	१०	अवकलकने	कल्पयति कल्पना	क
कृष	५	कृतिहिंसयोः	कृणोति	
कृषि	५	जिघांसायां	कृविणोति	न
कृश	४	तनूकरणे	कृश्यति देहं रोगः कृश- शा-शं	या इ र
कृप	१	आकर्षणे	कृपति	औ
कृष	६	विलेखने	कृपति (वा) कृषते क्षेत्रं कृषकः	श ज औ
कृ	६	विक्षेपे	किरति कुमुमं वायुः सं- कीर्णः णा-णं	श
कृ	९	हिंसायां	कृणाति कीर्णः णा णं	ग ज गि
कृत	१०	संशब्दने	कीर्तयति परगुणं साधुः कीर्तिः	क
केत	१०	आमन्त्रणे श्राव- णचे	केतयति श्राद्धाय मुनि- गृही-केतनं	क त
केप	१	गत्यां कंपनेच	केपते	क ड
केल	१	गतौ	केलति केलिः	ऊ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
केला	११	विलासे	केलायति विलासी कामात्	ट
केव	१	तेवने	केवते	क ड
कै	१	शब्दे	कायति	
क्रथ	१	हिंसायां	क्रथति	
क्रथ	१०	प्रतिहर्षे	क्रथयति	क म
क्रथ	१०	हिंसायां	क्राथयति	क म
क्रद्	१	वैल्लभ्ये	क्रन्दते	ड इ
क्रद्	१	आव्हानरोदनयोः	क्रन्दति अक्रन्दीद्श- ग्रीवः	इ
क्रन्द	१०	आप्रत्यये आक्रं- दमातत्यरोदने	आक्रन्दयति शोकार्तः	क
क्रम	१	षाद्विक्षेपे	क्रमति	उ
क्रम	४	षाद्विक्षेपे	क्रान्यति (वा) क्राम्यते वामनोमहीं	य उ
क्रस	१	शब्दे	क्रसति	
क्री	९	द्रव्यत्रिनिमये	क्रीणाति (वा) क्रीणीति तिलं यवैर्जनः ज्ञीतः ता- तं-क्रयः—क्रयविक्रयौ	ग ज डु
क्रीड	१	विहारे	क्रीडति	क्रु
वनूय	१	शब्दे उन्देच	वनूयते नरः	ड इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कुञ्ज	१	कौटिल्याल्पो भा- वयोः	कुञ्जेति खलः कुञ्जति म- नो योगी	.
कुड	६	निमज्जने	कुडते	ड श
कुध	४	रोषे	कुध्यति क्रोधः कुद्धः धा धं	य ल औ
कृन्थ	९	श्लिषि-श्लिषि	कृन्थाति	ग
कृश	१	आह्वाने	कृशाति क्रोष्टा	ज औ
कु	६	गतौ	कृवते पान्थः	ड श
कृय	१	शब्दे (अथवा) दुर्गन्धार्दत्वयोः	कृयते वायुना वृक्षः	इ ड
कथ	१०	हिंसायां	कथयति	क
कथ	१	हिंसायां	कथति	
कमर	१	दृष्टेने	कमरति खलः	
कश	१	हृतिभासनयोः	कशयति	उ म
कश	१०	भासने	कशति (वा) कशयति	इ कि
कृ	९	शब्दे	कृणाति (वा) कृणांत	भ ग
कृथ	१०	हिंसायां	कृथयति	क म
कृथ	१	हिंसायां	कृथति	म
कृद	१	वैकृष्ये	कृन्दते	भि ड इ
कृद	१	आव्हानरोदनयोः	कृन्दति	इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
क्लिद	४	आर्द्राभावे	क्लिद्यति पयसा वटः-क्लि- न्नः-ना-नं क्लेदः	य ऊ इ र
क्लिद	१	परिवेदने	क्लिन्दति (वा) क्लिन्दते कामशोकेन रति :	इ व लि
क्लृप क्लिव क्लम	१० ४	व्यक्तायांवाचि ग्यनौ	क्लृपयति अक्लृपत् (इति क्लिव) क्लृम्यति पान्यः क्लृन्तः ता-तं-क्लृन्तिः	क य उ भ लि इ र
क्लृव क्लीव(वा) क्लीव	१ १	भये अधाष्ट्ये	क्लृवते शोकेन क्लीवने नरः क्लीवः क्लीवं	प म ल क्ल ड
क्लिश	४	उपतापे	क्लिश्यते पापी	य ङ उ
क्लिश	९	विवाधने	क्लिश्नाति धनिकं चोरः क्लेशः	ग उ
क्लृ क्लेश	६ १	गनौ वाधने (त.) वधे- अव्यक्तायांवाचि	क्लृवते पान्यः क्लेशते पापिनं रोगः क्लेशः	र श
क्लण	१	शब्दे	क्लणति क्लणः क्लृणः	
क्लथ	१	निष्पाके	क्लथति वधः क्लथं	ए ज
क्लथ	१	गतां	क्लथति	उ
क्लज	१०	तंके क्लृज्ज्वाचि	क्लजयति	क इ

धातु.	गण.	अर्थ	उदाहरण.	अनुबन्ध.
क्षज	१	दाने गतौ	क्षजते	ई प म ड
क्षज	१	दानगत्योः	क्षजते	प म ड
क्षण	<	हिंसायां	क्षणोति (वा) क्षणुते वि प्रं सलः क्षतं क्षतर्ज	द व उ
क्षप	१०	कांतौ (अथवा) शाक्तौ (वा) क्षांतौ	क्षपयति चन्द्रः	क इ
क्षप	१०.	प्रेरणे	क्षपयति	क इ
क्षम	१	सहने	क्षमतेऽपरार्धं क्षमा	ड जि प ऊ
क्षम	४	सहने	क्षाम्यति पुत्रापरावापि ता-क्षमा	य उ इ र भ
क्षर	१	संचलने	क्षरति नदी क्षारः	ज
क्षल	१	चलने	क्षलति	ज
क्षल	१०	शौचे	क्षालयति गङ्गाजलेन गात्र	क
क्षि	१	क्षये (तथा) ऐ श्वर्ये	क्षयति (वा) क्षयते	ज
क्षि	५	हिंसायां	क्षिणोति	न
क्षि	६	निवासे (त०) गतौ	क्षियति	श
क्षि	९	हिंसायां	क्षिणाति	ग ष
क्षिण	<	हिंसायां	क्षिणोति (वा) क्षिणुते	द व उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
क्षिद्	४	मात्रेण (तथा) स्नेहे	क्षिद्यति गां बन्धाद्गोपः	य जि आ
क्षिद्(वा) क्षिद्य	१	मोक्षे स्नेहे	क्षिद्यते	ऋ आ ङ जि
क्षिद्(वा) क्षिद्य	१	अव्यक्त शब्दे	क्षिद्यति क्षद्यः	जा जि
क्षिन्	४	प्रेरणे	क्षिप्यति वामनं वीरः क्षिप्रं	य औ
क्षिप	६	प्रेरणे	क्षिपति (त०) क्षिपते क्षिप्तः ता-तं (इति क्षिप)	श ञ औ
क्षिच	—	—	(इति क्षिच)	
क्षिच	१	निरसने	क्षिचति	उ
क्षिच	४	निगमने	क्षिच्यति	य उ
क्षी	१	हिमायां	क्षियति	
क्षीज	१	अव्यक्तशब्दे (त) हिक्केने	क्षीजति पक्षी	
क्षीच	१	निरसने	क्षीचति	
क्षीच	१	मदे	क्षीचते धेनवे क्षीचः वा-प	ऋ उ
क्षु	२	जट्टे	क्षीति	ऋ ङ
क्षुद्	७	संपादने	क्षुजति (त०) क्षुजते त- रिद्रां जनः-शोदः	भ ञ ङ औ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
क्षुध	४	बुभुक्षायां	क्षुध्यति भिक्षु क्षुध् क्षुधा क्षुधित-ता तं	य ल औ
क्षुभ	१	मचलने	क्षोभते क्षोभः	ड
क्षुम	४	मचलने	क्षुम्यति युद्धेन शूर क्षोभ क्षुब्ध धा-धं	य
क्षुभ	९	संचलने	क्षुभ्नाति	ग
क्षुर	६	छेदने (त०) वि- लेखे खननेच	क्षुरति क्षुरः	श
क्षेड	१०	भक्षणे	क्षेडयति	क त
क्षेव	१	निरसने	क्षेवति	उ
क्षे	१	क्षये	क्षायति	
क्षोट	१०	क्षेपे	क्षोटयति (वा) क्षोटयते	कि
क्षुण्	२	अपनयने	क्षुण्ते दोष	ल ड
क्षुण्	२	तेजने	क्षुण्ति शास्त्रं	ल
क्ष्माय	१	विधूनने	क्ष्मायते वायुर्वृक्षं	इ ड
क्ष्मील	१	निमेषणे	क्ष्मीलति	
क्ष्विड	१	स्नेहमोक्षयोः	क्ष्विडति	
क्ष्वेल	१	स्नेहमोक्षयोः चल- नेच	क्ष्वेलति	ऊ
खकम्ब	१	हासे	खकम्बति	
खच	१०	बन्धने	खचयति	क त

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
खच	६	भूतिपूत्योरुत्पत्तौ	खचति	श
खच	९	भूतप्रादुर्भावे	खच्चाति	ग
खञ	१	मन्थने	खजति जलं वराहः	
खञ	१	गातिवैकल्ये	खञ्जाति खञ्ज खञ्जनः	इ
खट	१	कांक्ष्ये	खटति धनं लुब्धः खट्वा	
खट्ट	१०	वृत्तौ	खट्टयति	क
खड	१	भेदे	खण्डति	इ
खड	१	मन्थे	खण्डं खण्डं खण्डते घटं	इ ङ
			कृष्णः	
खड	१०	भेदे	खण्डयति खण्डः (वा)	क इ
			खण्डं	
खड	१०	भेदे	खाडयति	क
खट्	१	हिंसायां (त०)	खटति रिपुं	
		स्पर्श्ये		
खद्	१०	संवरणे	खादयति	क
खन	१	अवदारणे	तृपितो जान्हवीतीरे कूपं	उ
			खनति दुर्मतिः (वा) ख-	
			नते खनिः खानी (वा)	
			खातिः खनित्रं	
खम्ब	१	गतौ	खम्बति	
खर्घ	१	गत्यां	खर्घति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
खर्ज	१	मार्जने (त०) व्य याया	खर्जति गात्रं . खर्जूरः	
खर्द	१	दर्शने	खर्दति मूलकं बालः	
खर्व	१	गतौ	खर्वति खर्वं वा-वं	
खर्व	१	दर्पे	खर्वति सूर्वं खर्वं वा-वं	
खल	१	चलने संचये च	खलति खलः	
खव	२	भूतप्रादुर्भावे	खौनातिजनः	ग
खप	१	वधे	खपति	
खाद	१	भक्षणे	खादति	क
खिद	४	दैन्ये	खिद्यते वेदः	य ड
खिद	६	परिघाते	खिदति साधुं दमी खेदः	श प औ
खिद	७	दैन्ये	खित्ते भिक्षुः	ध ड औ
खु	१	शब्दे	खवते	ड
खुज	१	स्तेयकरणे	खोजति नवनीतं कृष्णः	उ
खुड	१	भेदे	खोडति	
खुड	१	भेदे	खुण्डति	इ
खुड	६	संवरणे	खुडति धनं धनिकः	श
खुड	१	खल्ले	खुण्डते	इ ड
खुड	१०	खण्डने	खुण्डति (वा) खुण्डयति	कि इ
खुर-क्षुर	६	छिदने	खुराति धान्यं कृपकः खुरः क्षुरः	श

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
खुर्द, खूर्दी	१	क्रीडायां	खूर्दते	ङ
खेट	१०	भक्षणे	खेटयति मांसं आखेटः खेटः टा-टं.	क त
खेट-खि ट	१	उत्त्रासने	खेटति केशी गोष्टं आखे- टकः खेट	.
खेड	१०	भक्षणे	खेडयति	क
खेल	१	गतौ	खेलति खेला	उ
खेव	१	सेवने	खेवते	ऋ ङ
खे	१	खेदने	खायति धननाशेन लोकः	
खै	१	स्थैर्ये . खननहिं- सयोः	खायति	
खाट	१	गत्यावाते	खाटति	ऋ
खोट	१०	क्षेपे भक्षणेच	खोटयति शरं शूरः	क त
खोड	१	गति प्रतिघाते	खोडति खोडः-डा-डं	ऋ
खोड	१०	क्षेपे	खोडयति	क त
खोर	१	गतिप्रतिघाते	खोरति	ऋ
खोल	१	गतिप्रतिघाते	खोलति	ऋ
ख्या	२	प्रकथने	ख्याति गुणेन लोकः ख्यातिः	ळ
गग्न	१	हसने	गग्नति	
गज	१	शब्दे-मदेच	गजति गजः	इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
गज	१	स्वने	गज्जति	ड
गड	१	मेचने	(डल्योरैक्यात्) गलति जलं गाडः गाल गडक.	म
गड	१	वदनैकदेशे	गण्डति गण्डः	इ
गण	१०	मंख्याने	गणयति गणको ग्रहणम्	क त
गद्	१	व्यक्तार्थावाचि	गदति	
गद्	१०	मेघशब्दे	गदयति घनः	क त
गद्गद्	११	वाक्स्वलने	गद्गद्यति	ट
गन्ध	१०	अर्दने	गन्धयते लुब्धो वदान्यं	क ङ
गम्ब	१	गतौ	गम्बति	
गम्	१	गतौ	गच्छति	ल औ
गर्ध	१	गत्या	गर्धति गर्ध	
गर्ज	१	शब्दे	गर्जाति	
गर्ज	१०	शब्दे अभिका-	गर्जयति	क
		क्षायां		
गर्ह	१	शब्दे	गर्हति सिंहः	
गर्ह	१०	शब्दे अभिकां-	गर्हयति सिंहः	क
		क्षायां		
गर्ध	१०	अभिकांक्षायां	गर्धयति भक्ष्यं भिक्षुः	क
गर्व	१	गतौ	गर्वति	
गर्व	१	दुर्षे	गर्वति मूर्खः गर्वः	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
गर्व्	१०	माने	धनैर्गर्वयते मूर्खः गर्वः	क त ड
गर्ह	१०	विनिन्दने	गर्हयति	क
गर्ह	१	विनिन्दने	गर्हति	
गर्ह	१	कुत्सने	गर्हते पापं गर्हा	ड
गल	१०	त्लावे	गलयते	क ड
गल	१	अदने (स्लावे)	गलति मूलकं गलति जलं	
ग्राम	१०	आमन्त्रणे	ग्रामयति	
गल्ह	१	कुत्सने	गल्हते	क
गवेष	१०	अन्वेषणे	गवेषयति हरिणं नरः ग- वेषणा	ड क त
गह	१०	गहने	गहयति गहनः ना-नं-ग- हनं	
गा	३	स्तुतौ जन्मनि	जिगाति देवान् जिगाति मुन्नयुः	लि र
गा	१	गतौ	गाते	ड
गाध	१	प्रतिष्ठालिप्सयोः ग्रन्थे	गाधते धनं गाधिः गाधः	ऋ ड
गाह	१	विलोडने	गाहते जलं वराहः	ड उ
गु	२	शब्दे	गवते	ड
गु	६	विद्योत्सर्गे	गुवति	श शि औ
गुज	१	कूजने	गोजति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
गुज	६	शब्दे	गुजति	श शि
गुज	१	अव्यक्ते शब्दे	गुञ्जति पक्षी	इ
गुठ	१०	वेष्टे	गुण्ठयते	क इ
गुड	६	रक्षायां	गुडति	गुडः
गुड	१०	वेष्टने (त०) रक्षणेचूर्णीकरणेच	गुण्डयति	क इ
गुण	१०	आमन्त्रणे	गुणयति	गुणः क त
गुद	१	क्रीडायां	गोदते शिशुः	ड
गुध	१	क्रीडे	गोधते	ड
गुध	४	परिवेष्टने	गुधयति	य
गुध	९	रोपे	गुध्नाति	ग
गुप	१	गोपने	गोपते पापं जुगुप्सा	ह
गुप	४	व्याकुलत्वे	गुप्यति लोकं कोपः	य इ रू
गुप	१	रक्षणे	गोपायति भुवं राजा	ऊ
गुप	१०	भाषार्थे (अथवा) भासि	गोपयति	क
गुफ	६	ग्रन्थे	गुफति माल्यं मालाकारः	श
गुंफ	६	ग्रन्थे	गुंफति माल्यं मालाकारः	श
गुर	१	उद्यमे	गोरति माता बद्धं हरिं	
गुर	६	उद्यमे	गुरते धनाय वैश्यः	श शि ङ ई
गुर्द	१	निकेतने-क्रीडायां	गुर्दते	ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
गेष	१	अन्वेष्टायां	गेषते मुक्तिं मुनिः	ऋ ड
गै	१	शब्दे	गायति	
गोष्ट	१	संघाते	गोष्टते धान्यं	ड
गोम	१०	उपलपने	गोमयति गोमयेन भूमि यज्वा	क त
ग्रथ	१	कोटिल्ये-संदर्भे	ग्रथते	ड
ग्रथ	१	कोटिल्ये	ग्रथते चित्तं खलः	इ ल
ग्रन्ध	९	संदर्भे	ग्रन्धनाति ग्रन्थं कविः	ग
ग्रन्ध	१	संदर्भे	ग्रन्धति	
ग्रन्ध	१०	संदर्भे-बन्धनेच	ग्रन्धयति	क
ग्रस	१	ग्रहणग्रासयोः	ग्रसति	
ग्रस	१	अदने	ग्रसते ग्रासं भिक्षुः	ड उ
ग्रस	१०	अदने ग्रासे	ग्रासयतिचन्द्र राहुः	क
ग्रह	१-१०	आदाने	ग्रहति (वा) ग्राहयति	कि उ
ग्रह	९	उपादाने	गृह्णाति (वा) गृह्णीते धर्मं धार्मिकः गृहीत. ता ता तं.	ग उ
गुर्व	१	उद्यमने	गुर्वति फलार्थी फलाय	ई
गुच	१	चौर्ये	गुचति नवनीतं कृष्णः	उ इर्
ग्लस	१	अदने	ग्लसते	ड उ
ग्लह	१-१०	आदाने	ग्लहति (वा) ग्लहयति	कि उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
घु	१	शब्दे	खते	ह
घुट	१	परिवर्त्तने	गोटते प्रवासी	ह
घुट	६	प्रतिगते	घुटति गज घोटफ	श शि
घुट	६	व्यागते रक्षे	घुटति	श शि
घण	१	भ्रमणे	गणते तर्धि मृनि	ह
घृण	६	भ्रमणे	मृणाति भिक्षायै भिक्षु मृण	श
घुण	१	ग्रहणे	मृण्णते	ह इ
घुर	६	भीमार्त्तिशब्दे	मुरानि भयेन शिशु घोर रा-र-घौर	श
घुर घूर	४	हिंसाज्ञानयो	मूर्यते	य ह इ
घुप	१	वधे	गोपति	इ र
घुप	१०	वधे	गोपयति	क इ र
घुप	१	शब्दे	माधुर्योपति गोविन्द घोष	इ र
घुप	१०	शब्दे	गोपयति नीति जनेपु राजा घोपणा	क इ र
घुप	१	घृशे कान्तिर- णच	गुपते	इ ह
घूर्ण	१	भ्रमणे	निद्रया मृणानि क्षीव	
घूर्ण	६	भ्रमणे	मृर्णति भिक्षायै भिक्षु	श

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
घृ	३	क्षरणदीप्त्योः	जिघृच्छि जलं जिघृच्छि घृतं वरति	ल इ र्
घृ	१०	क्षरणदीप्त्योः प्र- सह्यकरणेच	वरयति	क
घृ	१	सेचने	वरति दग्धं पयसा	
घृण	१	ग्रहणे	घृण्णते	इ ङ
घृण	८	दीप्तौ	घृणोति (वा) घृणुते	द ज ट
घृप	१	संचर्षे	घर्षति काष्ठं मूर्खः	उ
घोर	१	गतित्रातुर्थ्ये	घोरत्वश्वः	
घ्रा	१	गन्धोपादाने	जिघ्रति पुष्पं भ्रमरः	
ङु	१	ध्वनौ	ङवते	ङ
चक	१	दीप्तौ प्रतिघात- तृप्त्योः	चकति (वा) चकते	व म
चक	१	दीप्तौ	चकते विद्यया विप्रःचाकः	ङ
चक्र	१०	व्यसने	चक्रयति	क
चकास	२	दीप्तौ	चकास्ति.	ल ऋ ॠ
चक्ष	२	न्यक्तायांवाचि	आचष्टे धर्मगुरुः	ल ङ
चघ	५	वातने	चघ्नाति	न
चञ्च	१	गत्यां	चञ्चति	उ
चट	१०	भेदे (त०) वचे	चाटयति	क
चट	१	भेदे	चटति	

धातु	गण	अर्थः	उदाहरण.	अनुबन्ध.
चड	१	कोपे	चण्डते चण्डे चण्डी	ड इ
चट	१०	कोपे	चण्डयते	क इ ङ
चण	१	शब्दे	चणति	
चण	१	हिंसागत्योः	चणति	मि
चण	१	दाने	चणति चणकः	म
चत	१	याचने	चतते (वा) चतति चा- तकः	अ उ
चद	१	याचने	चदते (वा) चदति	ए अ
चद	१	आल्हादने दी- तौ च	चन्दति-चन्द्रः-चन्द्र- चन्द्रोज्वलचारुचितौ वि- दर्भराजो मिलने मुरारेः	इ
चन	१	हिंसायां-श्रद्धायांच	चनति	म
चन	१	शब्दे	चनति	
चप	१	मान्त्वने	चपति शिष्यं	
चप	१०	कल्के	चपयति	क म
चप	१०	गत्यां	चपति (वा) चपयति	इ कि
चम	१	अदने	चमति (वा) आचमति	उ
चम	१	अदने	आचामयति अलं पथिकं माधुः	उ
चम	५	अक्षे	चम्नोति	न उ र
चम्ब	१	गत्यां	चम्बति	

धातुः	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
चय	१	गतौ	चयते	ङ
चर	१	गतौ (त०) अ- दने	चरति चारः	
चर	१०	असंशये	विचारयति धर्मं पंडितः विचारणा	क
चर्व	१	गत्यां	चर्वति	
चर्च	१-१०	परिभाषणतर्जन- योः	चर्चते (वा) चर्चयते	ङ कि
चर्च्च	६	परिभाषणतर्ज- नयोः	चर्च्चति	श
चर्च्च	१०	अध्ययने	चर्च्चयते वेदं शिशुः च- र्च्चा.	क ङ
चर्व्व	१	गतौ	चर्व्वति	
चर्व्व	१	अदने	चर्व्वति (वा) चर्व्वयति- चर्व्वणं	कि
चल	१	कंपने	चलयति (वा) चालयति तरुं कपिः	म
चल	६	विलसने	चलति भर्त्रा नारी	श
चल	१०	भृत्यां	चलयति	क
चप	१	वधे	चपति	
चप	१	भक्षणे	चपति (वा) चपते चपकं	ञ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
चह	१	परिकल्कने	चहति तीर्थे लोकः	
चह	१०	परिकल्कने	चहयति कपटी	क त
चाय	१	पूजानिशामनयोः	चाययति (वा) चायते धर्मं	कृ अ
चि	१	हिंसायां	चयति	र इ र्ण
चि	१	चयने	चयति (वा) चयते	अ
चि	९	चयने	चिनोति (वा) चिनुते धान्यं कृपकः	न अ
चि	१०	चयने	चययति	क मि
चिक्क	१	आर्त्तौ	चिक्कयति	क
चिट	१	प्रेष्ये	चेटति भृत्यं चेटः चेटी	
चिट	१०	प्रेष्ये	चेटयति	क
चित	१	संज्ञाने	चेतति प्रलये हरिश्रेतति चिचेत रामस्तत्वलेशं	ई
चित	१०	स्पृत्यां	चिन्तयति चिन्ता	क इ
चित	१०	संवेदने	चेतयते	क ड
चित्र	१०	चित्राकरणे	चित्रयति पटं चित्रकारः चित्रः त्रा-त्रं-चित्रं	क त
चिल	६	वसने	चिलति चैलेन मुखं बधुः	श
चिल्ल	१	शौथिल्ये (त०) हावकृतौ	चिल्लति साधुर्दययाचिल्लः	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
चीक	१-१०	आमर्यणे मर्षणे	चीकति (वा) चीकयति	कि
चीव	१	आदान संवरणयोः	चीवति (वा) चीवते	ऋ ज
चीभ	१	कथने	चीभते	ऋ ड
चीय	१	संवृत्यादानयोः	चीयति (वा) चीयते	ऋ ज
चीव	१०	भाषार्थे-दीप्तौ	चीवयति	क
चीव	१	ग्रहसंवृत्योः	चीवते	ऋ ड
चीव	१	आदान संवरणयोः	चीवति (वा) चीवते	ऋ ड
चुक्क	१०	व्यसने	चुक्कयति	क
चुच्य	१	अभिषवे	चुच्यति	ई
चुट	६	छेदे	चुटति	श शि
चुट	१०	छेदने-भेदनेच	चाटयति धान्यं	क
चुट	१०	छेदने	चुटयति केशं शिशुः	क इ
चुट	१	अल्पीभावे	चोटति वेदः कलौ	
चुट	१	अल्पीभावे	चुण्टति	इ
चुट्ट	१०	अल्पीभावे (अ- थवा) संहतौ	चुट्टयति शोकेन देहः	क
चुड	१	अल्पीभावे	चुण्डति	इ
चुड	१०	छेदने	चुण्डयति	क इ
चुड	६	संवरणे	चुडति	श
चुड्ड	१	हावकरणे	चुड्डति नटी	
चुण	६	छेदे	चुणाति शाकं भिक्षुः	श शि

धानु.	गण.	अर्थ	उदाहरण.	अनुबन्ध.
चुत	१	आसिचने	चोताति	इ र
चुद	१	निशाने	चुन्दति (वा) चुन्दते	उ इ र ज इ
चुद	१०	संचोदने	चोदयति चोदना	क
चुप	१	मंदायां गतौ	चोपतिखलः	
चुव		वक्रसंयोगे	चुंवति (वा) चुंवयति	इ कि
चुर	१-१०	स्तेये	चौरति (वा) चौरयति	कि
चुर	४	दाहे	चूर्यते	य ड ई
चुरण	११	चौर्ये	चुरणयति	ट
चुल	१०	निमज्जने समुच्छ्रा- येच	चोलयति गंगायां मुनिः चोलः चोला	क
चुछ	१	हावकरणे	चुछति प्रियेण नारी चुछी	
चुलुम्प	१	लोपे	चुलुम्पति	
चूण	१०	संकोचे	चूणयति चूणः	क
चूर्ण	१०	पेषणे-संकोचेच	चूर्णयति	क
चूप	१	पाने	चूपति स्तनंशिशुः	
चृत	६	हिंसायां (त०) ग्रन्थे	चृतति चर्त्त	श ई
चृत	१-१०	संदीपने	चर्त्तति (वा) चर्त्तयति	कि
चृप	१०	संदीपने	चर्पयति	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.	
चेष्ट	१	चेष्टायां	चेष्टते पठितुं	चेष्टा	ङ
चेल, चेल्ल	१	गतौ	चेलति	चेलं	ऊ
च्यु	१	गतौ	च्यवते		ङ
च्यु	१०	हाससहनयोः	च्यावयति		क
च्युत	१	आसेचने	च्योतति वङ्गो हविः, अ- च्युतः, च्योतः		इ र्
च्युस	१०	हानौ-सहनेच	च्योसयति		
छद	१	अपवारणे	छदति		
छद	१०	अपवारणे	छादयति		क
छद	१०	संवृत्तौ	छदयति		क त
छद	१०	उर्ज्जने	छदयति पुत्रं घृतेन पिता		क इ र् म
छद	१०	संवरणे	छन्दति (वा) छन्दयति		कि इ
छप	१०	गतौ	छंपयति		क इ
छम	१	अदने	छमति		उ
छद्	१०	वमने	छद्दयत्यन्नं गेगी		क
छिद्	७	द्वैधीकरणे	छिनत्ति (वा) छिन्ते तृणं- शिष्यः छेदः		धञ् इ र् औ
छिद्	११	विभेदे	छिद्दयति कलशं जनःछिद्		क न
छुट	९	छेदे-संहतौ	छुटति		श शि
छुट	१०	छेदने-संहतौ	छोटयति		क
छुड	९	संवरणे	छुडति		श

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
छुप	६	स्पर्श	छुपति	श औ
छुर	६	छेदे (त०) लोपे	छुरति	श शि
छृद्	१	संदीपने	छृद्ति	ई
छृद	१०	संदीपने	छृदयति तेजो ऽर्जुनस्य	क कि ई
छृद्	७	देवनद्युतिवमनेपु	हृणति (वा) हृन्ते	ध ञ उ इ र
छृप	१०	संदीपने	छर्षति	क
छद्	१०	द्वैधाकरणे	उदयति तरुं तक्षां	क त
छो	४	छेदने	छयति धान्यं कृषाणः	य
छ्यु	४	गतौ	छ्युयते	ङ
जक्ष	१	दानगत्याः	जक्षते	इ ङ म
जक्ष	२	भक्षहसनयोः	जक्षिति मूलकं	ल क्ष लु ध
जज	१	युद्धे	जजति	
जज	१	युद्धे	जंजति	इ
जट	१	संहतौ	जटति जटा	
जन	३	जनने	जजन्ति बीजं सत्क्षेत्रे- जन-जन्मा	लि म र
जन	४	प्रादुर्भावे	बीजादंकुरो जायते	य म इ ङ
जन	१०	जनने	जनयति विश्वं विष्णुः	
जप	१	मानसे	जपति—जपः—जापः—	
जप	१०	संवाते	जापयति	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
जभ	१	यमने	जभति	
जभ	१	यमने	जन्भति	इ
जभ	१	गात्रविनामे	जभते	इ
जभ	१	गात्रविनामे	जंभते	इ इ
जभ	१०	नाशने	जंभयति	जंभः इ इ
जभ	१	अदने	जमति	क
जन्वी	६	परिभाषणतर्ज्जि- नयोः	जर्जति	उ
जर्जे	६	परिभाषणतर्ज्जि- नयोः	जर्जेति	श
जर्ज्जि	६	परिभाषणतर्ज्जि- नयोः	जर्ज्जति	श
जर्ज्जि	६	परिभाषणतर्ज्जि- नयोः	जर्ज्जिनि	श
जर्ज्जि	१	परिभाषणतर्ज्जिन- योः (न०) र्ज्जि	जर्ज्जति	
जल	१	अपवारणे	जलति	क
जल	१०	अपवारणे	जालयति	क
जल			जालं	
जल	१	दहनकार्याणां	जलति	
जल	१	हिमत्यां	जलयति (ज) जलये	इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
जस	४	मोक्षणे	जस्यति वत्सं गोपः	उ इ र य
जस	१०	हिंसायां (त०) अनादरे	जासयति रिपुं राजा	क
जस	१०	रक्षणे	जंसयाति	क इ
जस्	१०	ताडने	जासयाति (वा) जसति	उ कि
जागृ	२	निद्राक्षये	जागर्ति मुनिः	ल लु
जि	१	जये अभिभवेच	जयति कृष्णः जयः	
जिम	१	अदने	जिमति	उ
जिरि	५	हिंसायां	जिरिणोति	न र
जिव	१	प्रीणने	जिवति	इ
जिवि	५	जिघांसायां	जिविनोति	न
जिप	१	सेचने	जिपति	उ
जीव	१	प्राणधारणे	जीवति हरिकथया साधुः जीवः	ऊ
जु	१	गतौ	जवते जवः	ह
जु	१	अंहासि	जवति	र
जुग	१	त्यागे	जुंगति	इ
जुड	६	बन्धे	जुडति जनः सूत्रेण व- स्त्रं, जोडः, जोडनं	श शि
जुड	६	गतौ	जुडति जुजोड	श
जुड	१०	धरणे	जुण्डयति भृत्यं राजा	क इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
जुत	१	भासने	जोतते विद्यया नरः	ऋ ङ
जुन	६	गतौ	जुनति	श
जुल	१०	पिषि	जोलयति	कं
जुष	१-१०	परितर्कणे (त०)	जोषति (वा) जोषयति	किं
		तृप्तौ	धूर्त्तचतुरः	
जुष	६	प्रीतिसेवनयोः	जुषते हरिभक्तः	श ङ ई ङि
जूर	४	जीर्ण हिंसावयो- हान्योः	जूर्यते वृद्धः	य ई
जूर्व	१	वधे	जूर्वति	ई
जूष	१	हिंसायां	जूषति (वा) जूषते	व
जू	१	न्यकारे	जरति	
जूभ	१	गात्रविनामे	जृभते	ङ ई
जूभ	१	गात्रविनामे	जृभते (त०) जृभति— जृभः—जृभ जृभं जृभणं	ङ ङ
जूहृ	४	वयोहानौ	जीर्यति—जीर्णः—णा—णं	य प म इ र्
जूहृ	९	वयोहानौ	जृणाति जरया जनः जी- र्णः—णा—णं	ग गि
जूहृ	१-१०	वयोहानौ	जरति (वा) जरयति	क कि
जेप	१	गतौ	जेपते	ऋ ङ
जेह	१	यत्ने	जेहते	ऋ ङ
जे	१	क्षये	जायति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
जि	१	अभिभवे	ज्रयति धर्मं कलिः	
जी	९	ज्याने	जिणाति	ग गि
ज्ञा	९	अवबोधने	जानाति	ग
ज्ञा	१०	मारणतोपणनिशा- मनेषु (त०) स्तु- तोनिशाने च	ज्ञपयति रिपुं राजा ज्ञ- पयति मित्रं नरः ज्ञपय- ति पांडित्यं सभायां	क म
ज्ञा	१०	नियोजने	ज्ञापयति भृत्यं राजा	क
ज्ञप	१०	मारणतोपण नि- शामनेषु स्तुतौ च	ज्ञपयति	क म
ज्या	९	जराया	जिनाति	ग गि
ज्यु	१	गत्या	ज्यवते	ङ
ज्युत	१	भासने	ज्योतति	इ र्
ज्युत	१	भासने	ज्योतते	ऊ ङ
ज्यो	१	नियमवृत्तादेशोपा- नीतिषु	ज्यवते	ङ
ज्वर	१	रोगे	ज्वरत्यजीर्णेन ज्वर.	म
ज्वल	१	दीप्तौ	ज्वलति वह्निः ज्वाला-	ज
ज्वल	१	दीप्तौ	ज्वलति (वा) ज्वाल- यति चित्तं क्रोधः प्रज्वा- लयति	—
जट	१	सधाते	जटति केशः जटा	—

धातु.	राण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.	
झम	१	अदने	झमति	उ	
झर्च	६	परिभाषणतर्जनयोः	झर्चति	श	
झछे	६	परिभाषणतर्जनयोः	झछति	श	
झर्झ	१	परिभाषणतर्जनयोः	झर्झति	झर्झरः	श
झर्झ	६	परिभाषणतर्जनयोः	झर्झति	—	—
झप	१	ग्रहे	पिधाने—झपति	(वा)	ज
झप	१	हिंसायां	झपति	झपः	—
झु, झ्यु	१	गतौ	झवते		ङ
झूप	१	हिंसायां	झूपति		—
झृ	४	वयोहानौ	झीर्यति—झीर्णः—णा—णं		य प
टक	१०	बन्धे	टण्कयति—टण्कः—विटण्कः		क इ
टल	१	विक्रमे	टलति		ज
टिक	१	गत्यां	टिकते		क इ
टिप	१०	क्षेपे	टिपयति		क
टीक	१	गत्यां	टीकते		क इ
टीक	१	गत्यां	टीकते		क इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
डुल	१	विकृते	डुलति	ज
डप	१०	सहतौ	डपयते	क ड
डप	१०	संहतौ	डपयते	क इ ड
डब	१०	क्षेपे	डबयति	क इ
डिप	४	क्षेपे	डिप्यति	य इ
डिप	६	क्षेपे	डिपति शरं	श शि
डिप	१०	क्षेपे	डेपयति	क
डिप	१०	सहतौ	डेपयते	क ड
डिप	१०	संहतौ	डिंपयते	क इ ड
डिब	१०	क्षेपे	डिबयति	क इ
डिभ	१०	संघाते	डिभयते	क इ ड
डी	४	गतौ	डीयते पक्षी	य ड
डी	१	विहायसागतौ	डयते गगने हंस, प्रडी- नं, संडीनं, उड्डीनं	
डुब	१०	अदने	डुबयति	क इ
डुभ	१०	संघाते	डुभयते	क इ ड
णक्ष	१	गतौ	नक्षति	
णख	१	गतौ	नखति	
णव	१	गतौ	नवति प्रयागात् कार्शो	इ
णट(इ ति)नट	१	नृत्ये	नाटयति	म

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
णट	१	नृत्ये (त.) हि-	णटति	
णद	१	नायां	नदति	नद
णद	१०	भार्ये (वा०)	नादयति	क
णभ	२	भार्ये	नभ्राति	ग
णभ	१	हिंसायां	नभते	नाभिः लृ ड
णभ	४	हिंसायां	नभ्यति	य
णम(वा)	१	प्रवृत्तौ	नमति, प्रणमति	गुरुं शि- ष्यः, प्रणामः
णय	१	रक्षणे (त०) गतौ	नयते	ड
णई	१	"	(इति नईः)	
णल	१	बन्धे-गन्धे च	नलति	ज
णश	४	अदृशने	नश्यति	कामः नाशः य लृ उ
णम	१	कौटिल्ये	नमते	मूलः
णह	४	बन्धने	नध्यति (वा) नध्यते	य अ ओ
णाय	१	"	(इति नाथ)	
णाध	१	क्रु	(इति नाध)	क
णाम	१	शब्दे	नामते	नामा कृ ड
णिज	३	शौचे	नेनेक्ति (वा) नेनक्ति	ज- नि, ड, अ, ओ
			नेने वस्त्रं निर्णेजने	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
णिज	२	श्रुद्धौ	प्रणिक्ते जलैर्न गावं	ल इ ऊ
णिद्	१	कुत्सायां (त.)	नेदति (वा) नेदते पापि-	ऋ ङ
		सन्निधौ	नं साधुः निद्वते	
णिद्	१	कुत्सने	निन्दति इति निद्	इ
णिल	६	गहने	निलति	श
णिव	१	मेके	निवति	इ
णिश	५	समाधौ	नेशतिमुनि. निशा	
णिप	१	मेके	नेपति	उ
णिस	२	चुंबने	निस्ते हरिमुखं नन्दः	ल ङ इं
णी	१	प्रापणे	कृष्णं मथुरां नयते (वा)	ञ
			नयत्यक्रूरः नयः नायः	
			नीति नायकः	
णील	१		(इतिनील)	
णिवि	१		(इतिनीव)	
णु	२	स्तुतौ	नौति	ल
णुद्	६	प्रेरणे	नुदति (वा) नुदते पठ-	श ञ औ
			नाय पुत्रं पिता	
			नुवति हरि मुनिः	श शि
णू'अ.)	६	स्तवने		
णु-				
णेद्-इ	१	कुत्सायां (त.)	नेदति (वा) नेदते	ऋ ञ
ति णिद्		सन्निधौ		

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
णेष	१	गतौ	नेपते	ऋ ङं
तक	१	सहनहामयोः	तकति	
तक	१	गतौ	तकते	ङ इ
तक	१	कृच्छ्रजिवने	तंकति	इ
तक्ष	१	तनूकरणे त्वचनेच	तक्षति वृक्षं तक्षा	ऊ
तग	१	गतिकंपस्खलनेषु	तगति	इ
तंच	७	संकुची	तनक्ति	ध
तंच	१	गतौ	तंचति	उ
तंज	७	संकोचे	तनक्ति	ध उ
तट	१	उच्छ्राये	तटति तटं	
तट	१०	आहतौ	तटयति	क
तड	१०	आवाते (त.)	ताडयति ताम्रं ताम्रकारः	क
		त्विपि		
तड	१	ताडने	तण्डतेरिपुं	ङ इ
तंतम्	११	दुःखे	तंतस्यति	ट
तद्	१	कल्याणे	तन्दते गृहे नरः	इ
तन	८	विस्तारे	तनोति (वा) तनुते तन्वं तन्नुवायः वितानः	द ज ऊ
तन	१-१०	श्रद्धापतापयोः (तथा) उपकृतौ श्रद्धावातेशब्देच	तनति (वा) तानयतिज्ञा निवाकथंजनः वितान- यति	किं उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तप	१	संतापे	तपति तापः	औ
तप	४	ऐश्वर्ये	तप्यते सेनया राजा	य इ औ
तप	१-१०	दाहे	तपते (वा) तापयते	कि इ
तंत्र	१	गतौ	तंत्रति	
तम	४	ग्लानौ (त०) इच्छायां	ताम्यति दुराचारेण विप्रः	यभ इर् उ
तय	१	गतिरक्षयोः	तयते	इ
तरण	११	गतौ	तरण्यति	ट
तत्र	१०	कुटुंबभरणे	तन्त्रयतेकुतन्त्रेणकुमतिः-	क इ इ
तर्क	१०	भाषार्थे दीसितर्क योश्च	तर्कयति	क
तर्ज	१	तर्जने	तर्जति तं ततर्जानिलात्मजं	
तर्ज	१०	तर्जने	तर्जयते	क इ
तर्द	१	हिमायां	तर्दति ततर्द	
तर्ब्ब	१	गतौ	तर्ब्बति	
तल	१-१०	प्रतिष्ठायां	तलति (वा) तालयति दे- वालये राजा तलः तालुः	कि
तस	४	उत्क्षेपणे	तस्यति मल्लो मल्लं वि- त्सिः	य उ इर्
तस	१-१०	अलंकारे	तंसति (वा) तंसयति उ तंसः अवतंसः	कि इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तस्	४	उपक्षये	तस्यति	उ य
ताय	१	संताने पालने च	तायते धर्म साधुः	ऋ ङ
तिक, ती	१	गतौ	तेकते	ऋ ङ
क				
तिक	५	जिवांसायां	तिक्रोति	न
तिग	५	जिवांसायां (त.) स्कन्दनेत्र	तिशोति	न
तिथ	६	घातने	तिघ्नोति	न
तिज	१	निशाने क्षमार्यां च	तितिक्षते खलं साधुः	ङ
तिज	१०	निशाने	तेजयति शूलं भट्टः ते- जना	क
तिप	१	क्षरणे (त.) द्युति	तेपते जलं वटात्	उ ऋ ङ
तिम	४	आर्द्रभावे	तिम्यति तैलेन देहः	य
तिल	६	स्नेहने	तिलति तैलेन गात्रं तिलः	श
तिल	१०	स्नेहने	तेलयति तैलेन देहं जनः	क
तिल (वा)	१	गतौ	तेलति	
तिष्ठ				
तिरस्	११	अन्तर्द्धौ	तिरस्यति कुटिलो वार्त्ता छन्नना	ट
तीक	१	गतौ	तीकते	ङ ऋ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तीम	४	आद्रिभावे	नीम्यति तैलेन देहः	य
तीर	१०	सभासां	तीरयति तीरं	क त
तोव	१	स्थालये	तीवति	
तु	२	गतिवृध्निवृत्तिहिंसा पूर्त्तेषु	तौति	ल
तुज	१	हिंसायां	तोजति तुतोज	
तुज	१०	भाषार्थे	तुंजयति	क इ
तुंज	१०	हिंसायां	तुंजयति	क इ
तुज	१०	हिंसाबलादान निकेतनेषु	तोजयति	क
तुंज	१	हिंसाबलवैष्ट- नप्राणनेषु	तुंजति तुंगः तुंगी	इ
तुट	६	कलहकर्मणि	तुटति खलः पित्रा सह	श शि
तुड	१	तोडने	तोडति जरासंधं भीमः	ऋ
तुड	६	तोडने	तुडति बन्धनं हस्ती तोडने	श शि
तुड	१	तोडने(त.)वधे	तुंङते तृणं तुण्डं	इ ङ
तुड	१	अनादरे	तुडति	
तुण	६	कौटिल्ये	तुणति खलः	श
तुत्थ	१०	स्तूतौ	तुत्थयति	क त.

धातु.	शंण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तुद	६	व्यथने	तुदति (वा) तुदते विधुं तुदो विधुं तोत्रं	श ञ औ
तुद(त.)	१	चेष्टायां	तुन्दति सुखाय तुन्दं	इ
त्रद				
तुप	१	वधे	तोपति	
तुप	१०	तर्दने	तुपयति	क इ
तुप	६	हिंसायां	तुपति	श प
तुंप	६	हिंसायां (त०)	तुपति	श
		क्लिशि		
तुंप	१	वधे	तुंपति	
तुफ	६	हिंसायां	तुफति	श
तुंफ	६	हिंसायां	तुंफति	
तुंफ	६	तृप्तौ	तुंफति भोजने-विप्रः	श
तुव	१-१०	अर्दने अदर्शनेच	तुंवति (वा) तुंवयति- तुंवी	कि इ
तुभ	१	हिंसायां	ताभते	ल ङ
तुभ	४	हिंसायां	तुभयति	य
तुभ	९	हिंसायां	तुभ्नाति	ग
तुर	३	त्वरणे	तुरतीति लुब्धो, धनाय तुरितं, तुरा, तुरगः, तुरंगः	लि र
तुरण	११	त्वरायां	तुरण्यति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तुर्व	१	हिंसायां	तुर्वति	ई
तुल	१०	पूरणे	तोलयते	क ड
तुल	१-१०	उन्माने	तोलति (वा) तोलयति कांचनं जनः तुला	कि
तुष	४	तुष्टौ	तुष्यति तुष्टः, टा, टं, तुष्टिः	य लृ औ वि
तुस	१	शब्दे	तोसति	
तुह	१	अर्दने	तोहति	इ र्
तूड	१	अनादरे, तोडनेच	तूडति	ऋ
तूण	१०	संकोचे	तूणयति	क त
तूण	१०	पूरणे	तूणयते, तूणः, तूणा, तूणी, तूणीरः	क ड
तूर	४	भरणे, हिंसायां	तूर्यते याचकः	य ड इ
तूल	१	निष्कर्षे	तूलतिकनकं तूलिका	
तूष	१	तुष्टौ	तूषति कृष्णः	
तृक्ष	१	गतौ	तृक्षति तृक्षः ताक्ष्य	
तृण	८	अर्दने	तृणोति (वा) तृणुते तृ- णं वृषः	द व उ
तृद	७	हिंसादनयोः (त.) अनादरे	तृणात्ति (वा) तृत्ते	घ ञ इर् औ

धातुः	संज्ञ.	अर्थः	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तृप	१-१०	प्रीणने (त.) सं- ज्ञीप्सेसंदीपे	तर्प्यति (वा) तर्प्यति हविषा वान्हि विप्रः	कि
तृप	४	प्रीणने	तृप्यति पयसा बालः तृ- प्तिः तर्पणं	य जि उ
तृप	९	प्रीणने	तृप्नोति	न
तृप	६	प्रीणने	तृपति	श ष
तृप	६	प्रीणने	तृपति	श
तृफ	६	तृप्तौ	तृफति भोजने विप्रः	श
तृप	४	पिपासायां	तृप्यति चातकः तृट् तृपा- तृष्णः णा-णं-तृष्णा	य इर जि श ऊ
तृह	७	हिंसायां	तृणेदि रिपुं जनः	ध ऊ
तृह	१	तृद्धौ	तृंहति	इ
तृंह		हिंसायां	तृहति	श ऊ
तृ	१	तरणाभिभ— वप्लवनेषु	तरति गंगां धीवरः तर- णिः तरणी तरिः तरी	
तृ	९	हिंसायां	तृणाति	
तृ	९	हिंसायां	तृणाति (वा) तृणीते	वः ग
तेप	१	कम्पेक्षरणे	तेपते	क ड
		द्यूत्यांच		
तेव	१	देवने	तेवते	क ड
तोड	१	अनादरे	तोडति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तौक	१	गतौ	तौकते	ऋ ङ
त्रक	१	गतौ	त्रंकते	ङ इ
त्रख	१	गतौ	त्रखति	
त्रख	१	गतौ	त्रंखति	इ
त्रग	१	गतौ	त्रंगति	इ
त्रद	१	चेष्टायां	त्रंदति	
त्रप	१	लज्जायां	त्रपते वधूः	त्रपा उ, ङ, प, मि
त्रस	१	उद्वेगे	त्रसति	ङ ण
त्रस	४	उद्वेगे	त्रस्यति खल्यत्साधु.	य
त्रस	१०	निवारणे(त) श्रेद्धे- निषेधेद्यतौ	त्रसयति शत्रुं शूरः	क
त्रस	१-१०	भाषा (वा) भासि	त्रंसति (वा) त्रंसयति	कि इ
त्रुट	४	छेदने	त्रुटयति	य
त्रुट	६	छेदने	त्रुटति	श शि
त्रुट	१०	छेदने	त्रुटयते	क इ
त्रुप	१	वधे	त्रुपति	
त्रुप	१	वधे	त्रुंपति	
त्रुफ	१	हिंसायां	त्रोफति तस्करो धनाय पाथं	
त्रै	१	पालमे	त्रायते	ङ
त्रौक	१	गतौ	त्रौकते	ऋ ङ

धातु.	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
त्वक्ष	१	तनूकरणे	त्वक्षति वृक्षं	
त्वक्ष	१	त्वचोग्रहे	त्वक्षति	
त्वग	१	गतिकर्म्ययोः	त्वंगति	इ
त्वच	६	संवरणे	त्वचति दोषं दानेन दा- ता, त्वचं, त्वक्, त्वचा	श
त्वंच	१	गतौ	त्वंचति	उ
त्यज	१	हानौ	त्यजति गृहं यतिः त्यागः	औ
त्वर	१	सम्भ्रमे	त्वरते भोजनाय त्वरा	जि ष म ड
त्सर	१	छद्मगतौ	त्सरति खलः त्सरः	औ ज
त्विष	१	भासे	त्वेषति (वा) त्वेषते	श रि
थुङ्	६	संवृत्तौ	थुङ्गति	ई
थुर्व	१	हिंसायां	थुर्वति	म ष ड
दक्ष	१	हिंसायां	दक्षते	ड
दक्ष	१	वृद्धौ(त.) स्यदे	दक्षते धर्मेण दक्षः	इ
दघ	१	घातने	दंघति	न
दघ	९	घातने—पालनेच	दघ्नोति	क त
दंड	१०	दंडनीपातने	दण्डयति दण्डयं राजा दंडः	
दद्	१	दाने(त.) भृतौ	ददते	ड
दध	१	धारणे(त.) दाने	दधते	ड

धातु	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
दध	१	पालने	दधति कृष्णं नन्दः	
दभ	१०	नादे	दभयति	क्
दभ	१०	नोदे	दंभयति	क इ
दंभ	५	दभे	दभोति भूतः	न उ
दंभ	१०	सधाने	दंभयते	क ड
दम	४	उपशमे	दाम्यति मुनि, दम, दान्तिः, दान्तः, ता तं	य भ उ इ र्
दय	१	गतौ दाने हिंसायां	दयते	ञि ड
दरिद्रा	२	दुर्गतौ	दरिद्राति दरिद्रः	ल लु क्ष
दल	१०	विदारणे	दालयति	क
दल	१	भेदे-विशरणे	दलति दलं	मि
दव	१	व्रजे	दंघति	इ
दश	१०	भाषार्थे-त्विति	दंशयति	क इ
दश	१०	दंशने(त.) दर्शे	दशयते मूलं दंशः	क इ ड
दंश		दशने	दशति मूलं दंशः	औ
दस	४	उत्क्षेपे	दस्यति	य इ र् औ
दस	१०	दंशने	दंसयते गात्रं	क इ ड
दस	१०	भाषि	दंसयति	क इ
दस	१०	दंशने-दर्शने च	दसयते श्रीकृष्णं भक्तः	ड क
दस	४	उपक्षये	दस्यति	य उ
दह	१	भस्मीकरणे	दहति वनं वह्निःदाहः	औ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
दह दा	१० ३	दीप्तौ-दाहेच दाने	दहयति ददाति गां विप्राय (अ- थवा) दत्ते, आ उपसर्गे आदत्तः	क इ लि ड डु
दा दाणइ- तिदा	२ १	लवने दाने	दाति दात्रेण धान्यं यच्छति धनं विप्राय	ल प
दान	१	अवखण्डने(अथवा) आर्ज्जवे	दीदांसति (वा) दीदां- सते काष्टं वर्द्धकि	उ ङ
दाय दाश	१ १	दाने दाने	दायते दाशति (वा) दाशते वि- प्राय वस्त्रं	ऋ ङ ऋ ञ
दाश	१०	दाने	दाशयते	क ऋ ङ
दाश	५	हिंसने	दाशनोति	न र .
दास	१	दाने	दासति (वा) दासते दासः	ऋ ञ
दास	५	जिघांसायां(त.)वधे	दास्नोति रिपुं	न र
दिप	१०	संघाते	दिपयते	क ङ
दिप	१	संघाते	दिपति (वा) दिपते	ञ
दिभ	१०	नोदे	दिभयति	क इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
दिभ	१०	संघाते	दिभयते	क इ
दिव	१०	अर्द्धे	देवयति	क
दिव	१	प्रीतौ	दिवति	इ
दिव	४	कीडाविमिगीषा- व्यवहारद्युनिमोदम दस्वभकांतिगातिपु	दिव्यति—दिवे—	य उ
दिव	१०	परिकूजने	परिदेवयतेप्रातः—पक्षी—	क इ
दिश	६	अतिसर्जने (अथ वा) शौचे	दिशते	श इ औ
दिप	१०	मर्द्दने	दिपयति (वा) देपाति कुचं कामिन्याः	उ कि
दिह	२	उपचये	दिगि (वा) दिग्धे देहो वृत्तेन	ल व औ
दी	४	क्षये	दीयते	य ङ औ
दीक्ष	१	मौख्ये—उपनयने वेतादेशेच	दीक्षते. कार्तिकपूर्णिमा- यां यतिः दीक्षते पुत्रं पिता—दीक्षते शिष्यं दीक्षा	
दीधी	२	दीप्तिदेयनयोः	दीधीति गगने भानुः	ल, लृ, र, र, स
दीप	४	दीप्तौ-क्षरणेन	दीप्यते	प ई श्र ङ
दु	१	गतौ	द्वति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
दंफ	६	संक्षेपे	दृफति रिपुं राजा	श
दुभ	६	ग्रंथे	दृभति माल्यं	श इ
दुभ	१-१०	भये संदर्भे	दर्भति (वा) दर्भयति	कि इ
दृश	१	प्रेक्षणे	पश्यति	इर् ओ
दृह	१	वृद्धौ	दर्हति	इ
दृह	१	वृद्धौ	दृहति	ग गि
दृह	१	भये	दृणाति	म
दृह	१	भये	दग्ति	ग गि
दृह	१	विदारणे	दृणाति	य
दृह	४	विदारणे	दृयति	न
दृह	५	हिसायां	दृणोति	ह
दृह	१	पालने	दीनं दयते	ऋ
दृह	१	क्षरणे	देपति	ऋ ऋ
दृह	१	देवने—परिवेदनेच	देवने देवः स्वर्गे	प
दृह	१	शोधने	दायति जलेन देहं	य
दृह	४	अवखंडने	शिरः शत्रोरवद्यति	ल
दृह	२	अभिगमने	द्यौति रामो जरासंधं	ल ऋ
दृह	१	दीप्तौ	द्योतते	
दृह	१	न्यक्करणे	द्यायति तलं सापुः	
दृह	१	गतौ	द्रमाति	
दृह	१	परितापे	द्रवस्यति	ट

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
द्रा	२	कुत्सायां (त०)	द्राति निद्राया निद्रालुः	
द्राक्ष	१	बोरवासिते (त०) क्राक्षे	द्राक्षति	ई
द्रास्व	१	शोषणालमथर्योः	द्रास्वति हिमेन वृक्षः	ऋ
द्राद्य	१	आयासे-सामर्थ्येच	द्राद्यते मोक्षे मुनिः श्र-	ऋ ङ
द्राड	१	विशरणे	द्राडते पुष्पं	ऋ ङ
द्राह	१	जागरे, निक्षेपेच	द्राहते	ऋ ङ
द्रु	१	गतौ	द्रवति लोहं द्रावः	
द्रु	१	अनुतापे	द्रवति	र ण
द्रुड	१	मज्जने	द्रोडति	
द्रुड	६	मज्जने	द्रुडति	श शि
द्रुण	६	गतौ, जैह्वे, वधे	द्रुणति इयः द्रोणेः	श
द्रुह	४	जिघांसायां	द्रुह्यति रिपुं राजा द्राहः	य ल ङ
द्रू	९	हिंसायां-गतौ	द्रूणाति (वा) द्रूणाति	ग अ
द्रूक	१	शब्दोत्साहयोः	द्रूकते युद्धे वीरः	ऋ ङ
द्रू	१	स्वप्ने	द्रायति . रात्रौ लोकः, निद्रा, निद्रालुः	
द्रु	१	स्थगने	द्ररति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
द्विष	१	अप्रीतौ	द्वेषति (वा) द्वेषते द्वेष.	अ
द्विष	२	अप्रीतौ	द्विषन्ति संदाधारितं म- हात्मनां (त०) द्विष्टे द्वेषः	ल औ अ
धक्क	१०	नाशने	धक्कयति	क
धण	१	ध्वाने	धणति	
धण	१	रवे	धणति	
धन	२	धान्ये	दधन्ति शालि भूमि धनं धान्यं	ल लि र
धर्ज	१	गतौ	धर्जति	
धव	१	व्रजे	धवति	इ
धा	२	धारणपोषणयोः (त०) दाने	दधाति (वा) धत्ते	लि डु अ
धाव	१	गतौ—श्रुद्धौच	धावत्यश्वः धावति (वा) धावते काष्ठेन दन्तान्	उ अ
धि	५	प्राणने	धिनीति हव्येन हिर- ण्यरतसं	न
धि	६	वारणे	धियति वेदं बालः	श
धिक्ष	१	संज्ञापने-जीवनैक- शानेच	धिक्षते बान्हिः काष्ठेन	ड

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
धिव	९	प्रीणने (त०) गतौ	धिनोतिहृद्येन हिरण्य- रेतसं	न इ
धिप	३	शब्दे	दिधेष्टि	लि र
धी	४	अनादरे (त) अधारे	धीयते सायुं खलः	य इ औ
धु	९	कंपने	धुनोति (वा) धुनुतेशा लिनं वातः	न ज
धु	१	स्पर्शे (तथा) स- पिणे	धुवति ध्रुवः	वि
धु	६	स्पर्शे-सर्पणेच	ध्रुवति	श शि
धुर, हूर	४	हिंसायां (त) गतौ	धूर्यते रिपुं बली	य ई व
धुने	१	हिंसायां	धूर्वति	ई
धू	१	कंपने	धवति (वा) धवते	व
धू	१	जवध्वंसने	धवते पत्रं वृक्षात्	व
धू	९	कंपने	धूनोति (वा) धुनुते शालिनं वातः	न व
धू	६	विधूनने	धुवति हस्तं नटः	श शि
धू	९	कंपने	धूनानि पल्लवं वातः धूनः ना-नं	ग गि

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
धू	१०	कपेन	धावयति (वा) धावय- ने धूनयति (यथा) वायुर्विधूनयति केसर- पूष्पंजातं.	क ज
धूस	१	संदीपनेजीवने क्ले- शनेच	धूसते वान्हिः काष्टेन	ड
धूप	१	संतापे	धूपायति	
धूप	१०	भाषार्थे (त०) दीप्तौ	धूपयति	क
धूश	—	—	इति धूस (तथा) धूस	
धूप	१०	धूशे	(इतिधूस)	क
धूप	१०	संहतो हिसे	धूपति	उ
धूस	१०	कान्तिकरणे	धूसयत्यंगं कुंकुमे जनः	क
धू	१	धारणे	धरति (वा) धरते, पुरं, धुर्यः धुरंधरः	ज
धृ	१०	धृतौ	धारयति	क
धृ	६	अवस्थाने	ध्रियते यावदेकोपि रिपुं	श ड
धृ	१	दृष्टने	धरानि	
धृ	१	सेचने	धरति मेघो भूमिं	
धृ	१	अवध्वसे	धरते	ड
धृज	१	गतौ	धर्जति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
धृज धृष	१ १-१०	गतौ प्रहसने-अमर्षेच	धृञ्जति धर्षति (वा) धर्षयति धृष्टो धार्षिकं	इ कि
धृष धृष	१० ९	शक्तिबन्धे प्रागल्भ्ये	धर्षयते धृष्णोति सभायां देवद- त्तः धृष्टः, टा टः	क ङ न ङि आ
धे	१	पाने	धयति वत्सो धेनुं	ट
धेक	१०	दर्शने	धेकयति कपर्दिनं शैवः	क
धोर	१	गतिचातुर्ये	धोरत्यश्वः	
ध्मा	१	शब्दाग्निसंयोगयोः	धमति शंखं कृष्णः- धमति लोहं लोहकारः	
ध्माक्षत- ध्वाक्ष	१	घोरवासिते (त०) कांक्षे	ध्मांक्षति ध्माक्षः	इ
ध्वै	१	त्रितायां	ध्यायति हरिं यतिः ध्यानं	
ध्रज	१	गतौ	ध्रजति	
ध्रज	१	गतौ	ध्रञ्जति	इ
ध्रण, ध्रण	१	ध्वाने	ध्रणति (तथा) ध्र- णाति	
ध्रस	९	उत्क्षेपे-उञ्छे	ध्रस्नाति	ग उ
ध्रम	१०	उत्क्षेमे	ध्रामयति	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
प्राक्ष		गोखासिते (त०)	प्रांक्षति	इ
	१	कासे		ऋ
प्राख	१	शोषणालमर्षयो.	प्राखति हिमेन वृक्ष.	ऋ ङ
प्राघ	१	शक्तौ	प्राघते	ऋ ङ
घाड	१	विशरणे	घाडते पुष्पं	
धिन		गतौ	धेजति	श
ध्रुव	६	गतिस्वैर्ययो.	ध्रुवति	श शि
ध्रू	६	गतिस्वैर्ये	ध्रुवति	ह ऋ
ध्रैक	१	शब्देत्साहयो	ध्रैकते	
ध्रै	१	तृप्तौ	ध्रायति	
ध्वज	१	गतौ	ध्वजति	ध्वज
ध्वज	१	गतौ	ध्वंजति	इ
ध्वण	१	वाने	(इतिध्वन)	
ध्वन	१	शब्दे	ध्वनति ध्वनि.	ध्वन मि
ध्वन	१०	शब्दे	ध्वनयति ध्वन	ध्वनि क त
ध्वन	१०	शब्दे कपे	ध्वनयति धनुर्द्धन्वी (वा)	
			ध्वानयति (यथा) ध्वा	क
			नयति वृक्ष वायुः	
ध्वस	१	गतौ चूर्णने भ्रं-	ध्वसते	उ ङ ल
		शेच		
ध्वृ	१	यर्णे, कौटिल्येच	ध्वरति वशं	अध्वर

धातु.	गण.	अर्थः	उदाहरण.	अनुबन्ध.
ध्वांक्ष	१	घोरवासिते	ध्वांक्षति	इ
नक्	१०	नाराने	नैक्यति	क
नख	१	सर्पणे	नखति	नखः
नज	१	चिह्ये	नजते	इ ओ ङ
नट	१	नृत्ये (त०) हिंसायां	नटति नटः	
नट	१०	अवस्यंदने, भ्रंशे, दीप्तौ च	नाटयति हस्तं नटी	क
नड	१०	भ्रंशे	नाडयति	क
नद	१	अव्यक्ते शब्दे	नदति नदी	
नद	१	समृद्धौ	नन्दति—ननन्द पारिल्लवनेत्रया नृपः नन्देत चकुलं पुंसां	इ टु
नन्व	१	गतौ	नन्वति	
नम	१०	नृत्यां	नामयति (वा) नमयति	
नम	१	प्रव्हे शब्दे	नमति, प्रणमति गुरुं शिष्यः, नमस्कारः	
नय	१	गतौ	नयते	ङ
नर्द	१	शब्दे	नर्दति ननर्दचासुरः सोपि	
नर्व्व	१	गतौ	नर्व्वति	
नल	१०	अपवारणे	नालयति (वा) नलति	कि

धातु	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
नल.	१०	दीप्तौ	नालयति	क
नह	४	बंधने	नहति (वा) नहते	य ज औ
नाथ	१	याञ्चोपतापैश्चर्या- मीःपु	नाथते (तथा) नाथति (यथा) नाथतिबल साधुं नाथति याचकां वदा न्यं नाथः	ऋ
नाथ	१	याञ्चोपतापैश्चर्या- शो पु	नाथते	ऋ ङ
निक्ष	१	चुंबने	निक्षति मुपं	
निद	१	कुत्साया	निन्दति	निन्दा
निष	१	मंचने	नेपति	इ उ
निष्क	१०	परिमाणे	निष्कयते	निष्क क ङ
नील	१	वर्ण	नीलति पंठ नीलः नीली	
नीव	१	स्थौल्ये	नीवति	
नुड	६	वधे	नुडति	श शि
नृत	४	गात्रविक्षेपे	नृत्यति नर्त्तकः	य
न	१	नये	नरति	म
ऋ	९	नये	ऋणाति नरं राजा	ग गि
पक्ष	१०	परिग्रहे	पक्षयति	पक्षः क क त

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पच	१	पाके	पचति (वा) पचते पचा पाकः पचनं पकः का कं	अ औ ष
पच	१	व्यक्तीकरणे	पचते गुणं कविः	इ औ
पच	१	व्यक्तीकरणे	पंचते	इ ङ
पच	१०	विस्तारं	पञ्चयति पाञ्जिकां मिशुः	क इ
पठ	१०	ग्रंथे (त०) वेष्टने	पठयति माल्यं माल्यकारः	क त
पठ	१०	भाषायां-त्विषि	पाठयति	क
पठ	१	गतौ	पठति	
पठ	१	व्यक्तायांञाचि	पठति पाठं पाठकः	
पड	१०	संहतौ	पडयति	क
पड	१०	संहतौ-नाशनेच	पण्डयति	क इ
पड	१	गतौ	पण्डते पण्डा पण्डितः	ङ इ
पण	१	व्यवहारे (त०)	पणते वाणिगापणे पणः	ङ
पण	१	स्तुतौ	पणायते हरिं विप्रः	
पण	१०	व्यवहारे	पणयत्यापणे उपसर्गप्र- पाणयति	क. त
पत	१	गत्यां ऐश्वर्ये	पतति	ल ज
पत	४	ऐश्ये	पत्त्यते	य ङ
पत	१	गतौ (त०) ऐश्ये	पतयति पतं गोगगने	क त
पथ	१	गतौ	पथति	पथः ए ज

धातु-	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पथ	१०	गतौ	पंथयति	पांय. क इ
पथ	१०	प्रक्षेपे	पाथयति	क
पद्	१	स्थैर्ये	पद्गति	ए
पद्	४	गतौ	पद्यते	य ड औ
पद्	१०	गतौ	पदयते	क त ड
पन	१	व्यवहारे (त०) स्तुतौ	पनते वणिगापणे इति पण पनायति हरिं विप्र.	
पंपस्	११	दुःखे	पंपस्यति गदेनार्तः	ट
पंप	१	गतौ	पंपति	
पय	१	गतौ	पयते	ड
पयस्	११	प्रसृतौ	पयस्यति	ट
पर्ण	१०	हरितभावे	पर्णयति तरुपर्णं भेद पर्ण, पर्णः	क त
पर्प	१	गतौ	पर्पति	
पर्द	१	कुत्सितेशब्दे व्यवहारे, स्तुतौ च	पर्दते गर्दभः	
पर्व	१	गतौ	पर्वति	
पर्व	१	पूरणे	पर्वति	
पर्ष	१	स्नेहने	पर्षते पुत्रे पिता पर्षत्-स स्पर्षते	ञ
पल, पल्ल	१	गतौ	पलति (वा) पल्लति	ज

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पल	१०	रक्षणे	पालयति (वा) पलयति	क
पल्युल	१०	लूनिपूत्योः	पल्युलयति	क त
पल्यूल				
पश	९	वाधे—ग्रथेच	पशति (वा) पशते	ञ
पश	१०	बन्धे	पाशयति पाशेन पशुं गो- पः पाशः	क
पश	१०	बन्धवाधयोः— स्पर्शगत्योश्च	पाशयति पाशः	क त
पष	१	वाधनस्पर्शयोः बन्धे—स्पर्शने ग्रथे	पषति (वा) पषते	ञ
पप	१०	बन्धे—अनुपसर्गात्- गता	पपयति	क
पप	१०	बन्धवाधयोः स्पर्शगत्योश्च	पपयति	क त
पस	१	वधग्रंथयोः	पसति (वा) पसते	ञ
पस	१०	बन्धे	पसयति	क
पस	१०	नाशने	पंसयति पांसुः	क इ
पा	१	पाने	पिवति पाने	
पा	२	रक्षणे	पाति पुत्रं पिता	ळ
पार	१०	समाप्तौ	पारयति राजसूयं युधि- ष्ठिरः पारणापारं	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पाल	१०	रक्षणे	पालयति	क
पि	६	गतौ	पियति	श
पिच्च	१०	कुट्टने	पिच्चयति सोमं पिच्चटं	क नापितः सोमपाः
पिछ	६	बाधे	पिछति	श
पिछ	१०	कुट्टने	पिछयति	क
पिज	१०	निकेतने	पिजयति	क
पिज	२	वर्णे-वर्णपूजयोः	पिक्ते पिजरः	ल इ ड
पिज	१०	हिंसायां-भाषट्कार्थे- पट्टवलादाननिकेत- नेषु	पिजयति	क इ
पिट	१	संहतौ (त०) ध्वनौ	पेटति धान्यं	पेटकः
पिठ	१	हिंसायां (त०)	पेठति	.
पिड	१	क्लिशि संघाते	पिण्डते	पिण्ड ड इ
पिड	१०	संघाते	पिडयति	पिड. क इ
पिल	१०	क्षेपे	पेलयति	क
पिव	१	सेचने	पेवते	ऋ ड
पिश	६	अवयवे	पिशाति	पेशी श प
पिष	७	संचूर्णे	यवंपिनष्टिचेटी	पेषः ध ल औ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पिष	१०	हिंसायां	पिषयति	क
पिष	१	गतौ	पिषति	
पिम	१	गत्यां	पिसति	ऋ
पिस	१०	निकेतनेहिंसावल- दानेषु गत्यां च	पिसयति	क
पिस	१०	भाषार्थे, त्विषिच	पिसयति	क इ
पिस	१-१०	त्विषि	पिसयति (वा) पिसति	कि इ
पिस	१०	नाशे	पिसयति	क इ
पी	४	पाने	पीयते पयः शिभुः	य ल
पीड	१०	अवगाहने (त०) वधे	पीडयति प्रजामवग्रहः पीडा	क ऋ
पील	१	प्रतिष्टम्भे	पीलति बालः पीलुः	
पीव	१	स्थौल्ये	पीवति पीवरः	
पुच्छ	१	प्रमादे	पुच्छति कृत्ये मूढः पुच्छं	
पुट	१०	भाषार्थे-चूर्णे भा- सिच	पुटयति	क
पुट	६	संश्लेषणे	पुटति कामं रतिः पुपोट	श शि
पुट	१०	संसर्गे	पुटयति संपुटे पुष्पं जनः	क त
पुट	१०	दीप्तौ	पुंठति (वा) पुंठयति	इ कि
पुट्ट	१०	अल्पी भावे तौ- छये	पुट्टयति शोकेन देहः	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पुड	६	उपक्षये	पुडति	श
पुड	१	महँ-खण्डनेच	पुण्डति	इ
पुण	६	शुभे कर्मणि	पुणति स्नानेन जन पुण्य प्या-प्य निपुण णा-ण	श
पुथ	१०	भाषार्थे, त्विषिच	पोथयति	क
पुथ	४	हिंसाया	पुथ्यति रिपुं वातपोथ	य
पुथ	१	हिंसाया सक्रेशेच	पुथति	इ
पुर	६	अग्रगमने	पुरति कौरवान् भीष्म, पुरोर	श
पूर्व	१	पूरणे	पूर्वति जलेन कलशं	श
पुल	६	महत्वे	पुलति	ज
पुल	१	महत्वे	पोलति	क
पुल	१०	सघाते उच्छिन्नौ	पुलयति तृण कृपाण	
पुप	१	पुष्टौ	पोपति देह	य ऋ औ
पुप	४	पुष्टौ	पुप्यति	ग
पुप	९	पुष्टौ	पुष्पाति देह मूर्ख	क
पुप	१०	धारणे	पोपयति कवचं कुमार	य
पुप्प	४	विकसने	पुप्पयति कलिका प्रात	
			पुप्प	य इर्
पुस	४	विभागभ्रंशयो	पुस्यति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पुंस	१०	मर्दे—अभिवर्द्धनेच	पुंसयाति	क
पुस्त	१०	आदरानादरयोः	पुस्तयति धनं पुस्तकं	क
पू	९	वन्वे (त०) पवने	पुनाति (वा) पुनीते विश्वं गंगा	ग अ गि
पू	१	पवने	पवते गंगा पवन	ङ
पू	४	पवने	पूयते	य ङ
पूय	१०	संघाते	पूपयति	क
पूज	१०	पूजायां	पूजयति गुरुं शिष्यः पूजा	क
पूण	१०	संघाते	पूणयति	क
पूय	१	विशरेण दुर्गं धेच	पूयते मृतकः	ई ङ
पूर	४	आप्यायने	पूर्यते जलेन तरुः	य ई ङ
पूर	१०	आप्यायने	पूरयति धनैर्याचकं कर्णः	क
पूँव	१०	निकेतने	पूँवयति	क
पूँव	१०	निकेतने	पूँवयतिगृही	क
पूल	१	संघाते	पूलति तृणानि	
पूप	१	वृद्धौ	प्रतिक्षणं पूषति यस्य विक्रमः	
पृज	२	वर्णे	पृङ्क्ते	इ ङ ल
पृ	५	प्रीतौ	पृणोति साधुरतिथीन्	न

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण	अनुबन्ध
पृ	६	व्यायामे	धर्मं व्याप्रियते साधु व्यापार	श ड
पृ	१०	पूरणे (त०) पा लेन	पारयति पयसा क्लश	क
पृ	३	पालनपूरणयो	पिपत्तिं पुत्र धनेन पिता	लि
पृच	१ १०	सयमने (त०) स पर्के	पर्चति (वा) पर्चयति	वि
पृच	२	सपर्के	सपृक्त साधुभि साधु	उ इ ड
पृच	७	सपर्के	सपृणक्ति न केनापि यति	ध इ ड
पृज	२	सपर्के	पृक्ते	ल ड ड
प्रेष	१	गतौ	प्रेषते	ऋ ड
पृड	६	मुखे	पृडति धर्मो लोक	श
पृण	६	प्रीणने	पृणाति हरि भक्त्या बुध पपणं	श
पृथ	१०	प्रक्षेपे	पृथयति	क
पृप	१	सेके	पृपति	उ
पृ	९	पालनपूरणयो	पृणाति विश्व जलेन शक्र	ग गि जि
पृ	३	पालनपूरणयो	पिपत्तिं	लि
पृ	१०	पृत्तौ	पारयति	क
पेण	१	पेपणगातिश्लेषेषु	पेणाति	ऋ
पेल	१	गतौ	पेलति	ऊ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पेव	१	सेवने	पेवते	ऋ ङ
पेस	१	गतौ	पेसति	ऋ
पै	१	शोषणे	पायति हिमेन वृक्षः	
प्यै	१	वृद्धौ	प्यायते	ङ
प्याय	१	वृद्धौ	प्यायते	इ औ ङ
प्युप	४	भागे—दाहे	प्युप्यति	य इर्
प्युप	१०	उत्सृजे	प्युपयति	क
प्रच्छ	६	जिज्ञासायां	पृच्छति गुरुं शिष्यः	श औ
प्रथ	१	प्रख्याने	प्रथते विद्यया कविः प्रया	म प ङ
प्रथ	१०	प्रक्षेपणे (त०) ख्यातौ	प्राथयति	क
प्रस	१	विस्तारे, प्रसवु	प्रसते परगुणं साधुः	ङ
प्रा	२	पूरणे	प्राति जलेन घटं	ङ
प्री	९	तर्पणे—कान्तौच	प्रीणाति (वा) प्रीणीते पितरं पुत्रः प्रीतः ता, तं प्रीतिः	ग ङ
प्री	४	प्रीतौ	प्रीयते धर्मसाधुः प्रीतः, ता, तं, प्रीतिः	य ङ
प्री	१०	तर्पणे	प्राययति (वा) प्रायय- ति देवतां हविषा यज्वा प्रीणयति	क ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
प्री	१	तर्पणे	प्रयति (वा) प्रयते	ञ
प्लु	१	गतौ	प्रवते	ह
प्लुप	१	दाहे	प्रोपति	उ
प्लुप	९	स्नेहनमोचनपूरणे दाहेच	प्लुष्णाति प्लुञ्जं पिता-विप्लु पविप्लुप्	ग
प्रोथ	१	पर्याप्तौ	प्रोथति (वा) प्रोथते नार्जुनाय कर्णः	ऋ ङ
प्लक्ष	१	भक्षणे	प्लक्षति (वा) प्लक्षते प्लक्षः	ञ
प्लुव	१	गतौ	प्लुवते	प्लुव
प्लु	९	गतौ	प्लुनाति	ह
प्लिह	१	गतौ	प्लिहते	ह
प्लु	१	गतौ	प्लुवते	प्लुव.
प्लुप	१	दाहे	प्लोपति	ऊ
प्लुप	४	दाहे	प्लुप्यति गात्रं ज्वरेण प्लुष्ट, टा, टं, प्लोप	य लृ
प्लुप	९	स्नेहनमोचनपूरणे- पु दाहेच	प्लुष्णाति	प्लुप्
प्लुस	४	दाहविमागयोः	प्लुस्यति	य इर्
प्लुव	१	सेवने	प्लुवते	ऋ ह
प्ला	२	भक्षणे	प्लाति	ल

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
फक्क	१	नीचैर्गतौ	फक्कति खलः	
फण	१	निःस्नेहे	फणति	ण
फण	१	गतौ	फणति (वा) फणयति सर्प्य सर्प्य वैद्यः फाणय- ति दुग्धं	मिण
फर्व	१	पूरणे	फर्वति तमसा निशा ब्रह्मांडं	
फल	१०	संघाते	फालयति	क
फल	१	गतौ संघातेच	फलति	ज
फल	१	निष्पत्तौ	फलति धर्मः	
फल	१	विशरणे	फलति फालः	जि आ
फुल्ल	१	विकसने	फुल्लति कलिका फुल्लं	
फेल	१	गतौ	फेलति फेला	ऋ
फूल	१	जीवने	फवलति	म
वक	१	गतौ	वंकते	इ ल
वक	१	कैटिल्ये	वंकते चित्तं खलः वंकः	इ ल
वज	१०	मार्मणसंस्कारे	वाजयतियोद्धा वाजः वाजिनः	क
वट	१०	वंटने	वंटयति धनं भ्राता	क इ
वट	१०	पैल्ये	वटति	
वण	१	शब्दे	वणति	

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण	अनुबन्ध
वद	१	स्पर्धे	वदति	
वध	१	बन्धने, निद्रायाच	वधते बीभत्सते पापसाधु बीभत्सा	ङ
व्या	१०	सयमने	व्याधयति नकेशान्द्रौपदी	क
वच	८	याचने	वचुने	द उ ङ
वन्ध	९	बन्धने	वध्नाति कृष्ण माता	ग औ
वन्ध	१०	बन्धने	वन्धयति	क
वभ्र	१	गतौ	वभ्रति	
वम्ब	१	गत्या	वम्बति	
वव्व	१	गत्या	वव्वति	
वर्ह	१	वधौ दीप्तौच	वर्हति	
वर्ह	१	स्मृतिहिंसा दान वाक्षु	वर्हते	ङ
वर्ह	१	श्रेष्ठे	वर्हते	ङ
वल	१	दानवधनिरूपेषु	वल्ते	ङ
वल	१	धान्यावरोधे जी वनेच	वलति	ज
वल	१०	भृतौ प्राणनेच	वल्यति बालपिता	क
वल	१०	निरूपणे	वल्यते	व ङ
वल्लह	१	श्रेष्ठे	वल्लहते	ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
बल्ह	१	स्मृतिहिंसा दान- वाक्षु	बल्हते	ड
बल्ह	१०	त्विषि(त०)भाषार्थे	बल्हयति	क
वस्त	१०	अनादृत्यादृत्योः अदनेच	वस्तयति	वस्त क
बह	१	वृद्धौ	बहते	ड इ
बाध	१	विलोडने	बाधते	ऋ ड
विद्	१	अवयवे	विंदति	इ
विल	६-१०	भेदने-क्षेपचे	विलति (वा)	वेलयति श क
विस	४	क्षेपे	विस्यति	य इरू
बीज	१	गतौ	बीजते	बीजं ड
बुक्क	१-१०	भषणे	बुक्कति (वा) भ्रा बुक्कं	बुक्कयति कि
बुक्क	१०	व्यसने	बुक्कयति	क
बुट	१-१०	हिंसे	बोटति (वा)	बोटयति कि
बुड	६	संवरणे (त०) उत्सर्गे	बुडति	श शि
बुद्	१	निशामने	बोदति (त०)	बोदते इरू उ अ
बोध	१	बोधने	बोधति (वा)	बोधते शास्त्रं इरू ज अ
बुध	१	अवबोधने	बोधति शास्त्रं बालः प्र- बोधः	औ

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण.	अनुबन्ध
बुध	४	अवगमने बुभु-	बुध्यते (अथवा) बुध्यति	य औ
बुन्द	१	क्षयाच्च निशामने	बुदति (वा) बुंदते	इर् उ अ
बुन्ध	१	निशामने	बुन्धति (वा) बुन्धते	इर् उ अ
बुन्ध	१०	बन्धे	बुन्धयति	क
बुल	१०	मज्जने	बुलयति	क
बृह	६	उद्यमे	बृहति वैश्य बृहती बर्हि (इति बृ)	श उ
बृ	—	—	ब्युस्पति	य इर्
ब्युस	४	हानौ	ब्रणति	—
ब्रण	१	शब्दे	ब्रवीति (वा) ब्रूते	ल अ
ब्रू	२	यक्ताया वाचि	ब्रूसयति व्याघ्रश्चौर	क
ब्रूस	१०	हिंसाया	भक्षति (वा) भक्षते	न
भक्ष	१	भक्षणे	भक्षयति	क
भक्ष	१०	अदने	भजति (वा) भजते वि	अ औ
भज	१	सेवाया	प्युबुध भाग , भक्ति	—
भज	१०	विश्राणने पाकेच	भाजयति मन्त्रिणे राज्य राजा	क
भज	१०	भापार्थे-भासि	भजयति	क इ
भञ्ज	७	आमर्द्धने	भनक्ति पादप दन्ती भग	ध ओ औ
भट	१	परिभाषणे	भटति	म

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
भट	१	भृतां	भटति भृत्यं	भटः
भट	१०	प्रतारणे	भंटयति बालं भंटकः	क इ
भड	१	परिहासे	भंडते	इ ङ
भड	१०	शिवे	भंडयति	क इ
भण	१	शब्दे	भणति	ऋ
भद्	१	मुत्प्रीत्योः शुभे क- ल्याणे सुखे च	भन्दते	इ ङ
भद्	१०	शुभे	भंदयति	क इ
भर्भ	१	हिंसायां	भर्भति	
भर्व	१	हिंसायां	भर्वति	
भर्त्स	१०	तर्जने	भर्त्सयते	क ङ
भल	१०	निरूपे—आभंडने च	भलयते	क ङ
भल	१	परिभाषणे—हिंसा- यां—दाने च	भलते	भालं ङ
भल्ल	१	परिभाषणे—हिंसा- यां—दाने च	भल्लते	भल्लः ङ
भष	१	भर्त्सने	भषति श्वा भषकः	
भस	३	भर्त्सनदीप्त्योः	वभस्ति दुर्वलं दुष्टः	लि र
भा	२	दीप्तौ	भाति सूर्यः	भानुः ल ष
भाज	१०	पृथक्कर्मणि	भाजयति धनं भ्राता वि- भागः	क त

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
भाम	१	क्रोधे	भामते मूर्खः भामिनी	ङ
भाम	१०	क्रोधे	भामयति	क क त
भाप	१	व्यक्तायांवाचि	भापते भाषा	ऋ ङ
भास	१	दासौ	भासते विद्यया विप्रः	ऋ ङ
भिक्ष	१	याज्ञायां	भिक्षतेऽन्नं भिक्षुः भिक्षा भिक्षुः	ङ
भिद	७	विदारणे	भिनति (वा) भिन्ते द- धिमाङं कृष्णः, भेदः	घञ् इर् औ
भिल	१०	भेदने	भिलयति	क
भिषज्	११	चिकित्सायां	भिषज्यति भिषक्	ट
भिष्णज्	१२	उपसेवायां	भिष्णज्यति	ट
भी	३	भये	बिभेति पापात् भयः	लि
भीम	१	गतौ-शब्देच	भीमति	ऋ
भुज	६	कौटिल्ये	भुजति भुजं	श ओ औ
भुज	७	पालनाभ्यवहारयो	भुनाक्ति मत्तं हरिः भुंक्ते भिलु फलं कृष्णः भोग.	घ ज औ
भुङ्	१	भरणे	भुङ्ते कपटं	इ ङ
भू	१	सत्तायां	गमःस्थिरो भवति	
भू	१-१०	प्राप्तौ	भवते (वा) भावयते मोक्षं ज्ञानो	कि ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
भू	१०	अवकलकने शुद्धिमि श्रणयोः	भावयति वेदार्थं वैदिकः भावना	क
भूष	१-१०	अलंकारे	भूषति (वा) भूषयति भूषणं	कि
भृ	१	भरणे	भरति (वा) भरते भि- क्षुरुदरं	ब टु डु
भृ	३	धारणपोषणयोः	विभृते धरां वासुकिः (त०) विभार्ति	लि डु टु ज
भृज	१	भर्जने	भर्जते	ङ ई
भृड	६	निमज्जने	भृडति गंगायां यात्रिकः	श
भृश	१०	दीप्तौ	भृशति (वा) भृशयति	इ कि
भृश	४	अधःपतने	भृश्यति वभर्श	य इर् उ
भृ	९	भर्त्सने भृतौ भृजि	भृणाति कुपुत्रं पिता	ग गि
भेष	१	भये	भेषति (वा) भेषते पा- पात्साधुः	ऋ व
भ्यस	१	भये	भ्यसते	ह
भ्रक्ष	१	अदने	भ्रक्षति	
भ्रण	१	शब्दे	भ्रणति	
भ्रम	१	चलेन	भ्रमति तीर्थं मुनिः	ज ण उ
भ्रम	४	अनवस्थाने	भ्राम्यति लुब्धः भ्रमः भ्रान्तः ता-तं भ्रान्तिः	य भ ज ण उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
भ्रंश	१	अवसंसने	भ्रंशते भ्रष्टः-ष्टा-ष्टं	उ ड ल
भ्रंश	४	अघापतने	भ्रंश्यति वृक्षात्पत्रं बभ्रंश	उ इ र उ
भ्रस्ज	६	पाके	भृज्जति (वा) भृज्जते भृष्टं	श न औ
भ्रंस	१	अवसंसने	भ्रंसते	ह
भ्राज	१	दीप्तौ	भ्राजते	ह
भ्राज	१	दीप्तौ	भ्राजते	भ्रानथुः ङ ण ऋ ॠ
भ्राश	१	दीप्तौ	भ्राशते	ऋ ण ॠ ङ
भ्रास	—	—	(इतिभ्राश)	—
भ्री	९	भरणे (त.) भये	भ्रीणाति नारी भर्ता	ग गि
भ्रुड	६	संवृतिसंहत्योः	भ्रुडति	श शि
भ्रुण इ-	१०	आशायां (त.)	भ्रुणयते पुत्रं बंध्या	क ड
ति भ्रूण	—	विशकायां	—	—
भ्रेज	१	दीप्तौ	भ्रेजते	ऋ ड
भ्रेष	१	चले भये	भ्रेषति (वा) भ्रेषते	ऋ न
भ्रुक्ष	१	अदने	भ्रुक्षति	—
भ्रुश	१	दीप्तौ	भ्रुशते	ऋ ण ॠ ङ
भ्रुस	—	—	(इतिभ्रुश)	—
भ्रुष	१	गतौ	भ्रुषति	ऋ
भ्रुक	१	मंडने	भ्रुकते स्तनं कुंकुमेन	ऋ इ
भ्रुक	१	गतौ	भ्रुकते	इ इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मक्क	१	गतौ	मक्कते	ङ
मक्ष	१	संघाते	मक्षति जलेनान्नं मक्षिका	
मख	१	गतौ	मखति	
मख	१	गतौ	मंखति	ङ
मग	१	सर्पणे, गतौच	मङ्गति	ङ
मगध	११	परिवेष्टने नीचदा स्येच	मगध्यति नीचः	ट
मघ	१	भेषे	मंघति	ङ
मघ	१	कैतवे गतौ आ- क्षेपेच	मंघते कितवो द्यूतेन	ङ इ
मच	१	कल्कने	मचते मूर्खः	ङ
मच	१	धारणे उच्छ्रायधृ- त्यर्चाभाःसु	मञ्चते माल्यं कंठे मन्त्रः	ङ इ
मञ्ज	१	गत्यां	मञ्जति	
मञ्ज	१०	मृजाध्वनयोः	मञ्जयति	
मठ	१	निवासे, मदेच	मठति मठः	
मठ	१	शोके	मंठने	ङ
मड	१०	सुखे	मंडयति (वा) मंडति मङ्गाति	ङ कि ग इ
मड	१	वेष्टने (त०) वि- भागे	मंडते	ङ इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
मड	१-१०	भूपायां, हर्षेच	मंडति (वा) मंडयति मंडनं	कि इ
मण	१	शब्दे	मणति	
मंतु	११	अपराधे रोषेच	मंतूयति	ट
मंतु	११	अपराधे रोषेच	मंतूयते	अ ट
मथ	१	विलोडने	मथति	ए ज
मथ	१	कुथे	मंथति	इ
मद	१	स्तुतिमोदमदस्वप्न कान्तिगतिषु जा- ज्येच	मन्दते मुनिर्माधवं मन्द- दाः दं.	इ ड
मद	१०	तृप्तियोगे	मनो मदयते द्रव्यं	क ड
मद	४	हर्षे	माद्यति धनेन भिक्षु. मद- सत्त. ता सं	य,अ,ज,द्वै,र
मद	१०	हर्षमुपनयो.	मदयति मनो मित्रागम- मदयति रिपु बली	क
मन	८	बोधने	मनुते मुनिः	द ड उ
मन	४	ज्ञाने	धर्म न मन्यते मूढः	य ड औ
मन	१०	स्तंभे	मातयते सेनां दुर्गः	क ड
मन्थ	१	विलोडने (त०) कुन्थे	मन्थति रथं ममन्थ स- हयं	
मन्थ	९	विलोडने	मन्थाति	ग

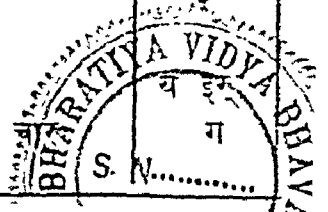
धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मम्ब्र	१	गत्यां	मम्ब्रति	
मय	१	गतौ	मयति	इ
मर्ध	१	गत्यां	मर्धति	
मर्च	१०	शब्दे	मर्चयति	क
मर्व	१	गत्यां हिंसायां च	मर्वति	
मर्व्व	१	पूरणे (त०) गतौ	मर्व्वति	
मत्र	१०	गुप्तभाषणे	मंत्रयते मंत्रिणा राजा	क ई इ
मभ्र	१	गतौ	मभ्रति	
मल	१	धारणे	मलते माल्यं—मलः	
मल	१०	धारणे	मलयति	क त
मल्ल	१	धारणे	मल्लते मल्लः	
मव	१	बन्धने	मवति रज्वा पाटञ्चरं	
मव्य	१	बन्धने	मव्यति चौरं राजा	
मश	१	शब्दे (त०) कोपे	मशति मशकः	
मष	१	हिंसायां	मषति	
मष्क, मस्क	१	गतौ	मष्कते (वा) मस्कते	इ
मस	४	परिमाणे (त०) परिणामे	मस्यति स्वर्णं स्वर्णकारः मसूरः मासः—मापः—मापकः	य इर् ई
मस्ज	६	शुद्धौ (वा) स्नाने	मस्जनि म्नयः म्बे	य इर् ई

धातु	गण.	अर्थ	उदाहरण	अनुबन्ध
मह	१	पूजाया	महति	
मह	१०	त्विति	महयति	क इ
मह	१	वृद्धौ	महते	इ क
मह	१०	पूजाया	महयति	क त
मा	२	माने	माति दडेन भूमि— प्रमाण	ल
मा	३	माने शब्दे च	धर्म मीमते मुनि	लि ह
मा	४	माने	मायते	य क
माक्ष	१	काक्षाया	माक्षति	इ
माड	१	माने	माडति (वा) माडते स्वर्ण—माड	ऋ ञ
माथ	१	मुथे	माथति	इ
मान	१	पूजाया जिज्ञासा या च	मीमासते शास्त्र ब्रुव -- मीमासा	
मान	१०	पूजाया	मानयति	क
मान	१	पूजाया	मानति	
मार्ग	१०	मस्कारसर्पयो	मार्गयति	क
मार्ग	१ १०	अन्वेषणे	मार्गति (वा) मार्गयति	कि
माज्ज	१०	शब्दे (तथा) पूजाया	माज्जयति—माज्जार	क
माह	१	माने	माहति (वा) माहते	ऋ ल ञ

धातु.	गण.	अर्थ	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मि	९	प्रक्षेपणे	मिनुति (वा) मिनुतेतृण- वायुः	न ज डु
मिञ्	६	वाधे, उत्केशे च	मिञ्छति	श
मिज	१०	दीप्ता	मिंजति (वा) मिंजयति	इ कि
मिथ	१	वधे, मेधायां च	मेथति	ऋ ज
मिद्	१०	स्नेहने	मिंदति (वा) मिंदयति.	इ कि
मिद्	१	गर्वे	मेदने मेदति	
मिद्	४	स्नेहने	मेद्यति, मेदं, मेदः मेदस्	य लृ
मिद्	१	स्नेहने	मेदते पुत्रे पिता	आ जि ङ
मिद्	१०	स्नेहने	मेदयति	क
मिद्	१	मेधाहिसयोः	मेदते (वा) मेदति वेदं वालः	ऋ अ
मिध	१	मेधाहिसयोः	मेधति (वा) मेधते	अ ऋ
मिश्र	१०	संपर्के.	मिश्रयति घृतेनान्नं जनः	क त
मिल्	६	श्लेषणे	मिलति (वा) मिलते साधुं माधुः मेलकः	श अ
मिव	१	सेके	मिवाति	इ
मिश	१	शब्दे	मेशति	
मिष	१	सेचने	मेषति	उ
मिष	६	स्पर्द्धायां	मिषति कृष्णं शिशुपालः	श

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण	अनुबन्ध
मिह	१	सेचने	मेहति मेह — प्रमेह — मेहन	ओं
मी	१ १०	गतौ मत्या च	मयति (वा) माययति	कि
मी	४	हिंसाया	मीयते मान	य इ टु
मी	९	हिंसाया	मीनाति (व) मीनाते रिपु	ग ज
मीम	१	गतौ	मीमति	रु
मील	१	निमेषणे	निमीलति भिया नेत्रे	रु
मीव	१	स्थौल्ये	मीवति	
मुच	१०	प्रमोचने मोदने च	मोचयति कचुरु सर्प	क
मुच	६	मोचने	मुञ्चति (वा) त्वामुचते देह	श प ज ल आ
मुच	१	कल्कने	मोचते	इ
मुच	१	कल्कने	मुञ्चते	इ इ
मुच	१	गत्या	मुचनि	
मुज	१०	मृजाञ्चनयो	मोजयति	क
मुज	१	शब्दे—मृजा ञ्चनयो	मुजति मुज	क इ
मुट	१	मर्द्दने	मोटति तरु गज	
मुट	१	मर्द्दने	मुटति	इ
मुट	६	आक्षेपप्रमर्द्दनयो	मुटति कालीयस्य दम्प कृष्ण	श शि

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मुट्	१-१०	संचूर्णने	मोटयति (वा) मोटयति- धानाःशिलया	कि
मुठ्	१	पलायने	मुंठते	इ ङ
मुड्	१	मुंडने	मुंडते मुंडं जलेन नापितः	इ ङ
मुड्	१	खंडने	मुंडति मुंडं मुंडी	इ ङ
मुड्	१	मग्ने	मुंडते	इ ङ
मुड्	१०	मर्द्दने	मोडयति	क
मुण	६	प्रतिज्ञाने	मुणक्ति नियमं मौनी	श
मुथ्	१	कुंथे	मुंथति	इ
मुद्	१	हर्षे	मोदते यशसा कविः— आमोदः	त्रि ङ
मुद्	१०	संसर्गे	मोदयति गुडेन धान्यं नारी, मोदकः	क
मुर	६	संवेष्टने	मुरति कंठकेन वार्ता कृ- पकः. मुरः मुरा	श
मूर्च्छे	१	मोहसमुच्छ्राययोः	मूर्च्छति मुमूर्च्छे सरस्यं रा- मस्य	आ
मुर्व्	१	बन्धने	मुर्वति	इ
मुप	१	वधे	मोपति	इ
मुप	४	स्तेये—छिदि	मुप्यति	य इ
मुप	९	स्तेये	मुप्याति वनं	ग



धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
मुप, मूप	१	स्तेये	मोपति-यो मूपति परद्रव्यं	
मुप्त	४	खंडने	मुत्पति शंकुलया क्रमुक्तं	य
मुस्त	१०	संपाते	मुस्तयति मुस्ता	क
मुह	४	वैचित्ये	मूढो मुह्यति मोहेन	य उ ल जि
मू	१	बंधने	मवते चौरं राजा	ह
मूत्र	१०	प्रस्रवणे	मूत्रयति बालस्तल्पे-मूत्र	क त
मूल, मुल	१०	रोहणे	मूलयति जलेन वृक्षं मा- लाकारः-मूलं	उ क
मूल	१	प्रतिष्ठायां संपाते च	मूलति (वा) मूलते यशः कृष्णस्य मूलं ध्रियते पोषेन जन्तुः	घ
मृ	६	प्राणन्यासे	मृग्यति धनं भिक्षुः	श ह
मृग	४	अन्वेषणे	मृगयते मृगं व्याधः मृ	य
मृग	१०	अन्वेषणे	मृगयते मृगं व्याधः मृ गया	क त ह
मृज	१	शब्दे	मर्जति	
मृज	१-१०	शौचालंकारयोः	मार्जति (वा) मार्जयति नेदनेन ललाटे नारी, मार्जयति जलेनात्मानं मुनिः	कि ऊ प
मृज	२	शुद्धौ	मार्ष्टिज्ञानेनात्मानं	ल उ प
मृड	६	मुले	मृडति धर्मो लोकं	श

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मृड	९	सुखे	मृड्नाति गिरा शुकः	ग
मृण	६	हिंसायां	मृणाति रिपुं मृणालं	श
मृद	९	क्षोदे	मृदनाति नलिनीं गजः- विमर्द्दः	ग
मृध	१	उंदे	मर्द्धते (वा) मर्द्धति	
मृश	६	आमर्शने	मृशाति गुरुवचनं साधुः- परामर्शः	श औ
मृष	१	सेचने	मर्षति	उ
मृष	१	सहने	मर्षते दोषं हरिः	ङ
मृष	१-१०	तितिक्षायां	मर्षते (वा) मर्षयते	कि ङ
मृष	४	क्षमायां	मृष्यति (वा) मृष्यते	य ञ
मृष	१०	क्षांतौ, सहने च	मर्षयति	क त
मृ	९	वधे	मृणाति	ग गि
मे	१	प्रतिदाने	मयते-तिलैर्धान्यं-विनि- मयः नैमेयः निमया वै- मयः विमयः	ह
मेट	१	उन्मादे	मेटाति धनेन नीचः	
मेड	१	उन्मादे	मेडाति	ऋ
मेथ	१	संगे मेधायां वधे च	मेथति	ऋ ञ
मेद	१	मेधाहिसयोः	मेदाति (वा) मेदते मेदः	ऋ ञ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
मेघ	१	संगमे वधे	मेघति (वा) मेघते स- खासखायं मेघा, मेघः	ऋ ज
मेधा	११	आशुग्रहणे	मेधायति	ट
मेप	१	गत्यां	मेपने	ड ऋ
मेव	१	मेवने	मेवते	ऋ ङ
मोक्ष	१-२०	असने	मोक्षति (वा) मोक्ष यतिशरंशूरः	कि
म्रा	१	अभ्यासे	मनति वेदं शिशुः आ- ज्ञायः	
म्रक्ष	१	संघाते	म्रक्षतिजलेनात्रं	
म्रक्ष	१०	म्रक्षणे म्लेच्छने च	म्रक्षयतिरजसादेहेकृष्णः	क
म्रच	१	गतौ	म्रचति	
म्रड	१	उन्मादे	म्रडति	ऋ
म्रद	१	मर्दने-क्षोदे च	म्रदते बलं बली	ड
म्रुच	१	गत्यां	म्रुचति	इर उ
म्रुच	१	गतौ	म्रुचति	
म्रेट	१	उन्मादे	म्रेटति धनेन नीचः	ऋ
म्रुंच	१	गतौ	म्रुंचति	
मुच	१	गतौ	मुचति	इर उ
मुच	१-१०	अव्यक्तायांवाचिदे शुक्तौ च	मुचति (वा) मुचयति मुचः	कि

धातु.	राण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मु	१	उन्मादे	मुद्यति धनेन नीचः	क
मुड	१	उन्मादे	मुडति	क
मुव	१	सेवने	मुवते	क इ
मु	१	कान्तिसंक्षये	मुपयति, उपम्लापयति, प्रम्लापयति	
मु	१	गात्रविनामे	मुयति पुष्पंवातेन म्लानिः	
यक्ष	१०	पूजायां	यक्षयते	क इ
यज	१	देवपूजासंगतिकरः णद्गानिषु	यजति हरिं—यजतिताप- सं साधुः पशुना शिवं यजते	ए औ ज
यत	१	प्रयत्ने	यततेमूकायनरः	इ इ
यत	१०	निकारोपस्कारयोः	यातयतिशत्रुं वली—यात- यति च्चानेन देहं यतिः	क
यत्न	१	मैथुने	यत्नति	
यम	१	मैथुने	यमति	औ
यम	१	उपरमे	यद्यतिपापात्साधुः	औ उ
यम	१	परिवेषणवेष्टने	यामयत्यन्तंविप्रायसाधुः— यमयति विमार्गात्प्रजां- राजा	क
यत्र	१०	संकोचने	यंत्रयति यंत्रेण खलं रा- जा—यंत्रं	क इ

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण	अनुबन्ध
यस	४	प्रयत्ने	यस्यति धनाय नर प्र यास	थ उ इर्
या	२	प्रापणे, गतौच	याति	ल
याच	१	याज्ञाया	याचति (वा) याचते धन याचक	ऋ ङु ङु न
यु	२	मिश्रण, मिश्रणयो	यौति घृतेनान्न यौति ख रेभ्य साधु यव याव	ल
यु	९	बधे	युनाति (वा) युनीते	ग ल
यु	१०	जुगुप्साया	यावयते वृद्ध युवति यौति	क ङ
युग	१	वर्जने	युगति	इ
युञ्ज	१	प्रसादे	युञ्जति	
युज	१ १०	मयमने	योजति (वा) योजय ति हले वृष गोष	कि
युज	७	योगे	युनक्ति (वा) युक्ते यो- गयोगी योग	य न इर् औ
युज	४	समाधी	युज्यते गुहाया योगी	य ङ औ
युज	१०	ानन्दे	योजयते	क ङ
युत	१	भासने	योतते	ऋ ङ
युध	४	सप्रहारे	युध्यत योध — युद्ध	य ङ औ
युप	४	व्यापुन्त्वे	युप्यति	य इर्

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
युष	१	हिंसायां	युषयते	क इ
येष	१	प्रयत्ने	येषते	ऋ ङ
योड, यौ- ट, यौड	१	संबन्धे	योडति (वा) यौडति	ऋ
रक	१०	आस्त्रादने (त था) आपने	रकयति मोदकं बालः	क
रक्ष	१	पालने	रक्षति, रक्षा	ञि
रञ्ज	१	गत्यां	रञ्जति	
रञ्ज	१	गत्यां	रञ्जति	इ
राञ्ज	१	शोषणाश्मर्ययोः	राञ्जति हिमेन वृक्षः	ऋ
रग	१०	स्वादे आप्तौ च	रगयति	क
रग	१	शंकायां	रगति साधुः—मूलेभ्यः	म ए
रग	१	गतां	रंगति	इ
रघ	१०	भासि	रंघयति	क इ
रघ	१	गतां	रंघते रघुः	ऋ इ
रघ	१०	आस्त्रादने	राघयतिलेह्यंकरेणकुमारः	क
रञ्च	१०	प्रतियत्ने, कृत्यां	रञ्चयति	क त
रञ्ज	१	रागे	रञ्जति (वा) रञ्जंत्यु- वायुवतां (यथा) रञ्ज- कः-रागः-रक्तः-तानं	म ओ ञ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुव
रज	४	रागे	रज्यति (वा) रज्यते- वस्त्रं रंगकारः	य ज औ म
रट	१	वाचि	रटतिकाक.	
रट	१०	परिभाषणे	रटयति विराटः	क
रठ	१	भाषणे	रठति	
रण	१	गतौ	रणति रणः	म
रण	१	शब्दे	रणति	
रद	१	विलेखने	रदतिभूवनंवराहः रदन	
रघ.	४	हिंसायां (त०) पाकेसराद्धौ च	रघ्यति पाशंडी वैदिकं- विराधः	य लृ उ
रप	१	व्यक्तायांवाचि	रपति	
रफ	१	गत्यां (त.) षधे	रफति	
रफ	१	गत्यां (त.) षधे	रफ्फति	इ इ
रव	१	शब्दे	रंवते	इ इ
रव	१	गतां	रंवति	इ इ
रभ	१	राभस्थ	रभते ब्रजेकृष्णः सुरभि (आउपसर्गे) आरभते पठितुं	औ इ
रभ	१	शब्दे	रंभते	इ इ
रम	१	क्रोडायां	रमते	उ इ ज औ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
रम	१०	क्रीडायां	रमयति (विउपसर्गे) विरामयति	
रय	१	गतौ	रयते	रयः ङ
रर्क	१	गतिवधयोः	रर्कति	
रव	१	व्रजे	रंवति	इं
रस	१	शब्दे	रसति	
रस	१०	आस्वाद्यनेस्त्रहने च	रसयति रसनयाद्राक्षार- सिकः	क त
रह	१	त्यागे	रहतिगृहं विरक्तः, वि- रहः, रहरहम्	
रह	१०	त्यागे	रहयति गेहं विरागी	क त
रह	१	गतौ	रंहयतिवायुः, रंहः, रं- हम्. रंहसा	इ
रंह	१०	गतौ-त्विपि च	रंहयति	क त
रा	२	दाने (त.) आदाने	राति धनं विप्राय	ल
राघ	१	मामर्थ्ये	राघनेयुध्यायवीरः	ऋ ञ
राज	१	दीप्तां	राजते (वा) राजति राजा	ऋ ञ
राध	४	संसिद्धौ	राध्यति ज्ञानेन यनिः	य औ
राध	६	संसिद्धौ	राध्नाति योगेन मुनिः	न औ

धातु.	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
राश	४	शब्दे	राश्यते पक्षी	य ड ऋ
रास	१	शब्दे	रासते	ऋ ड
रि	९	हिंसायां	रिणाति मलिम्बुचः पाथं	न
रि	६	गतौ	रियति	श
रिग	१	गतौ	रिगति रिगणं	इ
रिच	१-१०	वियोजनसंपर्चन- योः	रेचति (वा) रेचयति राज्यं रिपोः रेचयति ह- रितक्यारोगी	कि
रिच	७	विरेचने	रिणाक्ति (वा) रिक्ते- रोगी-विरेकः	धजइरू औ
रिज	१	ऋज्यर्थे	रेजते	ड
रिफ	६	कत्थनयुद्धनिदा- हिंसादानेषु	रिफति रिपुंभूरः-रेफः- फा-फं	श
रिम्फ	६	वधे	रिम्फति	श प
रिव	१	व्रजे	रिवति	इ
रिश	६	हिंसायां	रिशति	श औ
रिप	१	हिंसायां	रेपाति	
रिप	९	विप्रयोगे	रिष्णाति संन्यासी संव- धिम्ब्यः-	ग
रिह	६	कत्थनयुद्धनिदा- हिंसादानेषु	रिहति दुर्जनः साधुं	श

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
री	४	स्त्रवणे	रीयते जलं वटात्	य ड औ
री	६	रेपणे वधे गतौ च	रीणाति	ग मि
री	२	प्रजनने	रेति नारी	ल
रु	२	शब्दे	रंति	ल टु
रु	१	रोपे, वधे, गत्यां च	रवते चौरायराजा—रवः रविः	ड
रुक्ष (वा)	१०	गारुष्ये	रुक्षयतिदुष्टः रुक्षः—क्षा- क्षं	क त
रुक्ष				
रुच	१	वृत्तौ प्रीतिप्रका- शयोः	रुचते गोरोचना	ल ङ
रुज	६	रोगे, भंगे, मंगे च	रुजति रोगेन हस्तः	श ओ औ
रुज	१०	हिंसे	रुजयति	क
रुट	१	प्रतिघाते (त) घातौ	रुटने	ल ङ
रुट	१०	रुपि घृत्तौ च	रुटयति	क
रुट, रुडच	१	स्तेये	रुटति धनं	इ
रुट	१	उपघाते	रुटति कलिधर्मं	
रुट	१	प्रनिघाते	रुटने	चट ङ
रुट	१	गत्यान्वस्यास्तेय- घाटे	रुटति	इ
रुद	२	अश्रुविमोचने	रुदीति	ल य इरु

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण	अनुबन्ध
रुद	१	चेष्टाया	रुदति सुखाय	इ
रुध	४	अभिलाषे	(अनुउपसर्गे) अनुरुध्य ते कृष्ण गाप्य (यथा) अनुरुध्यति	य ङ औ [र, औ
रुध	७	आवरणे (त) रुन्धे	रुणधि गोपां गा गोष्टे	ध, ज, जि, इ
रुप	४	न्यामुल्लेखे	रुप्यति	य इ र
रुश	६	हिंसाया	रुपति	श औ
रुश	१०	दीप्ती	रुशयति (वा) रुशति	इ वि
रुप	१	हिंसाया	रोपति	
रुप	४	रोपे प्रतिघाते च	रुप्यति रोप	य इ रू जि
रुप	१०	रोपे	रोपयति रोप	क
रुह	१	जन्मप्रादुर्भावयो	रोहति मृत्तिकाया घट रो हति विष्णुर्मेघाया	जि ज आ
रूप	१०	रूपक्रियाया	रूपयति मात्रविगसीती रूप, निरूपण	क त
रूप	१	भूषाया	रूपति शरीरमन्त्ररणेन मुग्धा प्रियाथं	
रेक	१	शकाया	रेकते	क ङ
रेगा	११	क्षायामादनयो	रिंसायति याचर म्वाथं गनिन	ट

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
रुद	१	चेष्टायां	रुंदति सुखाय	इ
रुध	४	अभिलाषे	(अनुउपसर्गे) अनुरुध्य- ते कृष्णं गाप्यः (यथा) अनुरुध्यति	य ङ औ [र, औ
रुध	७	आवरणे (त) रुन्धे	रुणाधि गोपां गां गोष्टे	ध, ज, जि, इ
रुप	४	व्याकुलत्वे	रुप्यति	य इ र
रुश	६	हिंसायां	रुपति	श औ
रुश	१०	दीप्तौ	रुंशयति (वा) रुंशति	इ कि
रुप	१	हिंसाया	रोपति	
रुप	४	रोपे प्रतिघाते च	रुप्यति रोपः	य इ र् जि
रुप	१०	रोपे	रोपयति रोपः	क
रुह	१	जन्मप्रादुर्भावयोः	रोहति मृत्तिकाया घटः रो- हति विष्णुर्देवक्या	जि ज आ
रूप	१०	रूपाक्रियायां	रूपयति गात्रं विलासीनी- रूपं, निरूपणं	क त
रूप	१	भूपायां	रूपति शरीरमलंकरणेन- मुग्धा प्रियार्थं	
रेक	१	शंकायां	रेकते	क ङ
रेखा	११	स्त्रावासादनयोः	रेखायति याचकः स्वार्थ- दानेनं	ट

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
रेज	१	दीप्तौ	रेजते	ऋ ङ
रेट	१	परिभाषणे, याचनेच	रेटति (वा) रेटते	ऋ ङ
रेप	१	शब्दे, गमनेच	रेपते	ऋ ङ
रेभ	१	शब्दे	रेभते	ऋ ङ
रेव	१	प्लुवेगतौच	रेवते रेवा रेवती	ऋ ङ
रेष	१	अव्यक्ते शब्दे	रेषते रेषा	ऋ ङ
रै	१	शब्दे	रायति	.
रोड	१	अनादरे उन्मादेच	रोडति खलः साधुं	ऋ
रौट	१	अनादरे	रौटति	ऋ
रौड	१	अनादरे	रौडति	ऋ
लक	१०	आस्वाद्यने (त.) आपने	लाकयति	क
लक्ष	१-१०	दर्शनांकनयोः	लक्षयति (वा) लक्षय- ते-लक्षणं	क इ
लक्ष	१०	आलोचने	लक्षयते	क ङ
लख	१		लखति	
लख	१		लंखति	इ
लग	१	संगे	लगाति धर्मं विप्रः लग्नं	म ए
लम	१०	स्वादापने	लगयति	क
लग	१	गतिखंजयोः	लंगति	इ
लघ	१	गतौ अभुगत्याः	लघते	इ ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
लघ	१	शोषणे-गतौ	लंघति मर्यादां लंघति पापी	इ
लञ	१०	मापार्थे-त्विषि	लंघयति	क इ
लृञ	१	लक्षणे	लृञ्जति चक्रेण गृहं	
लज	१०	अन्तर्द्धौ	लजयति	क
लञ	१०	भानिकेतनहिंसाव- लदानेषु	लञ्जयति	क इ
लज	१०	प्रकाशने	लजयति विद्यां विप्रः न्याजा	क त
लज	१	भर्त्सने	लजति	
लज	१	भर्त्सने	लंजनि	इ
लज	६	व्रीडे	लजति (वा) लजते वधुः	श ल इ ओ
लंज	१०	भासने	लंजयति	फ त
लृट्	१	वार्ये बाल्योक्तौ	लृटति स्वार्थे लोकाः	
लृट्	१	विलासे	लृटति	
लृट्	१	जिह्वोन्मपने	लृडयति रसनां परद्रव्ये चौरः	म
लृट्	१०	उपसेवायां	लृडयति शिशुं माता	क
लृट्	१०	शोषायां	लृडयते	क ङ
लृट्	१-१०	भाषणे भासनेच	लृडति (वा) लृडयति	कि इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
लड	१-१०	उत्क्षेपे	लंडाति (वा) लंडयति.	क्रि इ औ
लड	१०	आक्षेपे	लडयति	क त
लप	१	व्यक्तायांवाचि	लपति विलापः प्रलाप आलापः अनुलापः वि- प्रलापः संलापः सुप्रलापः अपलापः	ऋ
लव	१	अवसंसने अवलंब- ने शब्देच	लवते शग्नायां	इ ङ
लभ	१	शब्दे	लभते	ई ङ
लभ	१	प्राप्तौ	लभते भिक्षां लाभः सु- लभः भा भं लभति पुन- रुत्थानं	इ ष ङु औ
लय	१	गतौ	लयते	इ
लर्व	१	गतौ	लर्वति शकटेन गोकु- लात् मयुरानंदः	
लल	१०	ईप्सायां	लालयते मृतं बाला	क ङ
लश	१०		(इतिलस)	
लष	१	कान्तौ	लपति (वा) लपते धर्मं साधुः	अ
लष	४	कान्तौ	लष्यति (वा) लष्यते	य अ
लष	१०		(इतिलस)	

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण	अनुबन्ध
लस	१	श्लेषणविलसयो	लपति विलसति विरास	
लस	१०	शिल्पयोगे	लासयति नटो बाला	क
लश्न	६	व्रीडि	लज्जते वधु लज्जा लज्जि त—ता—त	श ड इ ओ
ला	२	दाने आदानेच	लाति	ल
लाख	१	शोषणालमर्षयो	लाखति हिमेन वृक्ष	ऋ
लाघ	१	सामर्थ्ये	लाघते	ऋ ड
लाछ	१	लक्षणे	लाछति	इ
लाज	१	भर्त्सने भर्गेच	लाजते	इ ड
लाज	१	भर्त्सने भर्गेच	लानति	
लाट	११	जीवने	लाट्यति जीवनात्तमभसा	ट
लाड	१०	आक्षेपे	लाडयति	क त
लाभ	१०	प्रेरणे	लाभयति लाभाय मृत वैश्य लाभ	क त
लिख	१	गतौ	लेखाति	
लिख	६	लेखने	लिखति लेखरो ग्रथ ले खन लिखन लेखा लेखना	श
लिंग	१	गतौ	लिंगति	इ
लिंग	१	नित्रोकरणे	लिंगयति पट रगकार	क इ
लिट	११	अल्पवृत्तसन्धौ	लित्यति पितरिपुत्र	ट

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
लिप	६	उपदेहे	लिपति (वा) लिपते देहं चंदनेन जनः	श प ब जि औ
लिश	६	गतौ	लिशति	श औ
लिश	४	अल्पीभावे	लिश्यते देहो रोगेन, ले- शः, लिष्टः, टा टं	य ङ औ
लिह	२	आस्वादने	लेढि (त.) लेढि गुडं नालः	ल व औ
ली	१-१०	द्रवीकरणे	लयति (वा) लाययति- बन्दिनाघृतं होता	कि
ली	४	श्लेषणे	लीयते लज्जया भूमिनारी	य ङ
ली	९	श्लेषणे	लीनाति पतिनारी	ग गि
लीड	१	उन्मादने	लीडति	क्
लुंच	१	अपनयने	लुंचति	
लुज	१०	भानिकेतनहिंसाव- लदानेपु	लुंजयति	क इं
लुट	१	विलोडने	लोटति भूमौ	
लुट	४	विलाडने	लुन्थनि रावणः पुत्रशो- केन	य लृ ऋ
लुट	१	प्रतिघाते	लोटते विरहेण भूमौ रामः	ङ ल
लुट	६	संश्लेषणे	लुटति	श शि
लुट	१०	भापार्थे भासार्थेच	लोटयति	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
लुट्	१	स्तेये	लुंति धनं	इ
लुं	१-१०	स्तेये (त०) अ- वज्ञायांच	लुंति (वा) लुंयति	कि
लुठ	१	उपघाते	लोठति कर्लिर्घर्म	
लुठ	१	प्रतिघाते	लोठते विरहेण भूमौ रामः	लृ ङ
लुठ	९	लौठे	लुठति	श शि
लुठ	१०	चौर्ये	लोठयति	क
लुठ	१	आलस्ये (त.) गत्यालस्यस्तेयलो- टेषु	लुंठति	इ
लुड	१	मन्यने	लोडति	
लुड	६	संवृत्तौ, श्लिषे	लुडति	श शि
लुण्ड, लुढ	१०	चौर्ये	लुण्डयति	क
लुथ	१	हिंसासंक्रेशयोः	लुन्थति रावणं रामः रा वणशरेण रामो न लुन्थति	इ
लुप	४	व्याकुलत्वे	लुप्यति	य ई र
लुप	९	छेदने	लुंपति (वा) लुंपते का- ष्ट वर्द्धकैः लोपः लुप्तः ना तं	श ष न ङ ल औ
लुष	१-१०	अदर्शने-अदर्शने	लुंषति (वा) लुंषयति	कि इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
लुम	४	गार्ध्वे	लुम्यति - पुत्रवंध्या लो- भः लुब्धः घा घं	य
लुम	६	विमोहने	लुभति मूढं मायिकः	श
लुप, लूप	१०	हिंसायां (त०) स्तये	लोषयति	क
लुप, लूप	१	स्तये, भूपायांच	लोपते	उ
लुह	१	गार्ध्वे	लोहति	ओ
लू	९	छेदने	लुनाति (वा) लुनीते	ग ङि ल
लृञ्च	१	अपनयने	लृञ्चति	
लेख	११	विलासेस्वलनेच	लेख्याति धूर्तो मनसि	ट
लेखा	११	विलासे स्वलनेच	लेखायति द्विजोऽतिभो- जने	ट
लेट	११	धौर्त्ये-पूर्वभावेस्व- नेच—	लेटयति कामुकः प्रिय- याक्षपायां	ट
लेप	१	गमने शब्देच	लेपते	ह
लेला	५१	दीप्तौ	लेलायति	ट
लोक	१	दर्शने	लोकते	ऋ उ
लोक	१०	भाषार्थे दीप्तौच	लोकयते	क उ ऋ
लोच	१	दर्शने	लोचते	ऋ उ
लोच	१०	भाषार्थे त्विषि	लोचयति	क ऋ
लोट	१	उन्मादे	लोटति	ऋ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
लोट	११	घोर्त्ये-पूर्वभावे	लोट्यति घूर्तः	ट
लोट्ट	१	संघाते	लोट्टते धान्यं लोट्टः	ड
लौड	१	उन्मादने	लौडति	ण
ल्यी	९	श्लेषणे	ल्यीनाति	ग गि
ल्वी	९	गत्यां	ल्वीनाति	ग गि
वक्त	१	कौटिल्ये	वंक्ते वंक्तः	इ क
वक्त	१	गतौ	वक्ते	ड
वक्ष	१	रोपे (त०) सं हतौ.	वक्षनि शिशु वक्षः	
वख	१	गतौ	वखति	
वख	१	गतौ	वंखति	इ
वग	१	गतौ-खञेच	वंगति	इ
वघ	१	गतौ-गत्याक्षेपेच	वघने	इ ड
वच	१	वाचि	वचति	औ
वच	२	परिभाषणे	वक्ति	उ औ
वच	१०	संदेशने	वाचयति पत्रं कृष्णाय रुक्मिणीवाचिकः	क
वच	१	एकचर्यायां	वंचते	इ ड
वंच	१	गत्यां	वंचति	उ
वंच	१०	प्रलम्बने वंचनेच	वंचयते वंचना	क ड
वज	१	गतौ	वजति	

धातु.	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वट	१	परिभाषणे	वटति	म
वट	१	वेष्टने	वटति कंटकने वार्टी	
वट	१०	अंथे	वटयति माल्यं मालाकारः वेष्टनं वाटयति	क त
वट	१०	विभाजने	वटयति भूमिं ग्रामिकः	क त
वट	१-१०	विभाजने	वंटति (वा.) वंटय- ति धनं	क इ
वंट	१०	भागे	वंटयति	क त
वठ, वठ	१	स्थौल्ये	वठति	
वठ	१	एकचर्यायां	वंठते	इ ङ
वड	१०	विभागे	वंडयति	क इ
वड	१	वेष्टने (त.) वि- भागे	वंडते कंटकैर्वार्टी	इ ङ
वण	१	शब्दे	वणाति	ऋ
वद्	१	व्यक्तायांवाचि	वदति संवत्	ए
वद्	१-१०	भाषणे संदेशव- चने	वदते (वा) वादयते	कि ङ
वद्	१	स्थैर्ये	वदति मेरुः	
वद्	१	अभिवादनस्तुत्योः	वन्दते हरिं वन्दना	इ ङ
वध	१	हिंसायां	वधति	
वन	१	हिंसायां	वनति	उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वन	१	संभक्तौ (त.) शब्दे	वनति	
वन	१-१०	उपकृतौ श्रद्धा शते शब्दे उपधा- नेन	वनति (वा) वनयति	कि
वन	१	व्याप्तौ	वनयति—परिउपसर्गे प- रिवानयति	म उ
वन	८	याचने	वनुते भिक्षुः	द ड उ
वप	१	बीजतंतुसंताने (तथा) मुण्डे	वपति बीजं सत्क्षेत्रे पटं- वपते तन्तुवायः उप्तः ना तं	दृ ए औ अ
वम	१	उद्गिरणे	वमति शोणितं	दृ उ अ
वय	१	गतौ	वयते	ह
वर	१०	इप्सायां	वरयति वरं स्वयंवरं वराः	क त
वरण	११	गतौ	वरणयति	ट
वर्ष	१	गत्यां	वर्षति	
वर्च	१	दीप्ता	वर्चते	रु
वर्ष	१०	त्रिदशपूरणयोः	वर्षयति	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वर्ण	१०	वर्णक्रिया विस्तार- गुणवर्णने वचने प्रे- रणेच	वर्णयति वर्णः	क त
वद्ध	१०	पूर्तिछेदोः	वद्धयति	क
वर्ह-वर्ह	१-१०	भाषार्थे त्विषि	वर्हति (वा) वर्हयति	कि
वर्ह-वर्ह	१	श्रेष्ठ्ये	वर्हते	इ
वर्ह-वर्ह	१०	हिंसायां (त.) दीप्तौ	वर्हयति	क
वभ्र	१	गतौ	वभ्राति	
वल	१	संवरणे	वलते धनं	इ
वल्ल	१	संवरणे	वल्लते वाल्लिः वल्लभः	
वलभ	१	भोजने	वलभते	इ
वल्क	१०	भाषणे	वल्कयति वल्कः वल्कः	क
वला, वला	१	व्रजे	वल्माति	क त
वल्गु	११	पूजामाधुर्ययोः	वल्गूयति द्विजोऽतिवै- भवेन	ट
वल्गुल	१०	लूनिपूत्योः	वल्गुलयति	
वल्ह, वल्ह	१	त्वि.षि	वल्हयति	क
वल्ह, वल्ह	१	श्रेष्ठ्ये	वल्हते	इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वश	२	कान्तौ	वश्वि वशः तस्य वशे वशा	ल
वष	१	हिंसाया	वषति	
वष्क(वा) वस्क	१	गतौ	वस्कते	ह
वस	१०	स्नेहनछेदनहन- नेषु	वासयति पुत्रं पिता वा- सयति वृक्षं तक्षां वास यति चोरं रामा	क
वस	१	निवासे	निवसति (वा) वसते चित्ते हरिः, निवास.	ऐ न औ
वस	१०	निवासे	वसयति	क त
वस	२	आछादने	वस्ते मुखं हस्तेन वस्त्रं	ल ङ
वस	४	स्तभे	वस्यति मनो मुनि	य उ इ र
वस्त	१	अर्दने	वस्तयते	क ह
वह	१	प्रापणे	वहति मानं शकटमुवा- ह वृषः वहते प्रवाहः प्र वहः	ऐ व औ
वह, बह	१	वृद्धौ	वंहते	इ ङ
वह	१०	द्युतौ	वंहयति	क इ
वा	१०	मुखासर्गातिसेवासु	वापयति	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वा	२	गतिगंधनयोः गमनहिसयोः	वातिवायुः	ल
वाक्ष	१	कांक्षायां	वांक्षति	वांक्षा इ
वाञ्छ	१	इच्छायां	वाञ्छति	वाञ्छा इ
वाड	१	आप्लावे प्रीतौ च	वाडते गंगायां मुनिः च- क्रवालं	ऋ ङ
वात	१०	सुखसेवनयोः गतौ	वातयति व्यजनेन पतिं पतिव्रता	क त
वाध, वाध	१	विलोडने	वाधते साधुं खलः वाधा	ऋ ङ
वाश	४	शब्दे	वाश्यते	य ऋ ङ
वास	१०	उपसेवायां	वासयति गृहं धूपः	क त
वाह	१	प्रयत्ने	वाहते	वाहं ऋ ङ
विच	७	पृथग्भावे	विनक्ति (वा) विक्ते धनं भ्राता विवेकः	थ लि अ इ र औ
विच्छ	६	गतौ	विच्छति	श
विच्छ	१०	भाषार्थे, त्विषिच	विच्छयति	क
विज	२	पृथग्भावे	विवेक्ति देहादात्मानं वि- वेकने	लि इ र औ
विज	६	भयचलनयोः	उद्विजते खलात्साधुः, वे- गः, उद्वेगः	श ङ ई औ
विज	७	भयचलनयोः	विनक्ति लोकः	थ ई औ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
विट	१	शब्दे (त.) आक्रोशे	वेडति	
विट	१०	क्षित्यां	विटयति	क इ
विड, विड	१	आक्रोशे	वेडति विडालः	
वित्त	१०	त्यागे	वित्तयति	वित्तं क त
विथ	१	याचने	वेथते धनिनं भिक्षुः	अ इ
विद	२	ज्ञानं	वेत्ति विष्णुं बुधः	वेदः ल
विद	७	विचारणे	विन्ते ब्रह्म विवेकी	ध इ औ
विद	४	मत्तायां	विद्यते	य इ ओ
विद	६	लाभे	विन्दति (वा) विन्दते पु- ण्यं दाता	श, प, म, ल, औ
विद	१०	वेदनाख्यानविवा- सेषु	वेदयते दुःखं भिक्षुः	क इ
विध	६	विधाने	विधति विश्वं वेशाः विधिः	श
विष	१०	क्षेपे	वेपयति	क
विल	६	वेदने (त.) स्तृत्तौ	विलति तरुं हस्ती विलं (इति विलः)	श
विश	६	प्रवेशे	विशति	विवेश श औ
विष	१	सिचने	वेपाति	वेपः उ
विष	३	व्याप्तौ	वेवोष्टि (वा) वेविष्टे विश्वं विष्णुः	लि इरू औ
विष	९	विप्रयोगे	विष्णाति	अ ल ग औ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
विष्क	१०	हिंसायां	विष्कयति	क
विस	४	प्रेरणे	विस्त्यति विसं विशं	य उ
वी	२	क्रांतिगतिव्याप्ति- क्षेपप्रजनस्रादनेषु	विषं वेति	ल
वीज	१०	व्यजने	वीजयति	क त
वीभ	१	कत्थने कत्थनं- श्लाघा	वीभते	ऋ ङ
वीर	१०	विक्रांतौ	वीरयति वीरः	क त ङ
वुग	१	त्यागे	वुंगति खलं साधुः	इ
वुट, वुट	१-१०	हिंसे	वाटति (वा) वोटयति	कि
वुस, वुस	४	उत्सर्गे	वुस्यति कंचुकं सर्पः वुसं	य
वृ	९	वरणे	वृणोति (वा) वृणुते व- रंकन्या	न न
वृ	९	वरणे	वृणाति	ग
वृ	९	संमत्तौ	वृणीते विष्णुं विवेकी	ग ङ
वृ	१	आवरणे	वरति (वा) वरते	ञ
वृ	१०	आवरणे	वारयति	क
वृक	१	आदाने	वृकते वृकः	ङ
वृक्ष	१	वरणे संवातेच	वृक्षते कन्या वरं वृक्षः	ङ
वृच	७	वृत्तौ	वृचक्ति	घ इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वृज	१-१०	वर्जने	वर्जति (वा) वर्जयति	कि
वृज	२	वर्जने	वृक्ते कपटं साधुः	ल ह इ
वृज	७	वर्जने (त.)	वृत्तौ वृणाक्ति खलं शिष्टः	घ ई
वृड	९	मुखे	वृड्णाति	ग
वृण	६	भ्रोणने	वृणाति	श
वृण	८	भक्षे	वृणाति (वा) वृणुते	द ज उ
वृत्	१	वर्त्तने	वर्त्तते वार्त्ता	व उ ङ ल
वृत्	४	सम्भक्तौ	वरणे वृत्यते	य ह उ
वृत्	१०	भाषार्थे चित्रपि	वर्त्तयति	क उ
वृष	१०	भाषार्थे दीप्तौ	वर्द्धयति	क
वृष	१	वृद्धौ	वर्द्धते धर्मण	य ङ व ल
वृष	१	सेचने (त०)	वर्षति वृषः	उ
वृष	१०	शक्तिबंधने सेचने- प्रजने ऐश्वर्ये च	वर्षयते सर्पं मंत्री	क ङ
वृह	१-१०	भाषार्थे-द्युतौ	वृंहति (वा) वृंहयति	कि इ
वृह	१	वृद्धौ ध्वनौ	वृंहति वृंहितं	इ
वृह	६	उद्यमे	वृहति वृह्यः	श ङ
वृह	१	वृद्धौ	वर्हति	
वृह	१	ध्वनद्धर्त्तौः	वर्हति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वृ	९	वरणे (अथवा) भरणे	वृणाति (वा) वृणति	ग ज
व	१	तंतु संताने	वयति (वा) वयते वस्त्रं तंतु- वायः	ए ज
वेण	१	ज्ञानचिंतानिशाम- नेषु	वेणाति (वा) वेणते	ऋ ज
वेथ	१	याचने	वेथते वेथितः-वेथः	ऋ ङ
वेद्	११	धौर्त्ये, स्वप्ने च	वेद्यति ज्ञानी विषयेषु	२
वेन	१	गतिज्ञानचिंतानि- शामनवादित्रग्रहण- चलनेषु	वनति तपस्व्यत्यभ्यासेन	ऋ
वेप	१	चलने	वेपते वातेनवृक्षः	ऋ टु ङ
वेल	१०	कालोपदेशे	वेलयति दिनं गणकः-वेला	क त
वेल	१	गतौ	वेलति वेला	ऊ
वेञ्ज	१	गतौ	वेञ्जति	
वेङ्ग	१	चाले	वेङ्गति	ङ
वेवी	१	कांतिगतिव्याप्ति- क्षेपप्रजनखादनेषु	वेवीते	लु ङ र क्ष
वेष्ट	१	वेष्टने	वेष्टते	ङ
वेस	१	गतौ	वेसति	इ र्
वेह	१	प्रयत्ने	वेहते वेहत्	ऋ ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वृज	१-१०	वर्जने	वर्जति (वा) वर्जयति	कि
वृज	२	वर्जने	वृक्ते कपटं साधुः	ल ङ इ
वृज	७	वर्जने (त.) वृत्तौ	वृणाक्ति स्त्रल शिष्टः	घ ई
वृड	९	मुखे	वृङ्णाति	ग
वृण	६	मौणने	वृणाति	श
वृण	८	भक्षे	वृणाति (वा) वृणते	द व उ
वृत	१	वर्त्तने	वर्त्तते वार्त्ता	व उ ङ ल
वृत	४	सम्भक्तौ	वरणे वृत्यते	य ङ उ
वृत	१०	भाषार्थे चिचिपि	वर्त्तयति	क उ
वृध	१०	भाषार्थे दीप्तौ	वर्द्धयति	क
वृध	१	वृद्धौ	वर्द्धते धर्मेण	य ङ व ल
वृष	१	सेचने (त०) प मनेश्वर्ययोः	वर्षति वृष	उ
वृष	१०	शक्तिवधने सेचने— प्रजने ऐश्येच	वर्षयते मर्ष मंत्री	क ङ
वृह	१-१०	भाषार्थे—श्रुतौ	वृंहति (वा) वृंहयति	कि इ
वृह	१	वृद्धौ ध्वनौ	वृहति वृंहितं	इ
वृह	६	उद्यमे	वृहति वैश्यः	श ऊ
वृह	१	वृद्धौ	वर्हति	
वृह	१	ध्वनद्वयोः	वर्हति	इ र

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वृ	९	वरणे (अथवा) भरणे	वृणाति (वा) वृणीते	ग ज
वे	१	तंतु संताने	वयति (वा) वयते वस्त्रं तंतु- वायः	ए ज
वेण	१	ज्ञानचिंतानिशाम- नेषु	वेणाति (वा) वेणते	ऋ ज
वेथ	१	याचने	वेथते वेथितः-वेथः	ऋ इ
वेद्	११	धौर्त्ये, स्वप्ने च	वेद्यति ज्ञानी विषयेषु	?
वेन	१	गतिज्ञानचिंतानि- शामनवादित्रग्रहण चलनेषु	वनति तपस्व्यत्यभ्यासेन	ऋ
वेप	१	चलने	वेपते वातेनवृक्षः	ऋ टु इ
वेल	१०	कालोपदेशे	वेलयति दिनं गणकः-वेला	क त
वेल	१	गतौ	वेलति वेला	ऊ
वेल्ल	१	गतौ	वेल्लति	
वेह्ल	१	चाले	वेह्लति	इ
वेवी	१	कांतिगतिव्याप्ति- क्षेपप्रजनखादनेषु	वेवीति	लु इ र क्ष
वेष्ट	१	वेष्टने	वेष्टते	इ
वेस	१	गतौ	वेसति	इ र
वेह	१	प्रयत्ने	वेहते वेहत्	ऋ इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वै	१	शोषणे	वायति	औ
व्यच	६	व्याजीकरणे (त.) मम्भवे	व्यचति साधुं धूर्तः	श शि
व्यथ	१	दुःस्वभयचलने	व्यथते पापारसाधुः व्यथा	थ म ङ
व्यध	४	ताडने	विध्यति व्याधो मृगं	य औ
व्यप	१०	क्षये	व्यपयति	क
व्यय	१	गतौ	व्ययति (वा) व्ययते	व
व्यय	१०	क्षेपे	व्याययति	क
व्यय	१०	वित्तसमुत्सर्गे	व्ययति धनं व्ययशोलः	क त
व्युप	१०	उत्सर्गे	व्योपयति रोगवानोषधं	क
व्युस	४	हानौ-दाहेच	व्युस्यति	य ईर्
व्युस	४	विभागे	व्युस्यति	य
व्ये	१	संवरणे	संव्ययति (वा) संव्ययते मननं वस्त्रेण नारी	न
व्रज	१	गतौ	व्रजति व्रजः	
व्रज	१०	संकृतौ गतौत्यागेच	व्रजयति	क
व्रण, व्रण	१	शब्दे	व्रणति	
व्रण, व्रण	१०	शात्रविचूर्णने	व्रणयति भोष्मं शरैरर्जु- नः, व्रणः, व्रण	क त
व्रक्ष	६	उद्दने	वृक्षति मूळं पापी	श औ ऊ
व्रि	४	वरणे	व्रियते वरं नारी	ळ ञ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
व्री	९	वरणे	व्रीणाति रणं शूरः	ग गि
व्रीड	४	लज्जायां (त०) क्षिपि	व्रीड्यति वधूः व्रीडा	य नि
व्रीस	१-१०	वधे	व्रीसति (वा) व्रीसयति	कि
व्रुड	६	संवृत्ति संहति मा- र्जनेषु	व्रुडति	श शि
व्रुड	६	निमज्जने	व्रुडति	श
व्रूस	१-१०	वधे	व्रूसति (वा) व्रूसयति	कि
व्री	९	वारणं-गत्यां-वृत्त्यां	व्रीणाति भुवं शेषः (त०) व्रीपयति	ग गि
व्र्लक्ष	१०	दृशि	व्र्लक्षयति	क त
शक	४	क्षमायां	शक्यति (वा) शक्यते शिष्यापराधं गुरुः	य न
शक	९	शक्तौ	शक्नोति कंसं जेतुं कृष्णः	न इर ल
शक	१	त्रासशंकयोः	शंकाति	इ ङ
शव	१	हिंसायां	शर्षति शर्षः	
शच	१	व्यक्तायांवाचि	शचते कविः	ङ
शच	१	गतौ	शंचते	इ ङ
शट	१	रुजाविशरण गत्य- वसादनेषु	शटति	
शट	१०	श्लाघे	शटयते	क ङ

धातु.	गण.	अर्थ	उदाहरण.	अनुबन्ध.
शठ	१	कैतवे (त०) वधे हेशे च	शठति शठः	.
शठ	१०	श्लाघायां	शठयने	क इ
शठ	१०	संस्कारगत्योः आ- दस्ये-गतौ असं- स्कारसंस्कृते	शठयति	क
शठ	१०	सम्यग्भाषणे दु- र्वर्ति	शठयति शठेन धर्मं	क त
शड	१	रुनायां (त०) संवे	शंडते शंडः	इ इ
शण	१	दाने	शणति	म
शद	१	आ उपसर्गे (आ) गतौ	आशदति	औ
शद	१	शातने	शीयेत वृक्षात् पत्रं	ल न औ
शंख	१	कथने (त०) हि- मायां स्तुतौ	शंसति स्वकुलं साधुः	उ
शप	१	आक्रोशे	शपति (वा) शपते दृ- र्वासाः शक्राय शपः	न
शप	४	आक्रोशे	शप्यति (वा) शप्यते शापिनं साधुः	य न औ
शंन	१	गतौ	शंनति	

धातु.	शुण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
शंव	१०	संवंधे	शंवाति धनं यतिः, शंवः, सवुः, शंनुकः शंनुकः शं- नुका शंनुकः	क
शब्द	१०	शब्दकृतौ (अथ- ना) उपसर्ग आ- विष्कारे	शब्दयते प्रशब्दयति प्रियशिष्याय गूढमर्थं गुरुः	क
शम	१	अदर्शने (त०) दर्शने	शमयति जलधरो जलै- स्तापं निशामयति रूपं वेश्या	
शम	४	उपशमे	शाम्यति मुनिः	य उ भ इ र
शम	१०	आलोचने	शामयति कार्यं मंत्री	क ङ
शर्ध	१०	अभिराक्षायां	शर्धयति	क
शर्व, श- र्व	१	हिंसायां—गतौ	शर्वति	
शर्व	१	हिंसायां	शर्वति	
शल	१	चलने (त०) स्तृवौ	शलते पथिकः	ङ
शल	१	वेगे	शलति	
शल	१०	श्लाघे	शलयति	क ङ
शलभ	१	कत्थने	शलभते	ङ
शव	१	गतौ (त०) वि- कारे	शवति शवः शवं	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
शश	१	प्लुतगतौ	शशति	शशः
शष	१	वधे	शषति	
शस	१	हिंसायां	शसति वंसं हरिः	उ
शस	२	स्वप्ने	शसति	ल लु
शंस	१	आउपसर्गे इच्छा- यां	आशांसते मौक्षं मुनिः	इ व
शंस	१	स्तुतौ दुर्गतावपि	शंसति	उ
शस्त	२	स्वप्ने	शंस्तति	ल लु इ
शाख	१	व्याप्तौ	शाखति शाखा गगनं शाखा	क
शाड	१	क्षयायां	शाडते गुणिनं जनः	क क
शान	१	तेजने	शीशांसति (वा) शीशां- सते शूलं	व
शार	१०	दौर्बल्ये	शारयति	क त
शाल	१	कथने	शालते	क ल
शास	२	आउपसर्गे आशि- पि	आशास्ते	ल क व
शास	१	आउपसर्गे आशि- पि	आशास्ते	उ व
शास	२	अनुशिष्टौ	शास्ति	शासनं ल लु उ क

धातुः	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
शि	९	निशाने	शिनोति (वा) शिनुते गूलं	न व
शिक्ष	१	विद्योपादाने	शिक्षते शिक्षा	ङ
शिक्ष	१	गतौ	शिखति	
शिक्ष	१	गतौ	शिखाति	इ
शिष	१	आघ्राणे	शिष्यति कुसुमं कृष्णः शिषानं	इ
शिक्ष	२	अव्यक्ते शब्दे	शिक्षतेरसना शिक्षितं	ल
शिक्ष	१-१०	अव्यक्ते शब्दे	शिक्षते (वा) शिक्षयते	कि ङ
शिट	१	अनादरे	शेटति साधुं भंडः	ऋ
शिल	६	उंचे	शिलति ध्यानं विप्रः	श
शिष	१	हिंसायां	शेषति शेषः	
शिष	१०	परिशेपीकरणे	शेषयति धनं पुत्रायपिता शेषं	क
शिष	७	विशेषणे	विशिनष्टि गुणैर्विष्णुं	घनिल्लु औ
शी	२	स्वप्ने	शेते सुखं शयालुः (अथ वा) मंडले शयामि	ल ङञि
शीक	१-१०	आमर्षणे स्पर्श-से- के-दीप्तौ	शीकति (वा) शीकयति	कि
शीक	१	सेचने-स्पर्श	शीकते मेघो भूमि	ऋ ङ
शीभ	१	कथने	शीभते	ऋ ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध	
शील	१	समाधौ	शीलति	सुशीलः	जि
शील	१०	उपधारणे— अ भ्यासे—अतिशयने	शीलयति शीलं	नीलनिचोल	क त
शुक्	१	गतौ—स्पर्श	शुक्कति		
शुच	१	प्रतिघाते	शुचति	शुचना शोक	
शुच	१	शोके	शुचति	शोकः शुचि.	
शुच	४	पूतिभावे—विशरणे क्तेदे	शुच्यति (वा) तपसा विप्रः	शुच्यते	य न इरू ई
शुच्य	१	अभिषवे	शुच्यति		ई
शुठ	१	शोषणे	शुठति	शुठी	इ
शुठ	१०	शोषणे	शुठयति	शुठी जन. शुठी	क इ
शुठ	१	खोटने प्रतिघातेच	शुठति		
शुठ	१	खोटने	शुठति		इ
शुठ	१०	आलक्ष्ये	शुठयति		क
शुठ	१०	संस्कारगत्याः	शुठयति		क इ
शुध	४	शौचे	नर शुद्धयति	सत्संगात्	य ल औ
शुध	१	शुद्धौ	योग. शुधति	सत्त्वेन शुधः	
शुध	१-१०	शुद्धौ	शुधते (वा)	शुधयते	कि क
शुन	६	गतौ	शुनति	शुनकः	श
शुभ	१	भासने	शुभाति	न शुभाति स- भामध्ये	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	भक्तवन्ध.
शुभ	१	दीप्तौ	शोभते शोभा	लृ ङ
शुभ	६	शोभायां	शुभति विद्यया विप्रः	श
शुभ	६	दीप्तौ	शुभति	श प
शुभ	६	शोभायां	शुभते	श
शुभ	१	भासने	शुभति	
शुल्क	१०	भाषणे-संवाते-स- र्जने-वर्जने-अति स्पर्शने	शुल्कयति	क
शुल्ब	१०	माने-सर्गेच	शुल्बयति	क
शुल्ब	१०	सर्जने	शुल्बयति विश्वं विधाता शुल्बं	क
शुप	४	शोषणे	शुप्यन्ति मस्या नविनां शुवाहं शोषः (त०) शुष्कः का कं	य औ लृ
शूर	१०	विक्रान्तौ	शूरयते शूरः	क त हृ
शूर्	४	स्तेभे हिंसायांच	शूर्त्यते	य ङ ई
शूप	१०	माने	शूपयति शूपेण धान्यं नारी शूपेणखा	क
शूल	१	रुजायां	शूलति चोरं शूलं	
शूप	१	प्रसवे	शूपति	
शृष	१	शब्दकुत्सायां	शृद्धतेखरः	उ लृ ङ व

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
श्रण	१०	दाने	श्राणयति गां राजा— विश्राणनं	क
श्रथ	१-१०	बन्धने-मोक्षे-वधे	श्रथति (वा) श्रथयति- कुमुदैः केशं नारी	कि
श्रथ	१	बन्धे	श्रथति	म
श्रथ	१०	दौर्वल्ये	श्रथयति	क त
श्रथ	१०	प्रातिहर्षमोक्षयन्न- योः	श्रथयति	क
श्रथ	१	शैथिल्ये	श्रथते नर्विं	इ ङ
श्रंथ	१-१०	संदर्भे (त०) वधे	श्रंथति (वा) श्रंथयति	कि
श्रंथ	९	मोचन प्रातिहर्षयोः, संदर्भे	श्रथ्नातिमुमुक्षुं हरिःश्रथा- ति	ग
श्रंम	१	प्रमादे	श्रंमति	उ
श्रम	४	स्वेदे तपसि	श्राम्यति मार्गे पथिकः श्रमः श्रान्तः-ता-तं- श्रान्तिः	य म उ लि इर्
श्रा	२	स्वेदे	श्राति	ङ
श्रा	१	पाके	श्राति-श्रपयति यवागूं- भिक्षुः	
श्रा	२	पाके	श्राति शाकं	ळ म
श्रा	९	पाके	श्राणाति (वा) श्राणीते	ग न

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
शृघ	१	उद्वे	शर्द्धति (वा) शर्द्धते जेलन शिरः	उ ब
शृघ	१०	प्रहसने	शर्घयति मूर्खं बुधः	क उ
शृ	९	हिंसायां	शृणाति शीर्णः—णा—णं	ग गि
शैल	१	गतौ	शैलति शैलः	ऊ ऋ
शैव	१	सेवने	शैवते	ऊ ऋ
शै	१	गतौ पाके च	शायते	
शो	४	निशाने	श्यति शित.—ता—तं	य
शो	४	तनूकरणे	श्यति काष्ठं वर्द्धकिः	य
शोण	१	वर्णगत्योः	शोणति पद्मं शोण शोणितं	ऊ ऋ
शौट	१	गर्वे	शौटति मूर्खः	ऊ ऋ
शौड	१	गर्वे	शौडति	ऊ ऋ
श्रुन	१	क्षरणे	श्रोतति	इर
श्रुत	१	क्षरणे	श्रुचोतति जलं श्रुचोतः	इर
श्मील	१	निमेषणे	श्मीलति नेत्रं	
श्मील	१	निमेषणे	श्मीलति	
श्यै	१	गतौ	श्यायते	ल
श्रक	१	गतौ	श्रं कते	वृ क
श्रग	१	व्रजे	श्रंगति	इ
श्रण	१	दाने	श्रणति	स

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
श्रण	१०	दाने	श्राणयति गां राजा— विश्राणनं	क
श्रथ	१-१०	बंधने-मोक्षे—वधे	श्रथति (वा) श्रथयति- कुमुभैः केशं नारी	कि
श्रथ	१	बंधे	श्रथति	म
श्रथ	१०	दौर्वल्ये	श्रथयति	क त
श्रथ	१०	प्रातिहर्षमोक्षयन्न- योः	श्रथयति	क
श्रथ	१	शैथिल्ये	श्रथते नीर्वी	इ क
श्रंथ	१-१०	संदर्भे (त०) वधे	श्रंथति (वा) श्रंथयति	कि
श्रंथ	९	मोचन प्रातिहर्षयोः, संदर्भे	श्रथ्नातिमुमुक्षुं हरिःश्रथा ति	ग
श्रंम	१	प्रमादे	श्रंमति	उ
श्रम	४	स्वेदे तपसि	श्राम्यति मार्गे पथिकः श्रमः श्रान्तः—ता-तं— श्रान्तिः	य म उ नि इ
श्रा	२	स्वेदे	श्राति	क
श्रा	१	पाके	श्राति—श्रपयति यवागूं- भिक्षुः	
श्रा	२	पाके	श्राति शाकं	क म
श्रा	९	पाके	श्राणाति (वा) श्राणीते	ग न

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	गणबन्ध.
श्राम	१०	आमंत्रणे	श्रामयति विश्रामः	क त
श्रि	१	सिवने	श्रयति (वा) श्रयते	ज
			विष्णुं बुधः श्रयणं श्रायः	
			आश्रयः	
श्रिप	१	दाहे	श्रेपति	उ
श्री	१	तर्पणे	श्रयति (वा) श्रयते	ज
श्री	९	पचि	श्रीणाति (वा) श्रीणीते	ग ज
श्री	१०	तर्पणे	श्राययति (वा) श्रायय- ते देवतां हविषा यज्वा	क ज
श्रु	१	श्रवणे	श्रवत्यामघटाज्जलं	
श्रु	५	श्रवणे गतौ	शृणोति	न
श्रै	१	पाके	श्रायति दुग्धं	म
श्रै	१	स्वादे	श्रायति	
श्रोण	१	संधाते	श्रोणति श्रोणी श्रोणिः	कृ
श्लक	१	गतौ	श्लंकते	इ उ
श्लग	१	व्रजे	श्लंगति	इ
श्लथ	१	हिंसायां	श्लथति	
श्लथ	१०	दौर्बल्ये	श्लथयति	क त
श्लाख	१	व्याप्तौ	श्लाखति	कृ
श्लाघ	१	कृत्येन	श्लाघतेगुणिनं गुणी श्लाघा	कृ
श्लिष	१	दाहे	श्लेषति	उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
श्लिष	४	आलिंगने	श्लिष्यति सीता रामं	य लृ ङि औ
श्लिष	१०	श्लेषणे	श्लेषयति	क
श्लोक	१	संघाते, सर्जने, व- र्जने	श्लोकते कविः श्लोकः	क्व ड
श्लोण	१	संघाते	श्लोणति	क्व
श्वक	१	गतौ	श्वकते	इ ड
श्वग	१	व्रजे	श्वंगति	इ ड
श्वच	१	गत्यां	श्वचते	इ ड
श्वच	१	गत्यां	श्वचते	इ ड
श्वज	१	गतौ	श्वजते	इ ड
श्वज	१	गतौ	श्वजते	इ ड
श्वठ	१०	गतौ-असंस्कृतसं- स्कृते	श्वठयति	क
श्वठ	१०	गतौ असंस्कृत- संस्कृते	श्वठयति	क इ
श्वठ	१०	सम्यभाषणे दु- र्वाचि	श्वठयति	क त
श्वभ्र	१०	विले, गतौ, तंके	श्वभ्रयति	क
श्वर्त्त	१०	गत्यां	श्वर्त्तयति	क
श्वल, श्वल्ल	१	वेगे	श्वलति (वा) श्वल्लति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
श्वल्क	१०	भाषे	श्वल्कयति	क
श्वस	२	प्राणने	श्वसिति-विश्वास-श्व- सनं	ळ लु ष
श्वि	१	गतिवृद्धयोः	श्वयति धर्मेण राजा	टु औ ऐ इ र
श्वित	१	वर्णे	श्विततेगेहं-श्वेतः-ता-तं	लृ आ ङ
श्विद्	१	शौक्ल्ये	श्विन्दते ज्ञानेन जन;	इ ङ
ष्वग	१	संवरणे	सगति	म ए
ष्व	९	हिंसाया	सघ्नोति	न
ष्वच	१	समवाये	सचति साधुः	
ष्वच	१	सैचने	सैचते नलेन भूमि	ङ
ष्वच	१	गतौ	सचति	
ष्वञ	१	सगे	सजति तरुण्यां तरुणः आसक्त.-त;-तं.	औ जि
षट	१	अवयवे	सटति सटा	
षट्	१०	निकेतनहिंसाङ्- लदानेषु	सट्टयति	क
षण	१	सम्भक्तौ	सनति	
षण	<	दाने	सनोति (वा) सनुते- विप्राय गां	द न उ
षद्	१-१०	गतौ-आ उपसर्गे	आसादति (वा) आ- सादयति	कि

धातु.	गण.	सर्धं,	उदाहरण.	मनुष्य.
पठ्	१-६	विशरणगत्य वसाद्	पीडति विरहेण पांथः	श लृ न औ
		नेषु	विषादः	
पथ्	६	जिवांमायां	मथ्णोति	न
पन्	१	संमक्तौ	मनति	
पन	८	दाने	मनोति (वा) मनुते	द ब उ
पप	१	संबन्धे	मपति	
पंथ	१	सर्पणे	संबति	
पम	१	वैश्वदेये	ममति	
पम	१०	वैश्वदेये आन्तोन	ममयति	क न
		ने च		
पर्ज	१	अर्जने	मर्जति	मर्जः
पर्व	१	गर्वायां	मर्वति	
पर्व	१	सर्पणे हिमायां च	मर्वति	
पठ्	१	गतौ	मलति	मलितं
पम	२	मज्जे	ममि मिशो हरिः	ल लृ र
पन्ज	१	गतौ	मज्जति (वा) मज्जते	न उ
पन्	२	नाम्ने	माम्नि	ल लृ इ
पह	१-१०	सर्पणे	मरति (वा) माहयति	कि
			न प्प्राये नागः	
पह	१	सर्पणे	सापं न मारते राना	न र
पह	४	सर्पणे, पदयोर्	मरति	य

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
पाथ			(इति साध)	
पान्त्व	१०	सामयोगे	मान्त्वयति	क
पि	६	बंधने	सिनोति (त्र) सिनुते कृष्णं यशोदा विषय	न ज
पि	९	बंधने	सिनाति (वा) सिनाति चौर राजा	ग ज
पिच	६	सरणे	सिचति (वा) सिचने	श प औ न
पिट	१	अनादरे	सिगति साधु भइ	
पिध	१	गत्या	सेधति मयुरा कृष्ण	उ
पिध	१	शास्त्रे मागल्ये च	सेधति शिष्यगुरु सिद्धो य मुनि	ऊ
पिध	४	मराद्धौ	मिध्यति मुनिर्योगिन	य उँ औँ
पिम	१	दीप्तौ हिंसने	सिभति	उ
पिल	६	उछे	मिगति	श
पिव	४	तनुसंताने	सोव्यति कथा योगी-सोवन	य उ
पु	६	अभिषेके मन्यने च	सुनोति (वा) सुनुते. सोमलता विप्र.	न व
पु	१	प्रसवे गतौ	प्रसवति पुत्रनारी-प्रसवः	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पु	२	प्रसवे, ऐश्वर्ये	प्रसोति पुत्रं प्रसवः प्र-	ल
पुष्ट	१०	तोच्छे, अनादरे	सुष्टयति	क
पुंभ	६	दीप्ता हिंसने	सुंभति	
पुर	६	धैर्ययोः	सुरति	श
पृह	४	वृत्ता, शक्तौन	सृष्टति	य ल्
पृ	२	प्राणि गर्भविमो- चने	प्रसृते देवकी कृष्णं	ल उ ओ
पृ	४	प्रसवे	सृष्टते सुखं धर्मः	य उ ओ
पृ	६	क्षेपे	सृष्टति	श
पृह	१	क्षणने निगमे	सृष्टेन चोरं राजा सृष्टः	
पृह	१०	आश्रुतिहत्याः नि- रामिन	सृष्टयति	क
पृ	४	रत्नेन—हिंसने	सृष्टतेन	य उ इ
पृ	१	अनादरे	सृष्टति	
पृथक् वा सुप्ये	१	दृष्ट्यायै	सृष्टयति (वा) सृष्टयति	
पृ	१	प्रसवे	सृष्टति पुत्रे मातृया	
पृ	१	प्रसवे	सृष्टते	ल क
पृ	१	नाशक्याः	सृष्टति	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पेव	१	सेवने	नीचं समृद्धमपि सेवति (वा) सेवते नीचः	ऋ ङ ज
पै	१	क्षये	सायति	
पो	४	अन्तकरणे	रयति कालो लोकं	य
एक	१	प्रतिघाते	स्तकति	म
ष्टुग	१-१०	संवरणे	स्तगति (वा) स्तगयति	ए मि
ष्टन	१	शब्दे	स्तनति	मि
ष्टभ	१	प्रतिबन्धे	स्तंभने पापात्पुत्रं पिता स्तंभः	इ ङ
ष्टम	१	वेकृव्ये	स्तमति	
ष्टम	१०	वेकृव्ये	स्तमयति	क त
ष्टल	१	स्थितौ	स्थलति	ज
ष्टृक्ष	१	गतौ	स्तृक्षति	
ष्टृह	६	वधे	स्तृहति	श ऊ
ष्टृह	६	वधे	स्तृहति	श ऊ
ष्टिघ	५	आस्कंदने	स्तिघ्रुते पथिकं वृष्टिः	न ङ
ष्टिप	१	क्षरणे	स्तेपते जलं घटात्	ङ ऋ
ष्टिम	४	आद्री भावे	स्तिम्यति तैलेन देहः	य
ष्टीव	१	निरसने	ष्टीवति	उ
ष्टिमि	४	आद्री भावे	स्तीम्यति तैलेन देहः	य

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
ष्टु	२	स्तुतौ	स्तौवि (वा) स्तुते स्ववः स्तुतिः	ज ल
ष्टुच	१	प्रसदे	स्ताचते ज्ञानेन मनः	ङ
ष्टुप	१०	उच्छ्राये	स्तोपयति	क
ष्टुभ	१	स्तोभे	स्तोभते नीचो विद्यया स्तोभते वृद्धशीतम्	
ष्टूप	४	उच्छ्राये	स्तूप्याति	य-इर्
ष्टेप	१	क्षरणे	स्तेपते जलं घटात्	ङ ऋ
ष्टेव	१	निरसने	ष्टेवति	
ष्टै	१	वेष्टे	स्तायति	
ष्टैच	१	वेष्टणे	स्त्यायति	
ष्टैच	१	शब्दसंघाते	ष्टैचयति लोकः	
ष्टग	१	संवरणे	स्थगति	म ए
ष्टस	४	निवासे	स्थयति	य लृ मि उ
ष्टा	१	गतिनिवृत्तौ	तिष्ठतिविरलेमुनिः— स्थानं	ञि
ष्टिव	१	निरसने	ष्टेवति	
ष्टिव	४	निरसने	ष्टिव्यति भुक्तमन्नंवालकः	य उ
ष्टाव	१	निरसने	ष्टावति	
ष्णस	४	निरसने	स्नस्यति	उ य
ष्णा	२	शौचे	स्नाति गंगायां स्नानं	ल

धातु.	संज्ञ.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
ष्णिह	४	प्रीतौ	स्त्रिय ति शिष्ये गुरुः स्नहः	य
ष्णिह	१०	स्नेहने	स्नेहयति	क
ष्णु	२	प्रस्रयणे	स्त्रोति जलं घटात्	ल
ष्णुस	४	भक्षे, निवासेच	स्नम्यति	उ य
ष्णुह	४	उद्गारे	स्नुवति	य उ ल
ष्मि	१	दृग्दसने	स्मयते स्मयः स्मित	ड
ष्मि	१०	अनादरे	स्मययते	ड
ष्वक्क	१	मर्षणे	स्वकते	ड
ष्वंज	१	परिष्वगे	स्वजेत पुत्र पिता परि- ष्वजति पात्राणि मध्यम यादुनंदन	औ जि ड
ष्वद	१०	स्वादे उदे	स्वदयति	
ष्वद	१	आम्वादे प्रीतौलि हेच	स्वदते	ड
ष्वप	२	शये	स्वपति सिधौ हरि स्वाप स्वप्न.	ल लु, नि, घ औ
ष्वर्त्त	१०	गत्यातकयो	स्वर्त्तयति	क
ष्विद	१	भोचने, मोहे स्नेहे	स्वेदते पापं तपसा जन	ड जि आ लृ
ष्विद	४	भात्रप्ररक्षणे	स्विद्यति (वा) स्विद्यते धर्मण प्रस्वेद स्वेद	य ज ल आ औ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
संकेत	१०	आमंत्रणे	संकेतयति रतये कामिनी कामुकं	क
सग	१	संवरणे	सगति	म ए
संग्राम	१०	युद्धे	संग्रामयते—संग्रामः	क त ड
सव	५	हिंसायां	सन्नोति	न
संज	१	सर्पणे	संजति	
सट	१०	प्रकाशने	सटयति	क त
सट्ट	१०	हिंसायां	सट्टयति	क
सठ, स्वठ	१०	—————	(इति शठ—श्वठ	
सत्र	१०	सन्तानक्रियायां— संबन्धे—सन्ततौ	सत्रयते पथिकेभ्यो धार्मि- कः, सत्री, सत्रं	क त ड
सप	१	संबन्धे	सपति	
संवर	११	संभरणे—लज्जायां च	संवर्यति गुरुदर्शनाद्भवः	ट
सभाज	१०	प्रीतिसेवायां दर्श- ने च	सभाजयति गुरुं शिष्यः स- भाजना	क त
संभूयस्	११	प्रभूतभावे	संभूयस्यति पयोवारिणा	ट
सम्ब	१	सर्पणे	सम्बति	
सम्ब	१०	सम्बन्धे	सम्बयति	क
सर्ज	१	अर्जने	सर्जति	
सर्व	१	सर्पणे	सर्वति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
सह	४	शक्तौ	सह्यति भूवहने वामुकिः (इतिपह)	य
साट	१०	प्रकाशने	साटयति	क त
सांत्व	१०	सामप्रयोगे	सांत्वयति शोकाकुलं- ज्ञानी	क त
साध	४	संसिद्धौ	साध्यति ज्ञानेन यतिः सिद्धः	य उ न औ
साध	५	संसिद्धौ	साधोति योगेन मुनिः	
साम	१०	सांत्वने, प्रयाणे	सामयति बालं पयसापिता सामः	क त क क क त
साम्ब	१०	सम्बन्धे	साम्बयति	क
सार	१०	दौर्बल्ये	सारयति सारः	क त
सिच	६	क्षरणे	सिंचति (वा) सिंचते जलेन गेहं विलासी-सेकः- अभिषेकः	श प ज औ
सिभ	१	हिंसायां	सेभति कुमन्त्री राजानं	उ ड ऋ
सीक	१	मेके गत्यां	सीकते	
सीक	१-१०	आमर्षे	सीकाति (वा) सीकय- यति	कि
सु	१	गतां ऐश्वर्ये प्रसवे	सुवति	न ज
सु	५	संधाक्रेदपीडामंधेषु	सुनोति (वा) सुनुते	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
सुख	१०	तत्क्रियायां	सुखयति	क त
सुख	११	तत्क्रियायां	सुखयति धनी संसारे	ट
सुदृ	१०	अनादरे	सुदृयति	क
सुम्भ	१	द्युतौ हिंसायां	सुम्भति	
सुर	६	ऐश्वर्य्य दीप्तयोः	सुरति राजा सुरः असुरः (इतिपू)	श
सू				
सूक्ष	१	अनादरे आदरेच	सूक्षति	
सूच	१०	पेशून्ये	सूचयति परदोषं खलः सूचकः	क त
सूत्र	१०	अवमोचने वेष्टनेच	सूत्रयति सूत्रणे कलशं पूरोधाः सूत्रं	क त
सूर	४	हिंसास्तंभनयोः	सूर्यते रविविव योगी	ड य
सूर्क्ष्य	१	अनादरे ईर्ष्याया	सूर्क्ष्यति	
सूप	१	प्रसवे	सूपति	
सृ	१	गतौ	सरति तीर्थं मुनिः	
सृ	३	गतौ	समर्त्ति .	लि र
सृ	१०	स्तृतां	सरयति	क
सृज	६	विमर्गं	सृजति विश्वंवेधा	श ओ
सृज	४	विमर्गं—उत्पादने	संसृज्यते पिता पुत्रं सृ- ज्यते विश्वंविधाता सृष्टिः	
सृष	१	गतौ	सृषति सरः	ल ओ

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण	अनुबन्ध
सृभ	१	हिते	सर्भात्	उ
सेरु	१	गते	सेकते	ड ऋ
सेल	१	चालगत्यो	सलति	ऋ
सेव	१	सेवने	सेवते सेवा	ऋ ड
से	१	क्षित्या	सायति	
स्कद	१	उत्प्लुत्यगमने, आ पवेउद्धृते	स्कन्दते वानर शाखा	इ ड
स्कद	१	शोषणं गतो	स्कदति हिमेन तरु	इर् आ
म्बम	१	प्रतिबधे	म्बम्भते	इ ड
स्कु	२	आवरणे	स्कुनाति कर्ण—बाणरे उज्जुन	ग अ ड
स्कुद	१	आप्रवणे	स्कुदते शाखा मृगोवृथा दृक्षातर	इ वि
स्वद	१	स्वदने विदारे	स्वदते मूलरू पाथ	ड म प
स्वल	१	चथचलयो	स्वलति	मि
स्तक	१	प्रतिधाते	स्तकति	म
स्तन	१	शब्दे	स्तनति	मि
स्तन	१०	मयशब्दे	स्तनयति घन	क त
स्तम	१	स्तम्भे	स्तम्भते	इ ड
स्तूप	१०	समुच्चयै	स्तूपयति गोधूम—वैश्य स्तूप	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
स्तृप	४	समुच्छ्राये	स्तृप्यति धान्यं—स्तृपः	य इर्
स्तृ	९	आच्छादने (त.) प्रीतिरक्षाप्राणनेषु	स्तृणाति (वा) स्तृणु- तेया ससा देहं विस्तृतः—ता—तं	न ज
स्तृ	९	आच्छादने	स्तृणानि (वा) स्तृणी- ते गगनं मेघः स्तृणीः णा—णं	ग ज गि
स्तृक्ष	१	गतौ	स्तृक्षति	
स्तृह	६	वधे	स्तृहति	श ऊ
स्तृ	९	छादने—वधेच	स्तृणाति	ग गि
स्तृ	६	वधे	स्तृहति	श ऊ
स्तेन	१०	चौर्ये	स्तेनयति धनं स्तेनः	क त
स्तेप	१०	क्षेपे	स्तेपयति	क
स्त्ये	१	शब्दसंवाते	स्त्यायति लोकः	
स्तोम	१०	श्लाघायां	स्तोमयति स्तोमः	क त
स्थग	१	संवरणे	स्थगति	म ए
स्थल	१	संचयं—स्थाने	स्थलति धर्मं मुनिः स्थल स्थली	ज
स्थूल	१०	परिवृंहणे	स्थूलयति स्थूलः ला लं	क त ड
स्त्रिह	१०		(इति णिह)	क
स्पद	१	किञ्चिच्चलने	स्पदतिवानेन	इ

धातु.	गण	अर्थ	उदाहरण.	अनुबन्ध.
स्पर्द्ध	१	परपराभवेच्छायां संघर्षे	स्पर्द्धते कर्णोर्जुनं स्पर्द्धति	ड
स्पर्श	१०	ग्रहणे लेपे	स्पर्शयते	क ड
स्पर्श	१	बाधने ग्रंथेच	स्पर्शति (वा) स्पर्शते स्पर्शः	ञ
स्पृ	९	प्रीतिरक्षाप्राणनेषु	स्पृणोति	म
स्पृश	६	संस्पर्शे	स्पृशति पुत्रं पिता	श ओ
स्पृह	१०	ईप्सायां	स्पृहयति गंगायै मुनिः स्पृहा	क त
स्फट	१	भेदे	स्फटति	इ
स्फट	१०	भेदे	स्फटयति	क
स्फर	६	स्फूर्त्तौ चले	स्फरति	
स्फल	६	स्फूर्त्तौ-चाले.	स्फलति	श
स्फाय	१	वृद्धौ	स्फायते स्फायः स्फा- ति (वा) स्फायति स्फातः स्फातवान्	ई अ
स्फिट	१०	वृत्त्यां-अनादरेहिते	स्फिटयति	
स्फुट	१	विकसने	स्फोटते (वा) स्फोटति कुसुमं	ञ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
स्फिट्	१०	हिंसायां	स्फिटयति नकुलः सर्प वने	क
स्फुट	६	विक्रशने	स्फुटति पुष्पं स्फुट टा टं	श शि
स्फुट	१	विसरणे	स्फोटति पुष्पं	इरू
स्फुट	१०	विसरणे	स्फोटयति	क त
स्फुट	१०	भेदे	स्फोटयति	क
स्फुट	१०	परिहासे	स्फुटयति भगिनी पतिं- श्यालः	क इ
स्फुट्	१०	अनादरे	स्फुटयति	क
स्फुट	१	विक्रशने	स्फुटयति	इ
		विशरणेच		
स्फुड	६	संवृत्तौ	स्फुडति	श
स्फुड	१०	परिहासे अनृतभा- षणेच	स्फुडति (वा) स्फुड- यति	इ कि
स्फुर्	६	स्फुरणे—संचलनेच	स्फुरतिनेत्रं	श शि
स्फुञ्	१	विस्मृतौ	स्फुञ्जति विष्णुं भोगी	आ
स्फुर्ज	१	वज्रनिर्घोषे	स्फुर्जति वज्रः	टु औ आ
स्फुल्	६	स्फुर्त्तौ चये चले	स्फुल्जति	श शि
स्मि	१	ईषद्भासे	स्मयते स्मयः स्मितं	ड
स्मि	१०	अनादरे	स्मययति	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
स्मिष्ट	१०	अनादरे स्नेहे	स्मेष्टयति	क
स्मील	१	निमेषणे	स्मीलति	
स्मृ	१	आध्ययने	स्मरति सपितृगृहं	
स्मृ	१	चिताया	स्मरति अपम्मार.	म
स्पद्	१	किञ्चिच्चलने	स्पन्दतेलांचने	इ ड
स्पन्द	१	स्रवणे	स्पन्दते जल कलशात्	उ व ड लृ
स्यम	६	वनने	स्यमति	प ण उ
स्यभ	१०	वितर्के	स्यामयति (वा) म्याम यते विप्र	क ज
स्यम	१०	वाने	स्यमयति	क त
स्यल	१०	वितर्के	स्यालयति	क
स्रक	१	गत्या	स्रकते	क इ
स्रह	१	विश्वासे	स्रहते	ड उ लृ औ
स्रभ	१	विश्वासे	स्रभते मित्रेनर	ड उ लृ
स्रभ	१	प्रमादे	स्रभते विद्यायै मूर्ख	ड उ
स्रंस	१	प्रमादे	स्रंसते स्वार्थे लोक	ड उ
स्रस	१	भवस्रसने	स्रंसते वृक्षात्पत्र स्रस्त ता त	उ ड लृ
स्त्रिभ	१	हिंसे	स्त्रिभति	उ
स्त्रिम्भ	१	हिंसे	स्त्रिम्भति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
त्वि	४	गतिशोपणयोः	स्त्रीव्यति रविः पयः स्त्री- व्यतियात्रायै गंगा सि- ष्णामुः	उ य
चु	१	श्रुतौ—गतौ	स्त्रवति	
स्त्रक	१	गतौ	स्त्रकते	ऋ ङ
स्त्रै	१	पाके	स्त्रायति दुग्धं	
स्त्रिट	१	स्त्रेहे	स्त्रेटति	
स्वग	१	मपणे	स्वंगति	इ
स्वञ	१	आलिङ्गने	स्वञते	ङ आं व
स्वद्	१	आस्वाद्ने	स्वदते	ङ
स्वद्	१०	आस्वाद्ने	(आ उपसर्गं) आस्वाद- यति पयोवतिः	क
स्वन	१	शब्दे	स्वनति	ण
स्वन	१०	शब्दे	स्वनयति	क त
स्वन	१	शब्दे	स्वनयति (वा) स्वान- यति भेरीं नटः	मि
स्वन	१	अवतंसने	स्वनयति केशं कुंकुमेने नारी	क
स्वव	१०	आक्षेपे	स्ववयत्यर्जुनं कर्णः	क त
स्वर	१०	आक्षेपे	स्वरयति	क त
स्वर्द	१	आस्वाद्ने	स्वर्दते गुडं बालः	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
स्वर्त्त	१०	गतौ आतके	स्वर्त्तयते	क
स्वस्क	१	गत्या	स्वस्कते	ङ
स्वाद	१	आस्वादे	स्वादते स्वादु	
स्वृ	१	शब्दोपतापयो	स्वरति	
स्वृ	९	हिंसने	स्वृणाति (वा) स्वृणीते	ग गि ज
स्वेक	१	गत्या	स्वेकते	ङ ऋ
हट	१	त्विष्टि	हटति चद्र. हाटक	
हट	१	बलात्कारे (वा) फीलमन्धे, धुतो	हटति राजा	
हद	१	पुरीषोत्सर्गे	हदते रोगी	ङ
हन	२	हिंसागत्यो	हन्ति हनति अहनत् जवान कंसकिलवासुदेवः	ल
हम्म	१	गतौ	हम्मति	
हय	१	गतौ क्लमे	हयति हयः हायनं	
हर्ष्य	१	क्लमे-गतौ	हर्ष्यति	
हल	१	विलेखे	हलति	
हस	१	हसने	हसति हसः हासः हास्यं	ए
हा	३	गतौ	जिहीते	लि ड ओ
हा	३	त्यागे	जहाति गेहं यतिः	लि क ओ
हि	९	गतौ वर्द्धने	हिनोति	न
हिक	१	अव्यक्ते शब्दे	हिकति (वा) हिकते	ज

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
हिक्र	१०	हिंसायां	हिक्रयते.	हिक्रा क ड
हिड	१	अनादर-गतौ	हिडते	ऋ ड इ
हिढ	१	आक्रोशे	हेढति चोर भयान्नरः	
हिढ	९	भूतप्रादुर्भावे	हेढ्णाति	ग
हिल	६	हावकरणे	हिलति	श
हिल्लोल	१०	दोलने	हिल्लोलयति	क त
हिव	१	प्रीतौ	हिवति	इ
हिस	१-१०	हिंसायां	हिसति (वा) हिंसयति	कि इ
हिस	७	हिंसायां	हिनस्तिरिपुं हिंसा	घ इ
हु	३	दानादनयोः प्रीण- नेच	जुहोति पायसं विष्णवे जटाधरः सन्जुहुधीहपा- वकं जुहोति सवर्ष- लयाग्निः	लि
हुड	१	संघाते, वर्णेच	हुडते	इ ड
हुड	६	संघाते मन्त्रे	हुडति धान्यं	श शि
हुडे	१	गतौ	होडति	ऋ
हुल	१	गतौ छदि	होलति	ज
हूर्छ	१	कौटिल्ये	हूर्छति मलः	आ
हूड	१	गतौ	हूडते	ऋ ड
हृ	१	हरणे	हरति (वा) हरते गंधं वायुः	व

धातु	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
हृ	३	प्रसह्यकरणे	महर्त्ति परनारीं दुष्टः	लि र
हृप	१	अलोकै	हृपति खलः साधुं	उ मि
हृप	४	तुष्टौ	हृपयति हृष्ट. टा टं हृष्टिः	य उ मि इ
हेट	१	बाध्यायां	हेटाति	
हेठ	१	बाध्यायां	हेठतेरिपुं बली हेठः	ड ऋ
हेड	१	वेष्टने	हेडाति	म
हेड	१	अनादरे, गतौ	हेडते	ऋ ड
हेप	१	गतौ	हेपते	ऋ ड
हेप	१	अव्यक्तेशब्दे	हेपते हयः हेपा	ड
होड	१	अनादरे, गतौ	होडते	ऋ ड
होड	१	गतौ	होडते	ऋ ड
हु	२	अपनयने	हुतेदुर्जनं सुजनः	ल ड
ह्रल	१	चलने	ह्रलनि	म
ह्रग	१	संवरणे	ह्रगति	म ऐ
ह्रणी	११	रोषे लज्जायांच	ह्रणीयतेकलहांतरिताप- रासक्ताय	ड ट
ह्रेप	१	गतौ (अथवा) हय शब्दे	ह्रेपते ह्रेपति	ऋ ड
ह्रस	१	शब्दे	ह्रसति	
ह्राद	१	अव्यक्तेशब्दे	ह्रादतेमेघः	ड
ह्री	३	लज्जायां	जिह्रेतियवनसेवयाद्विजः	लि

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
ह्रीछि	१	लज्जायां	ह्रीछति	
ह्रुडि	१	गतौ	ह्रुडते	ऋ ङ
ह्रूडि	१	गतौ	ह्रूडते	ऋ ङ
ह्रीडि	१	गतौ	ह्रीडते	ऋ ङ
लहग	१	संवरणे	लहगति	म ए
लहप	१०	व्यक्तायांवाचि	लहपयति संस्कृतं मनीषी	क
लहस	१	शब्दे	लहसति	
लहाद	१	सुखे स्वने	लहादते पिता पुत्रेण आ- लहादः	ङ
ह्वल	१	चलने	ह्वलति ह्वलयति	म
ह्वृ	१	कौटिल्ये संवरणेच	ह्वरति खलं:	
ह्वे	१	स्पर्द्धायां-वाचि	ह्वयति (वा) ह्वेयते चाणू- रः कृष्णं आह्वयते पुत्रं पिता आह्वानं (सूत्राणि)	ञ ए
उड	१	संहतौ	ओडति	
उद्	१	आघाते	उद्दति	
उर	१	गतौ	ओरति	
उल	१	दोहे	ओलति	
ऋश	१	गतिस्मृत्योः	अर्शति	

धातु.	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कज	१	रुहे	कंजति	इ
कप	१	चलने	कपति	
कर्क	१	हासे	कर्कति	
कुठ	१	छिदि	कोठति	
कुत	१	आस्तृतौ	कोतति	
क्षद	१	शुभे-शोभे	क्षन्दति	इ
क्षप	१	संवृतौ	क्षपति	
क्षुप	१	स्वादे	क्षोपति	
चक	१	भ्रांतौ	चंकति	इ
डिम	१	हिसे	डेमति	
तद्र	१	सादे-मोहे	तंद्रति	तंद्री इ
तल	१	गतौ	तलति	
धम	१	ध्वाने	धमति	
नट	१	साधे	नटति	
नड	१	घाते	नडति	
नूप	१	हिंसने	नूपति	
पज	१	रोधे	पंजति	इ
पीय	१	प्रीणने	पीयति	
पुत्त	१	गतौ	पुत्तति	
भिष	१	रुग्जये	भेषति	भिषजः भेषजं
मज	१	ध्वनौ	मंजति	इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मट	१	सादे	भटति	
युष	१	भजने	योषति योषित्	
रिफ	१	कुत्सने	रेफति रेफः फा फं	र
रश	१	स्वने	रशति	
लत	१	वाते	लतति	
लुल	१	विमर्द्धे	लोलति	
वट	१	स्तेये	वटति	
वड	१	आरोहणे	वडति	
विभ	१	खे	वेभते	
शल्ल	१	गतौ	शल्लति	
शिक	१	सेचने	सेकति सिकता	
सातशात	१०	सुखे	सातयति शातयति	
सुद	१	शोभे	सुन्दति सुन्दरः रा, सं	इ
स्कंभ	५-९	रोधने	स्कभ्रोति (वा) स्क- भ्राति	न ग उ
स्कुंभ	५-९	रोधने	स्कुभ्रोति (वा) स्कु- भ्राति	न ग उ
स्तंभ	५-९	रोधने	स्तभ्रोति (वा) स्तभ्राति	न ग उ
स्तुभ	५-९	रोधने	स्तुभ्रोति (वा) स्तु- भ्राति	न ग उ

अनुबन्धसंकेतार्थसूचना.

अनुबन्ध.	अर्थ.	कौमुदी		सारस्वत.	
		वृ.	प्र.	वृ.	प्र.
अ	अइतिअकारउच्चारणार्थः	२	१	२	१
आ	आकारेत्त्वंप्रफुल्लतइत्यादौ आदितश्चेति इडभावार्थम्	३	२	३	२
इ	इदित्त्वं नंदतीत्यादौ इदितोनुम् धा- तोरितिनुमर्थम्	२	१	२	१
इर्	इरित्त्वं अच्युतत् अच्योतीत् इत्या- दौ इरितोवेति च्छ्रइविकल्पार्थम्	२	१	२	१
ई	ईदित्त्वं उन्नत्तः इत्यादौ श्वीदितो- निष्ठायां इतिइण् निषेधार्थम्	३	२	३	२
उ	उदित्त्वं शमित्वा शांत्वा इत्यादौ उ- दितोवा इतिइड् विकल्पार्थम्	३	८	३	९
ऊ	ऊदित्त्वं स्वरति सूति सूयति धृञ्- दितोवा इति सेद्धा सेधिता इत्यादौ इड्विकल्पार्थम्	२	१	२	१
ऋ	ऋदित्त्वं अलुलोकत् इत्यादौ नागो- पिशास्वृदितामिति ऋह्रस्वनिषेधार्थम्	२	१०	२	२७
ॠ	ॠइतिण्यंते ऋह्रस्व विकल्प सूचकः संकेतः	२	१०	२	२६
ऌ	ऌदित्त्वं अगमत् असद्त् इत्यादौ पुषादिद्युताद्युदितः परस्मैपदेषु इति श्छ्रइर्थम्	२	१	२	१

अनुबन्धसंकेतार्थसूचना.

अनुबन्ध.	अर्थ.	कौमुदी.		सारस्वत.	
		वृ.	प्र.	वृ.	प्र.
लृङ्	लृङिति घृतादि गण सूचनार्थः संकेतः	२	१	२	२
ए	एदित्त्वं अपथीत् अमथीत् इत्यादौ ह्यंतक्षणश्चसजागृणिश्च्येदितां इति वृद्धचभावार्थ	२	१	२	१
ऐ	ऐकारो म्वादिगणे यजादित्वात्संप्र- सारण सूचनार्थः संकेतः	२	१	२	१
ओ	ओदित्वं पीन इत्यादौ ओदितश्चेति- निष्ठानत्वार्थम्	३	२	३	२
औ	औकार आर्द्धधातुकेऽणनिषेधसूच- नार्थः	२	१	२	१
क	क इति अंतिमस्य चुरादिगणस्य संकेतः	२	१०	२	२६
कि	कि इति प्रथमदशमगणयोः प्रयोग- विकल्पसूचनार्थः संकेतः	२	१०	२	२६
क्ष	क्ष इति अक्षादिगणसंकेतः	२	२	२	४
ग	ग इति त्रयादि गण सूचकः संकेतः	२	९	२	२३
गि	गि इति नवम गण मध्येष्वादि गण- सूचकः संकेतः	२	९	२	२३
घ	घ इति अदादिगणांतःपातिरुदादि गणसूचकः संकेतः	२	२	२	४
ङ	ङित्त्वमनुदात्तङित् इत्यात्मने पदार्थम्	२	१	२	१

अनुबन्धसंकेतार्थसूचना.

अनुबन्ध.	अर्थ.	कौशुदी.		सारस्वत.	
		वृ.	प्र.	वृ.	प्र.
ज	ज इतिभ्वादिसंज्ञकप्रथमगणांतःपाति- ज्वलादिगणसूचकः संकेतः	२	१	०	०
झ	ञित्त्वंऊर्णेति ऊर्णुते इत्यादौस्वरित- ञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले इत्युभ- यपदार्थम्	२	१	२	१
ञि	ञीत्त्वं इद्ध इत्यादौ जीतःक्त इति वर्तमानेक्त प्रत्ययार्थम्	३	२	३	२
ट	ट इति षोडशप्रकरणरूपक कंड्वा- दिगणसूचनार्थः संकेतः	२	१६	०	०
ठ	ट्टित्त्वंवेपथु रित्यादौ ट्टितोऽथुच् इति अथुच् प्रत्ययार्थम्	३	८	३	६
ड	डित्त्वं पक्त्रिममित्यादौडितः क्त्रिरि- ति प्रत्ययार्थं केचित् त्रिमक् इति वदंति	३	८	३	६
ण	ण इतिभ्वादिसंज्ञकप्रथमगणांतःपाति- फणादिगण सूचकः संकेतः	२	१	२	१
त	त इति अंते अकारलोपाभाव सूचकः संकेतः	२	१०	२	२६
द	द इतितनादिसंज्ञकअष्टमगण सूचकः संकेतः	२	८	२	१९

अनुबन्धसंकेतार्थसूचना.

अनुबन्ध	अर्थ.	कौमुदी.		सारस्वत.	
		वृ.	प्र.	वृ.	प्र.
ध	ध इति रुधादिसंज्ञकसप्तमगण सूचकः संकेतः	२	७	२	१६
न	न इति स्वादिसंज्ञकपंचमगणसूचकः संकेतः	२	९	२	१३
प	प इतितुदादिसंज्ञकषष्ठगणांतःपातिमुचादिगणसूचकः संकेतः	२	६	२	२०
भ	भ इति दिवादिसंज्ञकचतुर्थगणांतःपातिशमादिगणसूचकः संकेतः	२	४	२	१०
म	म इति भ्वादि संज्ञकप्रथमगणांतःपातिघटादिगणसूचकः संकेतः	२	१	२	२
मि	मि इति घटादिगणस्थत्वे विकल्पसूचकः संकेतः	२	१	०	०
य	य इति दिवादिसंज्ञकचतुर्थगण सूचकः संकेतः	२	४	२	१०
र	र इति श्रुति मात्रस्थ धातुसूचकः संकेतः	२	२	०	०
ल	ल इति अदादिसंज्ञकद्वितीयगणसूचकः संकेतः	२	२	२	४
लि	लि इति व्हादिगणसूचकः संकेतः	२	३	२	७
लु	लु इति अदादिसंज्ञकद्वितीय गणांतःपातिस्वपादिगणसूचकः संकेतः	२	२	२	४

अनुबन्धसंकेतार्थसूचना.

अनुबन्ध.	अर्थ.	कौमुदी.		सारस्वत.	
		वृ.	प्र.	वृ.	प्र.
व	व इति भ्वादिसंज्ञक प्रथम गणांतः पातिवृतादिगण सूचकः संकेतः	२	१	२	२
श	श इति तुदादिगणसूचकः संकेतः	२	६	२	२०
शि	शि इति तुदादिसंज्ञक षष्ठ गणांत पातिकुटादिगणसूचकः संकेतः	२	६	२	२१
ष	पिस्त्रं जरा त्रपा इत्यादौ स्वधिकारे पिङ्गिदादिभ्योऽङ् इति अङ् प्रत्य- यार्थम्	३	८	३	८

यत्र (ङं) कारोऽथवा (ञ) कारोऽनुबन्धो नागच्छेत्तत्र परस्मैपदं विज्ञेयं
यत्रगणसूचकोऽक्षरो नागच्छेत्तत्र भ्वादिगणो विज्ञेयः ये वकारवत्सु
धातुषु न ज्ञायन्ते ते वकारवत्सु विज्ञेयाः ये षकार वत्सु न ज्ञायन्ते ते
सकारवत्सु विज्ञेयाः

एतद्धातुमञ्जर्याख्यग्रन्थस्थान्ते सौत्रधातवोविज्ञेयाः

गणसंकेतार्थसूचना.

१ भ्वादि.	२ अदादि	७ रुधादि.	८ तनादि.
३ जुहोत्यादि	४ दिवादि.	९ क्रयादि.	१० चुरादि.
५ स्वादि.	६ तुदादि.	११ कंड्वादि.	

शुद्धिपत्रम्.

—*७७*—

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१	८	अङ्कति	अङ्गति
२	२	गतिनिन्दारभजवेषु	गतिनिन्दारंभजवेषु
२	२	अञ्चति	अञ्चति
॥	४	अञ्ज	अञ्च
॥	१७	अड	अह
॥	॥	अड्नोति	अन्होति
६	११	घा	न्धा
॥	१४	अम्भते	अम्भते
४	६	याचकोऽर्थ	याचकोऽर्थ
॥	७	अर्द	अर्द
॥	८	अर्दति (वा) अर्दते	अर्दति(वा)अर्दते
॥	९	अर्दयति अर्दते	अर्दयति अर्दते
॥	॥	अर्द	अर्द
॥	११	अर्दति	अर्दति
॥	१२	नार्दति	नार्दति
॥	९	अर्द	अर्द

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११	१०	अब्बं	अर्बं
११	११	अर्व्वं	अर्वं
११	१३	अर्दयति (वा) अर्द- यते	अर्दयति(वा)अर्दयते
११	१४	अर्ब्वति	अर्बति
११	१५	अर्व्वति	अर्वति
९	२	केशं	केशान्
११	६	अंशः	अंश
११	९	अंश	अंशः
११	१०	दीप्तिगतिग्रहेषु	दीप्तिगतिग्रहेषु
६	१०	इच्छायां	इच्छाया
११	१४	अधिउपसर्गे	अधिउपसर्गे
७	१	इध	इन्ध
११	३	इर्प्यायां	ईर्प्यायां
११	४	इरज	इरज्
७	४	इर्प्यायां	ईर्प्यायां
८	७	हन्तति	ईन्तति
९	४		
११	११	उच्छे	उच्छे
११	११	उच्छति	उच्छति
११	९	निवासे	निवासे

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	वशुद्ध.	शुद्ध.
"	"	उच्छति	उच्छति
"	९	उदकः	उदकं
१०	१	आच्छादने	आच्छादने
"	२	उर्दते स्वर्णं	ऊर्दतेस्वर्णं
"	६	उंहति	ओहति
"	१३	आछादने	आच्छादने
११	२	ऋक्षणोति	ऋक्षिगोति
"	३	ऋच	ऋच
"	"	ऋचति	ऋक् चति ऋक्
"	४	ऋच्छ	ऋच्छ
"	७	ऋच्छति	ऋच्छति
"	८	उर्जने	उर्जाजने
"	९	भ्रजे	भर्जने
"	"	ऋजते	ऋज्जते
"	१६	घा घं	द्वा द्वं
"	१८	घा घं	द्वा द्वं
१२	४	ऋषिः	ऋषिः
"	१४	शोषणालमर्थयोः	शोषणालमर्थयोः
१३	७	केशं	केशान्
१४	९	काण	काणः
१५	१४	१	१०

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११	५	कशति समूलकाशं	कपति समूलकाशं
"	८	बध्ननयोः	बन्धनयोः
"	९	कालोपदेशे	कलोपदेशे
१६	१६	भयभीषयोः	भयभीषणयोः
१७	१६	काञ्ची	काञ्ची
"	१८	संकोच	संकोचः
१८	१	कुञ्ज	कुञ्च
"	७		१०
"	१८	कुण्डते	कुण्डते
१९	१०	स्मृतै	स्मृतौ
"	१४	कुम्भ	कुम्भ
२०	७	कुष्णाति	कुष्णाति
"	१२	वीस्मारेण	विस्मारणे
२१	११	कृञ्ज	कृञ्जते
२३	७	क्रन्दते	क्रन्दते
"	९	आप्रत्यये	अप्रत्यये
२४	१	क्रञ्च	क्रञ्च
"	"	कौटिल्याल्पी भावयोः	कौटिल्याल्पी भावयोः
"	"	क्रञ्चेति	क्रञ्चति
"	६	धा धं	द्वा द्वं
"	९	दुग्न्घार्दत्वयोः	दुर्गन्घार्दत्वयोः

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
"	१३	क्र	कू
"	"	कृणाति कृणीते	कूनाति कूनीते
२५	२	ना नं	ना नं
"	१	परिवेदने	परिवेदने
"	८	ता तं क्लान्ति	न्ता न्तं क्लान्तिः
"	७	कीव	क्लीव
"	१५	कृच्छ्रजीवेन	कृच्छ्रजीवने
"	"	क्षञ्जयाति	क्षञ्जयाति
२६	५	शाक्तौ	शक्तौ
"	१४	क्षि	क्षी
२७	१	माचने	मोचने
"	१७	जमः	जमः
२८	५	क्षुपधं धा धं	क्षुब्धः ष्धा ष्धं
२९	३	खच	खज
"	६	खट्टयवि	खट्टयति
३०	३	दशने	दंशने
"	"	खर्व	खर्व
"	"	खर्वति खर्वः	खर्वति खर्व
"	४	खर्व	खर्व
"	"	खर्वति	खर्वति
३२	१२	गर्ज	गर्ज

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११	११	गर्जति	गर्जति
११	१३	गर्जति	गर्ज
११	११	गर्जयति	गर्जयति
११	१४	गर्ह	गर्ह
११	११	गर्हति	गर्हति
११	१५	गर्हयति	गर्हयति
११	१५	गर्ह	गर्ह
११	१६	गर्हयति	गर्हयति
११	१७	गर्भ	गर्भ
११	११	गर्भ	गर्भति
११	१८	गर्भ	गर्भ
११	११	गर्भवति	गर्भवति
३३	१	गर्भ	गर्भ
११	१६	शब्दे	अव्यक्तेशब्दे
३४	२	गुञ्जा	गुञ्जा
११	३	गुष्ठयति	गुष्ठयति
११	९	क्रोडे	क्रोडायां
११	१९	गुर्ह	गुर्ह
११	११	गुर्हति	गुर्हति
३५	१	गुर्ह	गुर्ह
११	११	निकेतने.	पूर्वनिकेतने

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	मशुद्ध.	शुद्ध.
११	११	गुर्दयति	गूर्दयति
११	७	गूर्द	गूर्द
११	७	गूर्दते (ङ) गूर्दयति	गूर्दति (वा) गूर्दयति
११	१६	गतिचालयोः	गतिचलनयोः
३६	१	अन्वेच्छायां	अन्विच्छायां
३७	९	घग्व	घव
११	११	घग्वति	घवति
११	११	घटयति	घाटयति
११	१३	घट्टः	घट्ट
११	१७	घर्क्	घर्क्
११	११	घर्क्वति	घर्क्वति
३८	१३	शद्वे	अविशद्वे
११	१८	घूर्णति क्षीवः	घूर्णते क्षीवः
३९	१२	व्यसने	व्ययने
११	११	चक्रयति	चक्कयति
४०	९	१	१०
११	११	चनति	चनति (वा) चान- यति
११	१३	चपति (वा) चपयति	चम्पति (वा) चम्प- यति
४१	४	असंशये	संशये

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अंशुद.	शुद.
११	१	चर्चते	चर्चति
११	११	चर्च	चर्च
११	११	परिभाषणतर्जनयोः	परिभाषणभर्त्सनयोः
११	११	चर्चति	चर्चति
४१	७	चर्च	चर्च
११	११	चर्चयते चर्चा	चर्चयते चर्चा
११	८	चर्च	चर्च
११	११	चर्चति	चर्चति
११	९	चर्च	चर्च
११	९	चर्चति (वा) चर्चय-	चर्चति (वा) चर्चयति
		ति चर्चणं	चर्चणं
४२	९	चययति	चययति (वा) चप-
			यति
११	१३	संवेदने	संचेतने
११	१७	हावकृतौ	भावकृतौ
४३	१	आमर्षणे	आमर्षणे
११	८	व्यसने	न्ययने
११	११	चाटयति	चोटयति
११	२०	हावकरणे	भावकरणे
४४	६	चुव	चुव
११	७	चुर	चूर

पृष्ठांक.	पंचयंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
॥	११	हावकरणे	भावकरणे
४६	६	हानौ	हासे
॥	१०	उर्जने	ऊर्जने
॥	१६	११	१०
४७	७	चर्च	चर्व
॥	॥	परिभाषणतर्जनयोः	परिभाषणतर्जनयोः
॥	९	परिभाषणतर्जनयो.	परिभाषणतर्जनयोः
४७	९	पर्जन	जर्ज
४७	॥	परिभाषणतर्जनयोः	परिभाषणमर्त्सनयोः
॥	॥	नर्जति	जर्जति
४८	३	जंसयति	जंसयति जंसति वा
४९	४	परितर्कणे	परितर्कणे
॥	७	जूर्व	जूर्व
॥	॥	जूर्वति	जूर्वति
॥	११	न्यक्कारे	न्यक्कारे
॥	१४	जीर्ण	जीर्णः
॥	१६	जीर्णः	जीर्णः
॥	१७	जरति (वा) जरयति	जरति (वा) जारयति
६१	९	परिभाषणतर्जनयो.	परिभाषणमर्त्सनयोः
॥	११	झीर्यति	झीर्यति
॥	१२	टक्कयति टक्कःविटक्कः	टक्कयति टक्कः विटक्कः

पृष्ठांक.	पक्षयक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१२	१९	नखति	नङ्खति
१३	९	प्रव्हशद्वे	प्रव्हत्वे शद्वे च
"	१०	णर्द्ध	णर्द
"	१०	नर्द्धः	नर्द
१४	१	श्रुद्धौ	शुद्धौ
"	"	प्रणिक्ते	प्रणिक्ते
"	९	निस्ते	निस्ते
"	१२		स्थौल्यै
१५	६	तगति	तङ्गति
"	७	संकुची	संकोचने
१६	३	तपेत (वा) तापयते	तपति (वा) तापयति
"	११	तर्जयते	तर्जयते
"	१३	तर्ब	तर्ब
"	"	तर्बति	तर्बति
१७	४	जिघांसायां	गतौ
"	५	जिघांसायां	गतौ
"	६	स्कन्दनेच	आस्कंदने च
"	८	क्षमाय च	क्षमायां च
"	१६	वार्ता	वार्ता
१८	२	समाप्तौ	कर्मसमाप्तौ
"	४	गतिवृद्धिर्हिंसापूर्तेषु	गतिवृद्धिर्हिंसापूर्तेषु

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
॥	१९	स्तृती	आवरणे
१९	४	तर्दने	तर्दने
॥	७	तुपति	तुम्पति
॥	११	भोजने	भोजनेन
६०	१०	चरणे	त्वरणे
॥	१०	तूर्यते	तूर्यते
६१	१	तर्पति (त) तर्पयति	तर्पति (त) तर्पयति
॥	१०		६
॥	१०	तृहति	तृंहति
६२	१०	ग्रहनिषेधेद्युतौ	ग्रहनिषेधे द्युतौ
६३	१	त्वक्षति	त्वक्षति
॥	३	गतिकम्पयोः	गतिकम्पयोः
॥	१५	दध	दध
॥	॥	दध्नाति	दध्नाति
॥	१६	दण्डनीपातने	दण्डनिपातने
६४	१२	दश	दंश
॥	१३	दश	दंश
॥	१४		१
॥	१७	दंसयते गात्रं	दंसयते दंसति वा गात्रं
६५	६	आर्जवे	आर्जवे
॥	<	वर्द्धकि	षर्द्धकि

पृष्ठांक.	पत्तयक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
६६	१३	व्रेतादेशे च	व्रतादेशे च
६७	१२	सहज्ञाय	सयज्ञाय
"	१	उपतापे	उपतापे
"	१०	आदाने	आदारे
"	"	१-१	१-१०
६८	१	दृफ	दृंफ
"	"	दृफति	दृम्फति
६९	१	निद्राया	निद्रायां
"	४	द्राघ	द्राघ
"	"	द्राघते	द्राघते
"	१३	द्राहः	द्रोहः
"	१६	दृ	दृ
"	"	द्रायति. रात्रौ लोकः	द्रायति रात्रौ लोकः
७०	१	द्वेषति (वा) द्वपते	द्वेषति (वा) द्वेषते
"	६	२	३
"	"	शुद्धौ च	शुद्धौ च
७१	१	१	१
"	१	अधारे	आधारे
७१	१२	हिंसायां	हिंसायां
७२	१	कपेन	कम्पने
"	४	केसरपुष्पंजातं	केसरपुष्पजातं

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११	११	कुंकुमे जनः	कुंकुमेन जनः
७३	४	धर्षयते	धर्षयते
११	८	कपर्दिनं	कपर्दिनं
११	१६	उत्क्षेमे	उत्क्षेपे
११	१७	ध्वणति	ध्वणति
७४	४	धाड	ध्राड
११	७	गतिस्धैर्ययोः	गतिस्धैर्ययोः
११	१९	धनुर्धन्वी	धनुर्धन्वी
७६	३	याञ्चोपतापैश्वर्यासीःपु	याञ्चोपतापैश्वर्याशीःपु
११	९	याञ्चोपतापैश्वर्याशीःपु	याञ्चोपतापैश्वर्याशीःपु
११	९	सचने	सेचने
११	१३	न	नृ
११	१४		नृ
११	२०	पतं गोगगने	पतंगो गगने
८०	८	भापद्दार्थे	भापार्थे
११	१४	ह्रीशि	ह्रीशे
८१	८	शिभुः	शिशुः
८२	८	श्रीष्म	भीष्मः
८३	७	पूप्ययति	पूप्ययति
८७	१	फक्कति	फक्कति
८८	२	वधते	वधत

पृष्ठांक.	पत्तयक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
८८	१०	बर्ध	वर्ध
"	"	बर्धति	वर्धति
"	"	वधौ दीप्तौ च	वधे दीप्तौ च
"	१४	दानवधनिरूपेषु	दानवधनिरूपणेषु
९०	११	ब्रूस	ब्रूस
"	१७	भज	भज्ज
९२	८	दधिभाण्ड	घाधिभाण्डं
"	१२	भयः	भयं
९५	११	मञ्जु	मञ्ज
"	"	मञ्जति	मञ्जति
९८	१६	मार्ज	माज
"	"	मार्जयति मार्जारः	मार्जयति मार्जारः
९९	११	मेघाहिसयोः	मघाहिसयोः
१००	१७	आक्षेपप्रमर्दनयोः	आक्षेपप्रमर्दनयोः
१०१	१४	कंटेकन वार्टी	कष्टकैवार्टी
१०३	३	मृदनाति	मृदनाति
१०५	७	देवपूजासंगतिकरणदा- नेषु	देवपूजासंगतिकरण- दानेषु
"	१६	यच्छति पापात्साधुः	यच्छति पापात्साधुः
१०६	३	याज्ञायां	याज्ञायां
"	१२	युच्छति	युच्छति

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
"	२०	युध्यत	युध्यते
१०७	१	यूपपते	यूपते
१०८	९	पाशंडी	पापंडी
"	१४	रामश्य	रामस्ये
१०९	१२	रंहयति	रंहति
"	१६	राद्यतेयुध्वायवीरः	राद्यते युद्धाय वीरः
"	१४	संसिद्धौ	वृद्धौ
११०	९	रिक्तेरोगी	रिक्ते रोगी
११०	१०	कत्थनयुद्धनिन्दाहिंसा- दानेषु	कत्थनयुद्धनिन्दाहिं- सादानेषु
१११	७	घृतौ	घृतौ
"	१७	गत्यालस्यास्तेयखोटे	गत्यालस्यस्तेयोखोटे
११२	३	गोप्यः (यथा)	गोप्यः (अथवा)
"	९	रुणधि	रुणद्धि
"	१२	रोहति मृत्तिकाया घटः	रोहति मृत्तिकाया घटः
११३	९	प्लवे गतौ च	प्लवगतौ
"	३९		गतौ
"	१६		गतौ
"	१८	स्वादापने	आस्वादाने
११४	८	भर्त्सने	भर्त्सने
"	९	भर्त्सने	भर्त्सने

पृष्ठांक.	पत्तयक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११६	१	श्लेषणविलसयोः	श्लेषणविलासयोः
"	"	लपति	लसति
"	८	भर्गे च	भर्जने
"	९	भर्गे च	भर्जने
"	९	लांजते	लांजति
"	१६		१०
११७	१३	लुट	लुट
"	"	लुञ्चति	लुञ्चति
११८	२	लुष्ट	लुष्ट
"	२	लुंठति (वा) लुञ्चति	लुष्टति (वा) लुष्टयति
"	१०	लुण्डयति	लुण्डयति
११९	१०	स्वलने च	म्वलने च
"	११	पूर्वभावे स्वने च	पूर्वभावे स्वने च
१२२	८	इप्सायां	ईप्सायां
१२३	२	वद्ध	वर्ध
"	"	पूर्तिच्छेदोः	पूर्तिच्छेदनयोः
"	"	वद्धयति	वर्धयति
१२४	१४	मुत्पाप्तिगतिसवोसु	मुत्पाप्तिगतिसेवामु
१२५	३	वाञ्छति	वाञ्छति
"	११	विच्छ	विच्छ
"	११	विच्छति	विच्छायति

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
"	१३	विष्ठ	विच्छ
"	१२	विच्छयति	विच्छयति
"	१३	विवेक्ति	वेवेक्ति
१२६	१२	विप्र	विष्ट
"	१२	विवेप्रयति	वेष्टयति
१२७	७	वीरयति	वीरयते
१२८	६	वृण्यते	वृणुते
१२८	८	संभक्तौ	वरणे
१३०	२	व्यचति	विचति
"	१५	संस्कृतौ गतौ त्यागे च	मार्गसंस्कारगत्योः त्या- गे च
"	"	त्रि	त्रो
१३१	७	वृत्तीनाति	वृत्तिनाति
"	१४	शर्वति	शर्वति
१३२	४	संस्कारगत्योः	असंस्कारगत्योः
१३३	२	सवृः	संवृः
१३५	५	शिष्यति	शिष्यति
१३६	१७	शुश्वः	शुद्धः
१३७	५	शुप	शुप
"	१०	सस्या नविनांबु वाहं	सम्यानि विनांबुवाहं
१३८	२	जलन	जलेन

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११	१५	श्मील	स्मील
११	११	श्मीलति	स्मीलति
१४०	१०	श्रवत्यामद्यटाज्जलं	श्रुणोति
१४२	६	ष्वग	पग
११	१०	सेचते	सचते
१४३	३	सघ्नोति	सघ्नोति
११	८	वैक्लव्ये	अवैकल्ये
१४५	४	भैस्ययोः	ऐश्वर्यदीप्तयोः
११	६	प्राणि गर्भविमोचने	प्राणिगर्भविमोचने
११	९	क्षेपे	प्ररणे
११	१०	क्षणने	क्षरणे
११	१३	पूर्य (वा) शूर्य	पूर्य (वा) पूर्य
११	१७	चालगत्योः	चलनगत्योः
१४६	८	वैक्लव्ये	अवैकल्ये
११	९	वैक्लव्ये	अवैकल्ये
११	१०	ष्टल	ष्टल
११	१६	आर्दीभावे	आर्दीभाषे
११	१८	आर्दीभावं	आर्दीभावे
१४७	१	स्तौवि (वा) स्तुते स्ववः	स्तौवि (वा) स्तुतेवः
११	२	प्रसदे	
११	७	ष्टेव	

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११	७	ष्टेवति	ष्टेवति
११	१२	स्थसति	स्थस्यति
१४८	१६	गात्रप्ररक्षणे	गात्रप्रक्षरणे
११	१९	वर्षेण	वर्षेण
१४९	८	सठ स्वठ	सठ स्वठ
११	९	सन्तान क्रियायां	सन्तानक्रियायां
११	११	सर्ज	सर्ज
११	११	अर्जने	अर्जने
११	११	सर्जति	सर्जति
११	१७	सर्व	सर्व
११	११	सर्वति	सर्वति
१९१	९	ऐश्वर्य्य दीप्तयोः	ऐश्वर्य्यदीप्त्योः
११	७	सूक्ष	सूक्ष
११	११	सूक्षति	सूक्षति
११	१०	सूत्रेण	सूत्रेण
१९२	१	आपवे उद्भूते	आप्लवे उद्भूतो
११	९	बाणैर्जुनः	बाणैर्जुनः
११	११	स्कन्दते शाखा मृगोवृ-	स्कन्दते शाखामृगो वृ-
		क्षादक्षान्तरं	क्षादक्षान्तरं
११	१२	विदारे	विदारणे
११	१३	चथच लयोः	संचलने

पृष्ठांक.	पंचयंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११	१९	इमील	स्मील
११	११	इमीलति	स्मीलति
१४०	१०	श्रवत्यामद्यटाज्जलं	श्रुणोति
१४२	६	ष्वग	षग
११	१०	सचते	सचते
१४३	३	सघोति	सघोति
११	८	वैक्लव्ये	अवैकल्ये
१४५	४	भैस्ययोः	ऐश्वर्यदीप्त्योः
११	६	प्राणि गर्भविमोचने	प्राणिगर्भविमोचने
११	९	क्षेपे	प्रेरणे
११	१०	क्षणने	क्षरणे
११	१३	पूर्व्य (वा) शूर्प्य	पूर्व्य (वा) शूर्प्य
११	१७	चालगत्योः	चलनगत्योः
१४६	८	वैक्लव्ये	अवैकल्ये
११	९	वैक्लव्ये	अवैकल्ये
११	१०	ष्टल	ष्टल
११	१६	आर्दीभावे	आर्दीभावे
११	१८	आर्दीभावं	आर्दीभावे
१४७	१	स्तौवि (वा) स्तुते स्ववः	स्तौति (वा) स्तुतेवः
११	२	प्रसादे	प्रसादे
११	७	ष्टेव	ष्टेव

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
"	७	ष्टेवति	ष्टेवति
"	१२	स्थसति	स्थस्यति
१४८	१६	गात्रप्ररक्षणे	गात्रप्रक्षरणे
"	१९	धर्मेण	धर्मेण
१४९	८	सठ स्वठ	सठ स्वठ
"	९	सन्तान क्रियायां	सन्तानक्रियायां
"	११	सर्ज	सर्ज
"	"	अर्जने	अर्जने
"	"	सर्जति	सर्जति
"	१७	सर्व	सर्व
"	"	सर्वति	सर्वति
१९१	५	ऐश्वर्य्य दीप्तयोः	ऐश्वर्य्यदीप्तयोः
"	७	सूक्ष	सूक्ष
"	"	सूक्षति	सूक्षति
"	१०	सूत्रणे	सूत्रेण
१९२	१	आपवे उद्धतै	आप्लवे उद्धतौ
"	९	वाणैरर्जुनः	वाणैरर्जुनः
"	११	स्कन्दते शाखा मृगोवृ- क्षादृक्षान्तरं	स्कन्दते शाखामृगो वृ- क्षादृक्षान्तरं
"	१२	विदारे	विदारणे
"	१३	चथच ल्योः	संचलने

पृष्ठांक.	पंक्तयंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१५३	३	स्तृणुतेया ससा देहं	स्तृणुते या ससंदेहं
"	४	आछादने	आच्छादने
"	१४	संचयं-स्थाने	संचये स्थाने च
"	५	स्तृणानि	स्तृणाति
१५४	१०	स्फूर्तो	स्फूर्तो
"	११	स्फूर्तो	स्फूर्तो
१५५	२	विकशने	विकसने
"	३	विसरणे	विशरणे
"	४	विसरणे	विशरणे
"	८	विकशने	विकसने
"	१०	स्फुंठयति	स्फुंठति
"	१३	स्फूर्ज	स्फूर्ज
१५६	६	स्पन्द	स्यन्द
१५६	६	स्पन्दत	स्यन्दते
"	७		
"	"	ध्वनने	शब्दे
"	८	स्यभ	स्यम
१५७	५	स्त्रेकते	स्त्रेकते
"	११	पयोयतिः	पयो यतिः
"	१७	केशं कुंकुमेने नारी	केशान् कुंकुमेन नारी
१५८	१	आतके	आतंके

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
"	७	त्विष्वि	त्विषि
"	८	हठ	हठ
"	"	हंटरिराजा	हठति राजा
"	१०		
१९९	३	चोर भयान्नरः	चोरभयान्नरः
"	९	हावकरणे	भावकरणे
"	१०	दानादनयोः	दानादानयोः
"	१२	सर्वप्रलयाग्निः	सर्व प्रलयाग्निः
"	११	वेर्णञ्च	वरेण च
१९०	३	हृश्यति	हृष्यति